किशनगढ़ राजवंश की

# पुष्टिमार्गीय काव्यकृतियाँ

॥ संकलन ॥

पुस्तक प्राप्ति स्थान

"अड़ैल"

महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य मार्ग,

नया शहर, किशनगढ़

संस्करण 2015

प्रतियाँ 1000

निःशुल्क वितरणार्थ

प्रकाशन सहायक

**धीरेन्द्र पुस्तक भण्डार**

पुराना शहर, किशनगढ़ जि० अजमेर (राज०)



## अनुक्रमणिका

श्री नृत्यगोपालो जयति
श्री वल्लभाधीशो जयति

-: प्राक्कथन :-

कृष्णगढ़ ( किशनगढ़ ) के आठवें राजा श्री सावन्त सिंह जी ( शासन काल 1748 से 1764 ई० ) उपनाम श्री नागरीदास जी का जन्म विक्रमी सम्वत् 1756 में पौष शुक्ल द्वादशी को हुआ। केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा वर्ष 1974 में डॉ. फैयाज अली खां, एम. ए. ( हिन्दी एवं अंग्रेजी ), पीएच.डी. ( हिन्दी ) के सम्पादन में प्रकाशित "नागरीदास ग्रन्थावली" के अनुसार महाराजा सावंत सिंह जी ( श्री नागरीदास जी ) ने गोस्वामी श्री गोपीनाथ जी के पौत्र, गोस्वामी श्री रणछोड़ लाल जी से दीक्षा ली। पुष्टि भक्ति मार्ग में यह उक्ति प्रचलित है "अष्ट सखा पहले भये नवें नागरीदास"। श्री नागरीदास जी ने ब्रज, राजस्थानी, पंजाबी, डिंगल, खड़ी बोली और रेख्ता में पदों की रचना की है। डॉ. फैयाज अली खां के अनुसार श्री नागरीदास जी ने लगभग 70 ग्रन्थों की रचना की।

श्री नागरीदास जी द्वारा रचित पदों का गायन, किशनगढ़ में सभी पुष्टि मार्गीय वैष्णव अपने घरों में प्रभु सेवा के समय करते आ रहे हैं। ये पद स्फुट रूप में उपलब्ध हैं। इधर किशनगढ़ एवं अन्यत्र स्थानों के वैष्णवों द्वारा श्री नागरी दास जी के साहित्य की मांग की जाती रही है। श्री नागरीदास जी के पदों के संकलन की प्राचीन प्रतियां भी अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में कतिपय वैष्णवों एवं कीर्तनीया आदि के पास उपलब्ध है। प्रस्तुत "उत्सव माला" भी प्राचीन प्रति की एक यथारूप मुद्रित प्रति है जो कि पुष्टि मार्गीय वैष्णवों को अपने नित्य सेवा क्रम में विनियोग हेतु श्री नागरीदास जी के पद उपलब्ध हो सकें, इसी क्रम का एक विनम्र प्रयास मात्र है। उत्सव माला के पुनः प्रकांशन का मनोरथ का जब पूज्यपाद महाराजश्री गोस्वामी श्री श्याममनोहर जी महोदय के सम्मुख निवेदन किया गया तो आपश्री ने किशनगढ़ के अन्य राजाओं के पद भी संकलित करने की आज्ञा दी। आपश्री ने अपने तथा किशनगढ़ के दरबार के संग्रह से कई पद उपलब्ध कराये।

आषाढ़ कृष्ण षष्ठी, सम्वत् २०७२ — किशनगढ़





## महाराजा रूपसिंह जी

( 1643-1658 ई. )

प्रभु जू इहां रहे कछु नांई।
करयैं गवन भवन दिशि अपनै सुनियैं अरज गुसांई।
देखी वलख वरफ कू देखी अधम असुर अवलोके।
मध्यम देश वेष कू मध्यम इहां कहांलै रोके।
भक्त वछल करूणामय सुखनिधि कृपा करो गिरिधारी।
रूपसिंह प्रभु विरद लजत है ब्रज लै वसो विहारी ॥१॥

॥ राग गौरी ॥

वनतै वानिक वनि ब्रज आवत।
वैनु बजाय रिझाव जुवति जन गौरी रागनि गावत।
वारिज वदन लाल गिरिधर को निरखि सखी सचुपावत॥
रूप कटाच्छ करत प्यारी पर रूप सिंध अलि नावत ॥२॥

*****

मैं कैसे आऊँ दामिनी मोहि डरावै।
जब जब गमन करूँ दिश
प्रीतम, चमकत चक्र चलावै।
वे आतुर अति सजनी,
रजनी यूँ बिरमावै।
गावत गगन, पवन चल चंचल,
अंचल रहित तन पावत।
सुनि प्रिय वचन, चतुर चलि आयो,
भामिनी सौं मन भावत।

रूपसिंह प्रभु नगधर नागर
मिली मल्हार सुर गावत॥

*****

बना-राग सौरठ

बनां पर प्रान करौंगी वारनैं ।
मोह्यो जु जान पुर नंदजी रा राज कुमार नैं ।
सोहति है मुख लरी सेहरा रच्यौं कौंन श्रुति धारनैं।
मौर मांहि रचना जु अलौकिक बांध्यो हैं रिझवार नैं ।
कलँगी अरू तुररा की हरकनि बिकि गये नैंन निहारनैं।
बृंदाबन हित रूप बरखि हैं आज जान कैं छारनैं॥

*****



महाराजा सावंत सिंह जी ( उपनाम श्री नागरीदास जी )

( 1748-1764 ई. )



॥ श्री गोपीजनवल्लभायनमः॥

**अथ श्री नागरीदासजी कृत**

उत्सवमाला

प्रथम श्रीकृष्ण जन्मोत्सव

॥ दोहा ॥

जसुदा कैं सुत होत भयो गहगड गान निशान।
गयो छाय पुर मोखलौं मंगल घोषबितान॥ १॥
ब्रज थिर चर आनंद मय आनंद बिस्व अमंद।
आज प्रगट भयो नंद ग्रह रूप धरैं आनंद॥ २॥
दीपक प्रगट्यो नंद घर निर्मल जोति अभंग।
उडि-उडि परन लगे जहां दानव दुष्ट पतंग॥ ३॥
श्री जसुदा कैं सुत भयो नख सिख सुंदर सर्ब।
रस सिंगार कैं बरन तन करन कांम गति गर्ब॥ ४॥
नागर सुत भयो नंदकैं मनमोहन सुकवांर।
या मोहन हित मोहनी अब ब्रज प्रगट निहार॥ ५॥

**॥ पद रागखट् तालजात्रा ॥**

आज ब्रजराज कैं सुत भयो सुनि सखी उमगि उपहार लैंलैं चल्यो महरांवनौं।
थार कर हार भरि भार लचकत लंक बसन अति भार उर फब्यो फहरांवनौं।
इतिहिं धुनि गान अरु मंगल निशान धुनि उतहिं नीको लगत घनन घहरांवनौं।
नागरीदास ब्रज चंद प्रगटत भयो नंदनिधि हियैं आनंद लहरांवनौं॥ १॥

**राग गौरी॥ तिताल॥**

आज भयो नंद भवन आनंद।
ब्रज जन उमंगि चकोर चले मिलि प्रगट्यो पूरन चंद।
गावत मंगल गीत गलिन मैं आवति युवती बृंद।
नागरीदास उत्साह छकेसब मिटजु गये दुखद्वंद॥ २॥

## ॥ राग अडाणौं चौताल ॥

नंद गोप राज अहो औरैं ब्रज ओप आज तरैं पुत्र भयो भैया पुन्य फल जापको।
ब्रह्म रिष द्वार बहो देवता बिमानन पैं छायो सुर वेदगांन भेदक अलाप को।
घर घर संपदा अपार बढ़ी देखियत हमपै न कीनों जात बर्नन प्रताप को।
नागरिया बेर बेर ग्वाल कहैं टेर टेर तेरो घर मानों परमेश्वर के बाप को॥ ६॥

## राग परज ॥ तिताल ॥

बाजैं बधाई ब्रजमें नंद घरनि सुत जायो।
गोपी गीत मनोहर गावत आवत भावत नभ तान तरंग निछायो।
कौतिग मोहे देखि देवगन देवलोक बिसरायो।
नागरीदास उछाह छके अति आनंद उर सरसायो॥ ४॥

## ॥ तिताल ॥

आज अति ब्रजमें बढ्यो हैं आनंद।
जगमग रह्यो नंद ग्रह पूरन प्रगटो हैं गोकुलचंद।
लोचन तृषित चकोरन के चित मिटि जु गये दुख द्वंद।
नागरीदास जुरी कमलासी गावत जुवती बृंद॥ ५॥

## ॥ इकताल ॥

अबहीं नेक पोढ़ी हैं ब्रजरानी।
पुत्र जन्म उत्सव रससानी आनंदित अरसांनी।
लालनहू पालन में सोये कमलनैंन पयपांनी।
नागरि गोपी गान मनोहर फिरि करियो सुखदानी॥ ६॥

## ॥ आन कवि कृत तिताल ॥

नंदजी रैं चालो नैं घरां।
महा मनोहर पुत्र हुवो लखि लोचण सुफल करां।
दही ख्याल सों भरां भरांवा हंसि हंसि फेरि भरां।
रसिक बिहारी नांव कुंवरजी रो आगम जांणि धरां॥ ६॥

## ॥ रागखमायची तिताल ॥

बधाई बधाई बधाई हो आज ब्रज छाय रही।



जसुदाके सुत भयो सुनि उत कान दैं दैं मेघ से निशान बाजि सहनाइ रही।
ठाढ़ी नंद आंगन मैं मंगल कलश लिये मंगल रस ओपी गोपी सब गाय रही।
नागरिया सुखसानी दध खलन अरसानी पट भीजि अंग रंग झरि लाय रही॥ ८॥

## ॥ आन कवि कृत राग सोरठ इकताल ॥

कांन पड़ी न सुणीजै नंदघर आजैं।
घुरैं निसांण घणां मंगल मय जाणैं नभ भादों घण गाजैं॥
गोपी गीत गावती .आवैं चालंता छबि छाजैं।
गोकुल रा गलियांरां चहुंवां बहुवां रां रमझोल बाजैं।
श्याम बरण सुत जायो राणी रूप अनुपम राजै।
होसी रसिक बिहारी नांव यांरो अब हीं मदन बदन लखि लाजैं॥ ९॥

## ॥ ताल चरचरी ॥

गोकुल आज परम रंग रली
भयो हैं सुत नंदरानी जू कैं सुभ सुनिये बात भली।
ब्रज बधूनि कैं हियै बाढ़ी मोद मन कलमली।
मनु उमगि सलिता रूप की आनंद आतुर चली।
लंक लचकत थार कर भर भार हारावली।
गांन मंगल नूपुरनि धुनि छाय रही सब गली।
छिरक कैं दधि नाचत मगन जहां नंद सदन स्थली।
दास नागर छकी उछव करत कोतिक अली॥ १०॥

## ॥ राग काफी इकताल ॥

बाजैं बधांइयां वेसंईया नंददे दरबार। हुवा सुत सोहनांवे।
मनदा मोहनां सुकुंवार। आईं सुनि गोपियाँ वे।
हिलि मिलि गावहीं ख़ुसियाल। जुरे सब लोक मंगनवे।
गुनी गुन बोल दैं दैं ताल गुनीदें ताला नाचैं। वाहवा। आंगन पहपट माचैं वाहवा।
नंददा लालाजी वो वाहवा। दूधां अमृत पीवो वाहवा। खुसो दिल पावझूमां वाहवा।
ललादी तूंनी चूमां वाहवा। उसदा मंगल गावां वाहवा। दान दुपट्टा पावां वाहवा।
पावां पट दान मोतीवो। जावां दिल फूल दे घर मांह। असाढ़ा हाथ टोडरबो।

बाजू बंध झूलदे बिचु बाह। तुज पर घोलियांवो। जसोदे बोलियां दें सुनाय। धनि धनि आज दा दिनवो। दैंदी दान क्यौं न मंगाय। महरनैं दान मंगाया वाहवा। कंचन झर बरषाया वाहवा। हें बड़भागन तू री। वाहवा। करी मुरादां पूरी वाहवा। बीच खुसी दिल गाढ़े वाहवा। मंगल मुखी तु साढ़े। वाहवा। जनम जनम गुन गावां। वाहवा। नागर दरसन पावां। वाहवा॥ ११।

## ॥ तिताल ॥

नंदजू कैं बजत बधाई आज द्वारैं।
गह मह मंगल महागान धुनि छाय रही ब्रज सारैं।
अति आनंद भयो सुनि सजनी बनत न कछू उचारैं।
नागरिया जसुमति सुत जायो चलोरी बदन निहारैं॥ १२॥

## ॥ तिताल ॥

हो घर नंद कैं बाजत आज बधाइयां।
झांझ झनक मिलि मधुर टकोरनि पूरि रही सहनाइयां।
आंगन झूंमि झूंमक दैं दैं गोपी गावत आइयां।
नागर वृज घनश्याम प्रगट भयो सुख बरखा बरषाइयां॥ १३॥

## ॥ आन कवि कृत राग काफी ॥

बाजैं आज नंद भवन बधाइयां।
गहमह आनंद रंग रली अति गोपी सब मिलि आइयां।
महरि जसोमति कै भयो सुत फूली अंग न माइयां।
रसिक बिहारी प्रान जीवन लखि देत असीस सुहाइयां॥ १४॥

## ॥ अथ राधा जन्मोत्सव ॥

इन बधाइनकी अलापचारी में देने ये॥ दोहा-

प्राची कीरति कूख तैं कन्या भई अनूप। भान सिंधु आनंद दा चंद मंजरी रूप॥ १॥
कुल मंडन ब्रजभान की भूषन जगत अभूत। वारौं कोटिन नृपन के या कन्या पर पूत॥ २॥
बेग बढ़ो आरोग्य तन भाग बड़ो उत्साह। नंदराय के कुंवर सौं बेगहि होहु विवाह॥ ३॥
हो वृंदाबन ईस्वरी गुन पूरन सुखरास। बिधिना सों मांगत इहैं जाचक नागरिदास॥ ४॥



## ॥ पद राग ईमन चौताल ॥

निस में सुमन लहयो ताके फल की विधि बरसांनैं प्रगटी सुखदाई।
गउर श्याम इक जोरी अंगत सुख सोवत सुपनैं दरसाई।
जनों बहु करत बिहार बिपन मैं गान रंग बरखा बरषाई।
गिर तरु कुंज पुंज बन बीथन रस सिंगार नंदी सरसाई।
नागरिया सुभ सुगन होत हैं घर-घर आनंद उर न समाई।
लीला ललित करन दोउ प्रगटे इत राधा उत कुंवर कन्हाई॥ १॥

## ॥ राग परज तिताल ॥

ढाढ़नि नाचैं वृषभान की मंदिर रसमाती।
गावत सरस बधाई सुंदर लटकि चलत मुसकाती।
नंद सुवन अरु कुंवरि तिहारी बेग बढ़ो दिन राती।
नागरीदास रंगीली बिचि-बिचि देत असीस सुहाती॥ २॥
या बधाईके गायबे में बीच बीच दैंने ये॥

## ॥ दोहा ॥

देस-देस के गुनी जन जाचन आये द्वार। धन धन उनयों भानजू बरषत रिद्धअपार॥ १॥
ढाढ़न श्री नंदराय की बधू बृंद लै संग। आई श्रीवृषभांन कैं रावर माच्यो रंग॥ २॥
नाचे गावैं ढाढ़नी कहैं बधाई पांउ। हुलरावति श्रीराधिका लै-लै कुल को नांऊ॥ ३॥
कीरति रानी यौं कह्यो गोपराज सिरमोर। ये जाचक नंदराय के जो दीजै सो थोर॥ ४॥
पूछो ढाढनि नांव कौं कहो कीरति मुख खोलि। नवला या को नांव हैं बिजैं सखी कह्यो बोलि॥ ५॥

## ॥ तिताल ॥

हेली आज की घरी छिन भलियां।
घन आनंद सकल ब्रज बरषत कीरत बेल सुफलियां।
इत प्रगटी गोरी उत श्यामहि हिय आनंद कलमलियां।
नागरिया जोरी अति लौंनी हौंनी हें रंगरलियां॥ ३॥

## ॥ आन कवि कृत तिताल ॥

आज ब्रजभान कैं बधाई।

गहमह भीर भई रावर मैं गावत अली सुहाई।
हंसि हंसि गोपी मिलत परस्पर आनंद उर न समाई।
प्रगट भये उत रसिक बिहारी इत प्यारी निधि आई॥ ४॥

## ॥ आन कवि कृत तिताल ॥

बधावणों हे हेली आज रली।
भईभीर ब्रजभान भवन मैं कीरति बेलि फली।
जुवती वृंद घर घर तैं मंगल गावत आवत चली।
रसिक बिहारी चंद हेत जनु प्रगटी कुमुद कली॥ ५॥

## ॥ आन कवि कृत राग खमायच तिताल ॥

हो छैं वृषभान रैं घर लाखां री बधाई आज।
कुंवरि लाडिली जनम लियो छैं मोहन रैं सुखकाज।
हुलरावैं मंगल गावैं ढाढनि लीयां सुघर समाज।
रसिक बिहारी मन आनंद हुवो प्रगटी निज सिरताज॥ ६॥

## ॥ आन कवि कृत तिताल ॥

हो छैं वृषभांन रैं घर आनंद रली बधावणौं।
जनमी राधा ब्रज सुख साधा निरखि नैंणा सुख पावणौं।
आंगण गृह मह भीड़ हुई छैं आज को दिवस सुहावणौं।
प्रगटी छैं रसिक बिहारी की जोड़ी हुवो मनोरथ भावणौं॥ ७॥

## ॥ राग बिहागरो तिताल ॥

कीरत जू की अबहीं पलक लगी हैं। सब दिन उछव जनम जगी हैं।
पोढी निकट लली लघु बेखैं। मइया जागि जागि मुख देखैं।
तुम मिलि तनक करो बिश्राम। माई मन बांछित भये काम।
अब भई निद्रा बस श्रीरानी। ढिग सखी नागरि कहत कहानी॥ ८॥

## ॥ राग सोरठ तिताल ॥

भई भानजू कैं कन्या बधाई बधाई चलि देखि तू निकरकैं।
किधों कीरत की कीरत प्रगटी स्वरूप धरिकैं।
बरसानैं आजु हेली महा मंगलधुनि छाई।



सुनि कांन दैं निसांन संग बाजत सहनाई।
निकसी भवन भवन तैं तिय लागत भलीहैं।
उपहार थार लैं लैं सब गावत चली हैं।
नहिं अंचरा संभारैं उर हार डोर टूटैं।
गिरैं फूल बहो गलिन मैं सिर केस पास छूटैं।
मिल खेलत औ नाचत दधिकादौं भयो हैं।
आनंद को कुलाहल बढि ब्योंम लौं गयो हैं।
सुखकी चहल पहल अति ह्वै रही महलमैं।
तहां डोलत हें उमगी नागर सखी टहल मैं॥ ९॥

## ॥ इकताल ॥

री ब्रजभान कैं बधाई सुनि बाजैं धुनि पूरि रही सहनाय।
हैं कहा सखी आजु रावर मैं रंग रह्यो सरसाय।
बेर-बेर पूछत नंदरानी मोहिनी की बात सुनाय।
नागर तुव सुत श्याम की जोरी प्रगटी हैं गोरी आय॥ १०॥

## ॥ राग भैरू तथा सोरठ इकताल ॥

बाजैं बधाई बधाई वृषभानजू की पोरि। रावरि में रंग होत देखि सखी दोरि।
भई कीरति कैं कन्यका सुलोचन बिसाल। मनहुं चंद्र जोति रूप मंजरी रसाल॥ १।
जसुदा अरु नंद ह्वै आनंद मैं अधीर। आये रनबास कैं निवास भई भीर।
सुनत नाहिं तहां तनक कानि लगि रह्यो। गोपिका समूह गान गरजि ब्रज रह्यो॥ २।
हौंन लगे मंगल कौतूहलनि बिधान। सबही आवे सचित भूले हैं सयान।
नाचत वृषभान नंद जोरैं दोउ बाह। खुलत पेंच हलत तोंद आनंद हिय मांह॥ ३।
महरांनौं हस्त सबैं कोतिग निहारा। दोरि दोरि दुहुंनि पैं घट ढोरत ब्रजनारि।
दधिकादौं मांझनि कर भांमिनी सलोल। मनौं क्षीर सिंधु मध्य दामिनी कलोल॥ ४।
झूंमि-झूंमि झूमक तिय नाचती सुहात। घूंमि-घूंमि लंहगनि की लावनि लहरात।
जूरा सिर खुलत-डुलत मोतिन की माल। चूरा रहे चमकि चमकि कुंडल की हाल॥ ५।
उत्सव रस मत्त मिटत नाहिं उर उमंग। छूटत बसन तुटत हार बेसम्हार अंग।
आनंद कैं आनंद ह्वै आनंद रह्यो पूरि। नागरिया प्रगट भई आनंद की मूरि ॥ ६।

## ॥ आन कवि कृत राग सोरठ तथा मलार तिताल ॥

बृषभान कें मंदलरा बाजैं।
सुभ घरी दिन सुभ महूरत गहरैं गहरैं गाजैं।
गावो मंगल रहसि बधाई पावों रानी कीरत कैं घर काजैं।
रसिक बिहारी की यह जोरी भये मनोरथ आजैं॥ १२॥

## ॥ राग काफी इकताल ॥

हाहा मुबारक बादियां।
अरी रानी ऐसीयां नित सादियां।
राधा चंदमुखी प्रगटी बेटियां।
और तारनि सी गोपजादियां।
फूलियां अंग न मावैं सलौंनियां रंगभरी रसबादियां।
नागरीदास खुसी दिल मैं आजु गोपी फिरैं उदमादियां॥ १३॥

## ॥ तिताल ॥

आजु छबि छाई हैं माई बरसानौं लागत सुहावनौं।
भवन भवन कंचन कलशनि धुजा फहरफहर फहरांवनों।
तैसिय भादौं उमड़ि घुमड़ि घटा घहर घहर घहरांवनौं।
राधा जनम उमगि नागर मन महर महर महरांवनौं॥ १४॥

## ॥ राग आसावरी तिताल ॥

अरी माई श्री कीरति रांनी कैं कन्या अनूप भई।
सुबरि सदन को तिमर गयो मिटि भये प्रकाश मई।
महरानैं मंगल घर घर कछु औरें ओप ठई।
नागरिया आनंद चंद्रिका सब ब्रज मांझ छई॥ १५॥

## ॥ राग टोडी चौताल ॥

वृषभांन भवन भई भीर आंगनि तनि रह्यो मंगल धुनि बितांन।
टूटें हार मोतिन के छूटें सीस जूरा बार बेसम्हार
आनंद मैं गोपी झूमिक दैं दैं करत गांन।
कीरत जई है कन्या अनूपम रूप गोभा।



सकल ब्रज की सोभा सुख निधांन।
नागरीदास भुव मंडल अकाश राजत निसांन॥ १६॥

## इन बधाई के बीच बीच गायबे में दैने ये दोहा॥

बेटी हुई भांन कें रु नंद कें फरजंद।
गयो हैं दुख दंद आज वृज मैं आनंद॥ १॥
हमसे गुनी ब्रज के तुम ब्रज के सिर ताजा
हमसे नहीं गुनी अरु तुमसे महाराजा॥ २॥
नाचै हैं ग्वालिनी नाचैं हैं ग्वाल।
कीरत के कन्या भई जसोदा कैं लाल॥ ३॥
वे गावैं कौतूहल करि नाचें सियाल।
दूध दही हरद जरद रंगे सब ग्वाल॥ ४॥
बैठे हैं आय कैं वृषभांन राय बाहिर।
बखसैं दिलखुसी हुवे जरजरी जवाहिर॥ ५॥
नित नित हो स्यादियां जैसी हैं आज।
भांनराय नंदराय जीयो महाराज॥ ६॥
अरे लोगौं आज इहां सादी सी क्या हैं।
गोपियां हु गोप दांन देते ल्या-ल्या हैं॥ ७॥
स्यादी ब्रज राज जू कैं रोसनी लगाई।
फिररिरिरिरिरिररिरि छूटति हवाई॥ ८॥
गाय बखसो बैल बखसे और बखसे घोड़े।
हुवे निहाल अमल दार टूटे अरु खोड़े॥ ९॥
खुसी सब हुए बृषभान कैं उत्साह जड़ू
जिसके लठा जो इनका बदषाह॥ १०॥
ठाढ़े हैं भट्ट थट्ट देखते मिसर्र।
सुवासारो मोर मैंना उड़ते हैं फर्र॥ ११॥

## ॥ तिताला ॥

आज बृषभान कैं दरबार खुस बखतियां।

लीया जनम जिहानकी साहिब घोलिया मैं इस बखतिया।
खरेख्वान भरि भरि कैं आगैं की हैं फरस फरूस।
नागर गुनी गवैया गावैं अजब जलूस जलूस।
हुई अजब जलूस जगमगी।
आई गोपियां सकल रग मगी गोया घर घर मंगल काज।
बखसत जरी जवांहर आज येहो ऐसी होय
सदाई सादियां स्यादियां दिल उनमादियां।
ले ले नजर फजर उठि आई बड्डी साहिब गोपजादियां।
अगर धूम अरु बटैं अरगजा अतर बगर तम्बोल।
नागर अंदर महल महल में चहल पहल कल्लोल।
चहल पहल कल्लोलनि डोलनि।
झनक मनक पग नूपर बोलनि।
मन मोती पट लेहो लेहो।
राबरि यह धुनि सुनियत एहो॥ ८॥

**॥ तितालं॥**

कीरति के कन्या होत माची दधकादों अति
मानौं लोप तीर कौं चल्वो समुद्र छीर को।
बेद धुनि गान धुनि पटह निसान धुनि
ब्रह्म लोक गई पुर भेद सुना सीर को।
मोतिन के भार भरी मोर तिन के हार देत
जुरी हैं रमा सी गोपी पार है न भीर को।
नागरिया देव नभ देखि कहैं बार बार
धन्य आज अवनी मैं भवन अहीर को॥ ९॥

**॥ तिताल॥**

अरी रानी तेरी चिरजीवो राधा सोहनी।
होत ही प्रगट महा आनंद की डारि छई ब्रजमोहनी
नंद सुवन अरु कुंवरि तिहारी जोरी बढ़ो जग जोहनी।



नागरीदास असीसत ढाढनि महल २ सुख बोहनी॥ १७॥

**॥ तिताल॥**

तूं सुनि बाजत आज बधाई बाजत आज बधाई री।
मोहन मंगल धुनि छाई री बहि पूरि रही सहनाई री।
चलि बेग बधायैं कीरति कन्या जाईरी॥ १॥
छिन छिन उत्सव अब सरसानैं।
उठि बेग बधू जिन अरसानैं।
दधकादौं माची बरसानैं।
सुख बरस रह्यो री बरनि न जात ही काई॥ २॥
मिलि चली चपल गज गामिनी।
उपहार लिये अभिरामिनी।
आई सरिता ज्यों भामिनी।
रस सागर उमग्यो गावत गीत सुहाई॥ ३॥
वृषभान भवन मैं सुखकारी।
माच्यो कोलाहल अति भारी।
झूमक दैं नाचैं ब्रजनारी।
तन नाहिं सम्हारैं नागरिया सुखदाई॥ ४॥

**॥ आन कवि कृत राग गौरी तिताल॥**

आज बरसानैं मंगल माई।
कुंवरि लली को जनम भयो है घर घर बजत बधाई।
मोतिन चौक पुरावो गावो देहु असीस सुहाई।
रसिक बिहारी की यह जीवनि प्रगट भई सुखदाई॥ ११॥

**॥ आन कवि कृत राग नायकी ताल चपक॥**

आज बधावो ब्रजभान कैं धाम।
मंगल कलश लिये आवत गावत वृज की बाम।
कीरति कैं कीरति प्रगटी हैं रूप धरैं अभिराम।
रसिक बिहारी की यह जोरी होनी राधा नाम॥ २॥

**॥ इति राधा उत्सव ॥**

**॥ अथ दान ॥** या पद की अलापचारी में देनें ये॥

॥ दोहा॥ हरि मूरति चित में चुभी नैंन बिपुल कृत नीर।
सीस गगरिया गिरत सी जकि रही यमुना तीर॥ १॥
घैरु होत जान्यों न उर उड़त न जान्यों चीर।
गिरत न जानी गगरिया रहत न छानी पीर॥ २॥
हरी हरी कहि लेहु री बिसरी दधि को नांव।
कृष्णमई ग्वारिन भई कौतग लाग्यो गांव॥ ३॥
महा रूप मदिरा छकी चलत डगमगत पाय।
जो देखत ग्वारिन इ छकी तिहैं छकनि चढ़ि जाय॥ ४॥
गिरैं न ग्वारिन धुकि उठैं घायल मन रिझवार।
नागरिया रन सुभट ज्यौं रहत सम्हारि सम्हारि॥

**पद राग देव गन्धार ॥ चोताल ॥**

मोहन मुख लखि मोहि रह्यो न परत घरीहू न घर माई।
बीथनि में फेरी करैं, हरैं २ पैंड भरैं, शीश पैं
दहेरी धरैं, प्रेमरस छकनि छकाई।
संग भौंर भीर चलैं, नैनन में नीर बीर,पीर
हियै नेह बिष लहरि दबाई।
नागरिया कृष्ण रूप भई, भूली देह दधनाम
भूली कहैं टेर लेहु री कन्हाई॥ १॥

**॥ या पद की अलापचारी में देने ए ॥**

दोहा॥ दान केलि जो मन बसैं ताहि न कछू सुहाय।
तजि बृन्दाबन माधुरी अनत न कबहूं जाय॥ १॥
मेरे नित चित में बसो दंपति दानि बिहार।
मुख पर झूठी झगरई नैंनहि करत जुहार॥ २॥
मो मन लागी दुहुंन की दान केलि बत रानि
नैनहि हा हा षान इत उत भौंहे सतरांनि॥ ३॥



गउर घटा अरु सांवरी उनई नीर सनेह।
खौरि सांकरी गिर तहां दान रंग झर मेह॥ ४॥
गोरस मांगत करत दोउ नैंन सैंन सनमान।
नागरीया के हिय बसो दान रंग बतरान॥ ५॥

**पद राग बिलावल ख्याल ॥ तिताला ॥**

मांगैं घनश्याम दान दई।
गोरस दान सुन्यों नहिं कबहूं यह अब कैसी भई।
दीयो नहिं लेत हाय हसि हेरत नेक करत गई।
नागरी दास कौन बिधि बनिहैं यह ब्रज रीति नई॥ १॥

**॥ तिताला ॥**

नित दान मांगै गहबर गैल मैं कित जांउरी।
सांवरोसो धोटा अरबीलो हैं मनमोहन नांवरी।
अंचर गहि हसि चाहिर हैं मुखहूं जिय में सकुचांवरी।
नागरीदास उतैं उरझे रोइतैं चवइया गावरी॥ ३॥

**॥ पदराग सारंग तिताल ॥**

तजि दीजैं गोहन सोहन मनमोहन गुमांनी।
परी बुरी यह टेव निडर अति अंचर छुवत नये दधि दानी।
झूटै झगरत डगर तजत नहिं अहा कहा लंगराई ठानी।
नागर कंवर तिहारे मन की मैं अब सब जानी जू जानी॥ १॥

**॥ तिताल ॥**

जोतो अबइ नहिं छुवोगे दधि दानी।
तोएगोप कुंवरि हमहू तैं नांहीं रहैगी सतरांनी।
ज्यौं तुम नंद नंदन त्यौं एऊ अपने कुल अभिमानी।
जाहु चले नागर गुन आगर सूधें मैल गुमांनी॥ २॥

**॥ राग इकताल ॥**

गई हूती बेचन गोरस कैं।
रोकी आंनि दान मिसु मोहन बाकी चितवनि मेरे हिय मांझ कसकैं।

अंचरा गहि फिर बहियां गहीरी कर मेरो मसक्यो सु अबलौं चसकैं।
नागरीदास कठिन मोहिं बीतत उहि तो मन लीन्हों हंसि हंसिकैं॥ १॥

## ॥ पद राग गोरी तिताल॥

दांन दैं री ब्रषभान कुंवारि।
छाड़ि देहु अब चार बिचार करत झगरई होत अबार।
हाहा गोरस प्यारी करत झगरई होत अबार हाहा गोरस प्यारी पाय।
क्यों झुकि झिझकत हें अनषाय।
नागरि नेंननि कर सनमांन।
हसि बस करि लये श्याम सुजांन॥ ४॥

## ॥ तिताल॥

लाल नैंक मारग दीजैं एती न कीजैं बरजोरी।
ठाढ़ै झगरत सांझ भई अब हारि पसारत झोरी।
थहरत देह न ठहरत सिर पर गरई लगत कमोरी।
टरत नहीं हो डरत नहीं हो करत नहीं हो थोरी।
जिनकौं तुम यह अंचरा गहत हो सोहै कुंवरि किसोरी।
हीये और कछु लालच ललकैं पलकैं करत निहोरी।
प्यारे कुंवर छबीले नागर पाई चित की चोरी॥ ५॥

## ॥ तिताल॥

छांडि छांडि दैं रे अंचल चंचल छैला।
इती करत लंगराई लला क्यौं रोकि मही को गैला।
जांन न देत दांन मांगत हठि ठाढ़ो है आडो अरैला।
सीखे कहां अनोखे नागर ए जोबन के फैला॥ ६॥

## ॥ राग तिताल॥

लीनौं हठ हेरी मेरों कान्ह महीरी।
आवत देखि बैठि मारग मैं अचानक आंनि गहीरी।
दीनौं नहीं मोल कीनों बरजोरी कहा करौं सब ही सहीरी।
नागरीदास भई सु भई अब बात न जात कहीरी॥ ७॥



इति दानं॥

## ॥ अथ सांझी उत्सव॥

॥ या पद की अलापचारी मैं दैने ये॥
॥ दोहा॥ मिलत नवावत नव लता अंचर छुटत दुकूल।
इत उत बाढ़ी दुहूंन मन फूलनि बीनत फूल॥ १॥
दुहुं मिलि फूलन बीन ही जमुना कूलनि सांझ।
रंग रली अति हुवै कुंज गलिन कैं मांझ॥ २॥
बन फूल्यो फूल्यो जुमन फूल बेस अभिराम।
सबैं करी फूलनि सफल मिलि कैं गौरी श्याम॥ ३॥
नील पीत पट छोर छवि उरझौ द्रुमकी भीर।
मुर सुरझांवन दुहुन की मेरे उरझी बीर॥ ४॥
फूलनि मिस तिय सौं मिलत सखी रूप रचि छैल।
नागरिया के हिय बसो फूल रंगीली सैल॥ ५॥

## राग गौरी तिताल॥

जमुना कैं कूल कूल लता रही झूलरी।
तहां द्वै सखी हैं नीले पियरे दुकूल री॥
गोधूल कवेर हू तैं है गई अबेर मैं।
देखत ठगी सी रही दोऊ तिहिं वेर में॥
बीनत हैं फूल फूल फलहि लहत हैं।
झमकि झुकावैं झूमि डार निगहत हैं॥
सांवरी ओ गोरी छबि से हैं अलबेली हैं।
सबहीं तैं न्यारी न्यारी डोलत अकेली हैं॥
बेसरि अलकमाल अरुझत पातरी।
ताकि सुरझावनि मैं अरझी ही जातरी॥
मेरी सौं कपट तजि खोलत मुख मौंन हैं।
नागरिया मों सौं कहि सखी बहि कौंन हैं॥ १॥

**॥ श्री राग तिताल ॥**

रंग सरसानैं बरसानैं बन बाग श्यामा खेलैं
सांझी सांझ बहो साथनि सिंगारि कैं।
नूपुरनि नाद पूरि रह्यो हैं द्रुमनि मांझ
जहां तहां लेत लड़कीली कुसम उतारि कैं ॥ १ ॥
सांवरी नबेली बाल नील मनि बेली सी
अकेली फिरैं बाहां जोरी संग सुकुवारि कैं।
डारही नवावैं मिलि बीनैं फूल पावैं फल
नागरिया बारैं मन कौतिक निहारि कैं ॥ २ ॥

**॥ श्री राग तिताल ॥**

सौहैं मुख कमल पैं भौंहैं लट भ्रंग पांति
नैंन अल सोहैं कलगा की जनु पखियां।
नासिका सरूसी क्यारी अधर दुपैरिया की
मुसकनि मंद मकरंद सी मैं लखियां ॥
प्रीत सांझी काज कीनी काम काछी छबि आछी
और साछी को हैं ताकि साछी सब सखियां।
फूली बय संधि सांझ राधा रूप बाग मांझ
डोलैं आज फूल भरी नागर की अंखियां ॥ ३ ॥

**॥ राग गौरी तिताल ॥**

दुहुंन की अंखियां अखियनि मांझ।
अखियां ही सांझी खेलत हैं अंखियनि फूली सांझ
रूप बगीचनि फिरत फूल भरी गर बहियां दैं अंखियां।
गउर श्याम अखियन की उरझनि उरझी नागर सखियां ॥ ४ ॥

**॥ तिताल ॥**

रूप लालची लाल हुवै रूप मलनियां।
छबि बिछियनि छनकाय कैं चली हैं छलनियां ॥
तिहि बिरियां डरियां लैं भरिया हार की।



संग अलिंद धुनि मंद मंद गुंजार की ॥
पहुंची जाय सुभाय सुभाय कहत में।
मीन के तरसखेत सु बन संकेत मैं ॥
उत तैं गावत आवत देखी भावंती।
ब्रज युवतिन जूथनि मिलि छबि सरसांवती ॥
तरु तरु अंतर सबैं रगमगी भांमिनी।
मनु बादर बादर प्रति दमकत दामिनी ॥
परम प्रबीन नबीन सु फूल नबीनही।
द्रुम बंशी उरझी जनु कंचन मीनही ॥
रहिगई कुंवरि इकौंसी श्री ब्रजभान की।
जग मग रही मुख जोंति दब दुति आन की ॥
प्रेम जंजालनि मालनि लखि सुकुवार कौं।
नियरैं ठाढ़ी आनि लिये उपहार कौं ॥
ली मालिनि बैन मैनअन कूलियैं।
बन देवीकैं धाम चढ़ै ये फूलयैं ॥
लैं गई बन अंधियार गउर कौ सांवरी।
बैठि अकेले नैननि परसे पांवरी ॥
पहराई माला मालिनि तिहि काल मैं।
उचरयाई सब बात करनि चल चालमैं ॥
कुंवरि सकुचि मुसकाई दसन अंगुरी धरी।
छली छबीलैं छैल रसिक अंकनि भरी ॥
नागरिया दोउ मीत अधर आसव पियैं।
गउर श्याम तन उरझिनि उरझी मोहियैं ॥ ५ ॥

**॥ तिताल ॥**

कुंवरि अलबेली री अति सुन्दर सुकुवारि।
श्री राधे के रूपपर बारौं सुरनि नरनि की नारि ॥
वारौं सुरनर नारि निरखि मुख तनक पलक नहिं लागैं।

बदन बिमल राकेस चंद्रिका जगमगाय रही आगैं॥
शीस फूल श्रीमंत अलक भुव बंक छबीलैं नैन नथ की
ढुरनि अरुन अधरन पर बरनत बनैं न बैंन।
चिबुक चारु झलक कपोलनि कुंडल रतन सुरंग।
उर ऊपर पदकनी की पांति कटि छीन छरहरैं अंग॥ १॥
मनहू लता अनुराग की पूजत साझी सांझ।
त्यों उड़गन मैं चंद्रमा त्यों स्यामा जू सखियनि मांझ
स्यामा जू सखियन मांझ छबि भरी आरती आय उतारें।
सोभा रहि सब देखि तिहि समैं अपनौं मन धन वारैं।
बजि उठैं बीन मृदंग महुवर गीत महर गायैं॥
अर्चित देवी गहि गडि माच्यो तियन पहुप बरखायैं।
यह सोभा दुरि देखत हे पिय धरनि धुक तिहिं बार॥
नागरि सखी हाथ दै कषियां राखे स्याम सम्हारि॥ २॥

**रागपूर्वी॥ इकताल॥**

रहे दोउ बदन निहारि निहारि।
फूलन बीनत स्याम सखी उत इत श्यामा सुकुबारि॥
लता करनि मैं रहिगई इत उत सकैं कौन निरबारि।
नागरिया मिलि नैन दुहुनि के बड़े ठगनि ठग वारि॥ ३॥

**॥ आन कवि कृत इकताल॥**

खेलैं सांझी सांझ प्यारी।
गोप कुंवारि साथणि लियां साथे चाव सौं चतुर सिंगारी॥
फूल भरी फिरैं फूल लेण ज्यों फूल रही फुलवारी।
रह्यां ठग्या लखि रूप लालची प्रीतम रसिक बिहारी॥ ८॥

**॥ राग कामोद इकताल॥**

अरी आज सांझी मैं जमुना कैं कूल फूल लेत फल पाये।
हेरत हेरत सघन द्रुमन मैं चितवत ही ताहि चाय नचित चिकनाये॥
महा मुदित वृषभान भवन का गावत चली बधाये।
नागरिया सांझी के पूजत इहिं वृंदाबन भये मनोरथ भाये॥ ९॥



**॥ तिताल॥**

कोऊ गोप किसोरी गोरी सांझी पूजन आवैं।
सांवरे अंग कवल दल नैंननि सुंदरता ऊफनावैं॥
भान भवन राधे जू के संग मिलि मिलि गीतनि गावैं।
कारन कौंन कुँवरि नागरि दिसि देखि- देखि मुसक्यावैं॥ १०॥

**॥ राग गौरी तिताल॥**

फूलनि बीनन हौं गई जहां जमुना कूल द्रुमनि की भीर।
अरझि गयो अरनी की डरियां तिहिं छिन मेरो अंचर बीर॥
तब कोउ निकसि अचांनक आयो मालती सघन लता निरबारि।
बिनही कहे मेरो पट सरुझावत इक टक मोदिस रह्यो निहारि॥
हौं सकुचनि झुकि दबि जात इत उत बहि नैंननि हाहा खात।
मन उरझाय बसन सुरझायो कहा कहौं और लाज की बात।
नाम न जान्यो श्याम अंग हैं पियरैं रंग वाको हुतो दुकूल।
अब वही बन लैं चलि नागरि सखी फिरि सांझी बीननि कौं फूल॥ ७॥

**॥ तिताल॥**

आजू रंग हैं सांझी मांझि। भई परम सलौंनी सांझि॥
॥ दोहा॥ हरी भूमि सौं झूमिकैं मिले कुसम झुकि झौंर।
मिल्यो जु पवन सुगंध सौं मिले लता अरु भौंर॥ १॥
पीत जुही कुबलैं कुसम मिले खेलि झिलि झोलि।
मिले बिंब फल फल भलैं अरू तमाल सौं बेलि॥ २॥
कदली मिली जु अंब सौं अरु कदंब कचनार।
मिला मिली नितही रहो इति बन करत बिहार॥ ३॥
नागरि मन भाये भये चली भवन मिलि बाल।
पायो फूलन बीनतैं रतन अमोलक लाल॥ ४॥

**॥ तिताल॥**

आई हैं मालनियां कोऊ फूल लियैं रंग रंग।
नखसिख लौंअति सोंहनी मानौं मोहनी सांवरैं अंग

चलित ललित गति हंस की तन औढ़ै झीनी चीर।
रूप अचंभो ह्वै रह्यो घाकें चहुं दिस माची भीर।
फूल-फूल सौं भेटि किये जहां सांझी रचैं सुकुंवारि।
ताहि लाडिली रीझि कें दई मोतिन माल उतारि।
बाला माला परसि कें भये कंप रोमांचित गात।
बिस्मय ह्वै सखियां रहीं लखिकन अंखियां मुसक्यात।
क्यौं कंपत बूझयो लली उही कह्यो जोर विवि पांन।
तुम महींद्र ब्रजभांन कुवरि हौं दींन प्रजा भयमांन।
ज्यौं ज्यौं कर प्यारी गहैं कहैं तू मति मानैं भीत।
सांझी चीतन चीत ह्वैं वसि सकैं न सांझी चीत।
स्वेद सिथिल सियरी भई बहि रहैं थहिर थहराय।
छुवत छबीली की छांह कौं वाको तन पिघल्यो सो जाय।
रीझि व्यथा प्रगटन लगी जब स्यामा श्याम निहारि।
निज मंदर लैं आइ कें भरी रंग अंकवारि।
नागरिया रस रंग रगमगे दोऊ कुसम सेझ कैं मांझ।
सांझी पूजत पियमिले परम सलौंनी सांझ॥

**॥ इति सांझी उत्सव समाप्तम्॥**

**॥ अथ शरद उत्सव॥**

समय बेणुगीत॥ पद राग बिलावल तथा धनाश्री तथा सोरठ ताल फिरती॥
प्रथम चपक॥ पाछे इकताला॥

सुनि री सखी सुखदाई।
देखि अमल सरद ऋतु आई॥
आई सरद गति पंक भुव भइ स्वच्छ अंबु अकाश हैं।
कुंज कानन अति प्रफुल्लित छई कुसुम सुवास हैं॥
ठौर ठौर सरोवरी बिच अमल कमलनि पुंजरी।
तहां भ्रमत अलिंद मातै करत आतुर गुंजरी।
सुभग बृन्दाबन अवनि वहैं त्रिविधि रोचक पवन हैं



दास नागर देखि तिहि करत मोहन गवन हैं॥ १॥
उर मंडित बनमाला डौलैं गायनि संग गुपाला॥
संग गायनि कें गुपाला भेष नव नटवर कियें।
मोरपछ प्रसून पुंज प्रबाल जूरा शिर दियैं॥
कंज करननि करनि कातन धात गुंजावलि लसैं।
दसनि किरन निजार को उर हार फैलत जब हसें॥
मद बिघूर्णित नैंन सोहैं बंक भौंहैं मन हरैं।
दास नागर स्याम घन लखि मुरलिका अधरनि धरैं॥ २॥
पशु पंछी चहुं दिशि री सुनि धुनि गांन देह सुधि बिसरी॥
बिसरी जु सुधि खग मृग चकित चित मुखन कहूं कनत्रिन छियैं।
बैंन बरखत नीर नैननि नाहिं बछरा पय पियैं॥
थक्यो मंद समीर सुनि द्रुम पातहु न पल्लव हलैं।
बिथकि जमुना जल रह्यो रथ भांन नहिं आगे चलैं॥
नभ बिमाननि गिरत सी तिय पति उछंग निवारदी।
दास नागर सुनत धुनि सुर बधू देह बिसार दी॥ ३॥
री तैं कौन पुण्य तप कीन्हों पिय को अधर सुधा रस लीनों॥
लीनौं अधर रस सुधा बन में अरी बैरन बांसुरी।
हम भवन तलफत परी परी कियो धीरज नासुरी॥
उड़त अंचर उरज उघरत बैन धुनि सुधि हरि लई।
कवरि छुटि भइ सिथल नींवी मदन पीडत निरदई॥
कह सम्हारि सम्हारि कबहू कबहु आवत सांवरो।
दास नागर ध्यान तनमय भरत अंकनि तांवरो॥ ४॥

**अथ सरद रास बांसुरी॥ राग केदारो॥**

सुनि धुनि बैंन चली हैं ब्रज जुवतिन की भीर।
ज्यों दुंदभि सुनि सनमुख निखसत समर सुभट रन धीर।
प्रेम खेत बृन्दाबन मग रह्यो छयो घोष मंजीर।
नागरि नागर मिलत ही मैं चले काम कटाछनि तीर॥ १॥

॥ ताल चरचरी ॥

चतुर अह दूतिका बांसुरी स्याम की।
नवल ब्रज बधुनि के आय कानन लगी
दूरि करि लाज कुल कान सब बाम की।
भवनि प्रति भवनि तैं लै चली बिपन कौं
भुरकि दइ डारि कैं मंत्र पढ़ि काम की।
करिकैं तिय अतन मइ मिलइ नागरि नई दइन
सुधि रहनि अब अपनैं सुखधाम की॥ २॥

॥ सरदरासोत्सव ॥

या पद की अलापचारी में देने ये ॥ दोहा॥
निसि सर्दोत्फूलि मल्लिका ककुभ किरन राकेस॥
गही बेणु हरि निरखि बन रास रमण आवेस॥ १॥
पूरन ससि निसि सरद की चल बन मलय समीर।
होत बेणु रव रास हित तरुन तनइया तीर॥ २॥
बंसी धुनि दूति पढ़ें बोल लई वृज बाल।
समर बिजैं आरंभ रस रास करन नन्दलाल॥ ३॥
परम प्रेम आरूढ़ रथ बिषम पन्थ धुनि बैन।
रास केलि संग्राम हित चढ़ी मदन गढ़ लैंन॥ ४॥
बिमल जुन्हैया जगमगी गई बैन धुनि छाय।
प्रेम नदी तिय रग मगी बृन्दा कानन आय॥ ५॥
सुनत बैंन बन तिय चली मुनि मय भये अधीर।
नागर लखि रस रास नभ भई बिमानन भीर॥ ६॥

॥ पद राग बिहागरो इकताल ॥

जुरे करनि कर कमल तियन के।
मंडल होत निर्त्त चल अंचल चंचल कुंडल हार हियनके।
वाय बंध्यो कलगांन बांसुरी बिबस सुरबधू अंक पियन के।
अंग अनंग नियरि रंभनि बहो हाव भाव भौंहैं अंखियन के।



प्रिया संगलैं दुरि गये हरि बन हेरत सघन बृंद सखियन के।
नागरिया छबि सागर बिन मनौं तलफत जूथ मैंन मछियन के॥ १॥

॥ इकताल ॥

हरि संग हुती सो अकेली वहि ठाढ़ी।
दांमिनि सी देह को प्रकाश आस पास देखि रही
द्रुम बेलिनि मैं चित्र की सी काढ़ी।
क्कासि क्कासि पिय पिय कहि टेरत महा बिरह की बेदन बाढ़ी।
नागरीदास रास रस बरखाय हाय किति दुरे घनस्यांम दुखित हैं गाढ़ी॥ २॥

॥ इकताल ॥

बैठे जाय पुलिन में रसिक बिहारी।
बीच आप ब्रजचंद मनोहर उड़ मंडल ब्रजनारी।
नव निचोल अप अपनें सब मिलि लाय बिछाय दये।
तन थिर दांमिन से निकसे पट वदरा उतर गये।
बंक भौंह नैंनां रसमाते छुटि अलकैं अलबेली।
प्रेम बिबस बूझत पिय कौं तिय हंसि हंसि प्रेम पहेली।
इकभजते कौं भजत एक बिन भजत भजई।
कहो कुवरते कौंन आहि जे इन दोउन कौं तजई।
समुझि अर्थ मुसकाय नैंन भरि कहत जोर कर प्यारो।
नागरिया हित सौं नहि ऊरन हौंनि तरिनी तिहारो॥ ३॥

॥ ताल चपक तथा तिताल ॥

रास रच्यो नंदलाला। लीनैं संग सकल ब्रज बाला।
अद्भुत मंडल कीनौं। अति कल गांन सरस सुर लीनौं।
लीनौं सरस सुर राग रंजित बीचि मिलि मुरली कढ़ी।
हौंन लाग्यो नृत्य बहुबिधि नूपुरनि धुंनि नभ चढ़ी।
डुलत कुंडल खुलत बैंनी झुलत मोतिन माला।
धरत पग डगमग बिवस रस रास रच्यो नंद लाला।
चित हाव भावनि लूटैं अभिनय द्रग भौंहनि सर छूटैं।

ललित ग्रीव भुज मेलत कबहुंक अंकमाल भरि झोलत।
झोलत जु भरि भरि अंकनि संकित मगन प्रेमानंद मैं।
चारु चुंबन अरु उगारहि धरत तिय मुख चंद मैं।
उड़त अंचल प्रगटि कुच बर ग्रंथ कसपट छूटैं॥
बढ्यो रंग सु अंग अंगनि हाव भावनि लूटैं पगनि गति कउ तक मचैं।
कटि मुरि मुरि मध्य लचैं सिथल किंकनी सोहैं मुकट लटक मन मोहैं।
मोहैं यमुन नट मुकट लटकनि मटक गति पग धरन की।
भंवर भरहर चहूं दिस छबि पीत पट फरहरन की।
गिरयो लखि मनमथ मुरछलैं भजी रति मुख मधु अचैं।
नचत मन मोहन तृभंगी पगनि गति कौतुक मचैं।
वृंदाबन सोभा बढ्यो ता पर ब्योम बिमांननि सौं मढ्यो।
दुंदभि देव बजावैं फूलनि अंजुली बहो बरखाबैं।
बरषैं जु फूलनि अंजुली बहो अमर गन कौतुक पगे।
बिबस अंकनि ब्रजबधू हिय निरखि मनमथ सर लगे।
ह्वैं गये चर थिर सुथिर चर सरद पूरन ससि चढ्यो॥
दासनागर रास ओसर बृन्दाबन सौभा बढ्यो॥ ४॥

## ॥ इकताल ॥

रह्यो रंग खेलत रास रसाला।
तुटि गये हार छूटि गये अंचर श्रम डगमगन मराला।
जुवति जुथ जुतध से जमुना बिच मदनमोहन तिहिं काला
क्रीड़त जनु करनी संग लीनैं मत द्विरिद नंदलाला।
गोरे अंग महा छबि पावत भीजे वार बिसाला॥
मानौं सीतल चंदन पूतरीनि सौं लगी लपटि अहिमाला।
छबि सौं छीटनि खेल मचावत प्रेम विवस ब्रज बाला॥
जनु उत्सव कालिंदी ग्रह उछरत मुक्तनि के जाला।
बाहु सुंड अवगाहि नीर बल बीर चले गज चाला॥
नागरीदास ब्रह्म रात्री रमि आये गेह गुपाला॥ ५॥



## ॥ रागकेदारो ताल यात्रा ॥

आज सखी रसिक सिरमौर नाचत भलैं।
जुवति जन मंडलाकार बृंदा बिपिन बीच घनस्याम प्रिय दामिनी झलमलैं॥
बीन रस लीन बजि रुणित कल किंकनी मैंन के मंत्र सी जंत्र धुनि-धुनि रलैं।
भ्रमत तन चपल मिलि परत नहिं दृष्टि जब दरस हित परस मन नैंन दोउ कलमलैं॥
मुकट सिर झलक अरु रलक हारावली झुलत बिब अलक लखि परत नाहिन कलैं।
नागरीदास भुज अंस धरि दोउ चलत कोटि कंदर्प तब चरनि तर दल मलैं॥ ६॥

## ॥ राग इमन इकताल ॥

बृंदाबन सरद रैंन राका अभिराम। रची है रुचिर रसिक केलि राधा संग भाम॥
बैंन बीन बलय मिले किंकिनी मृदंग। नूपूराधि गान घोष छायो हं सुघंग॥
अंस अंसबाहु बंध्यो मंडला अखंड। गोपिन बिच मध्य बिच गोपाल धरैं सिषि सिखंड॥
नृत्य होत अंचल चल लसत पहु परैंन। ज्यौं धुजा समूह फरहरात मैंन सैंन॥
मनहुं पवन प्रेरक मिलि गऊर श्याम संग। मेघ चक्र चंचला बिलास रास रंग॥
बासबस अधीर संग संग भौंर भीर। झुलत हार खुलत बार नहिं सम्हार चीर॥
गिरत कुसम कबर नितैं बिंब सरसा बैस। लटपटाय लगत कंठ पुलक तन सुदेश॥
नीबी कुच परस पान चुंबन उदगार। हाव भव लहर बढ्यो सिधु रस अपार॥
मुरछ परेउ मदन बाजि दुंदुभी अकाश पहोप वृष्टि होन लगी जहं बिलास रास।
बिथकित लखि रही रैंन होत हैं न भोर। नागर नट निरखि भयो चन्द्रमा चकोर॥ ७॥

## ॥ अथ निकुंज रासोत्सव ॥

॥ या पद की अलापचारी में देने ये॥ ॥ दोहा॥

कबहुक प्रिय मंडल करत अति गति बढत सुधंग।
हरिके मन लोचन फिरत उरझे पायन संग॥ १॥
लाल लई उरलाय लखि रीझे गति सरसांन।
मंडल मैं सुरझैं नहीं अंक माल उर झांन॥ २॥
उत उरझी कुण्डल अलक इत बेसर बनमाल॥
गउर स्याम उरझे दोऊ मंडल रास रसाल॥ ३॥
गरबहियां गत लेत मिलि श्रम बश सिथिलित पाय।

डारे मन ले सबनि का डगमग डगनि डुलाय॥ ४॥
लेति बलैया रीझि दोऊ दोउ पूछत श्रमवारि।
नचत सनीं अतिरंग सों बनीं मदन मनुहारि॥ ५॥
उतैं झुक्यौ हैं नव मुकुट इतैं चन्द्रिका चार।
भये रास रस मगन मन सरके सकल सिंगार॥ ६॥
खूटि खूटि अंचर गये छूटि छूटि गये वार।
श्रमत रास रस रंगमैं टूटि-टूटि गये हार॥ ७॥
नागरिया कहां लगिक हैं कबि मत मन्द प्रकास।
तिनके भौंह बिलास मैं कोरि कोरि ह्वैं रास॥ ८॥

### ॥ पद राग ईमन तिताल ॥

थेई तथेई थेई थेई थेई थेई थेई॥
उघटत रास रसिक मन मोहन रंग भरी निर्तत हैं प्यारी।
मुरज मृदंग टकोर मिलावत गावत सखी सुघर दैं तारी।
ललित अंग भुव भंग चितैं पिय बिबस भये बोलत बलिहारी।
जग मग रही रास मंडल मैं नागरिया मुख चन्द उज्यारी॥ १॥

### ॥ राग छाया नट तिताल ॥

बोलत थेई तथेई थेई रंगभरे निर्तत हैं पियप्यारी।
बजवत बीन प्रवीन लीन धुनि गुनि सलिता ललिता री।
अरझी अलक छबि सौं बेसरिमैं अरझी पीत पटसारी।
नागरि नागर रीझि परसपर कहत वार वारेउ हौं वारी॥ २॥

### राग अडाणो ॥ चौताल ॥

रासमंडल मधि छबि छके स्यामा स्याम लैं लैं गति लपट पलटि जात भरे रंग।
गान धुनि नूपुर रह्यो हैं रंग पूरितैं सों मधुर मधुर बीना बाजत मृदंग।
चन्द्रका सिथल इत मुकुट झुकौं हौं उत ह्वै गये बिबस रस सुधि न रही हैं अंग।
नागरी दास गति नैंननि की भई पंग मुरछि गिर्यो हें रति सहित अनंग॥ १॥

### ॥ तिताल ॥

दीनैं गरबहियां गति लेत डोलैं मण्डल मैं बोलैं ततथेई थेई मुख रूप ललकैं।
ह्वै गये बिबस मन श्रमित भये री तन खिसैं फल सीसतैं सिथिल भई अलकैं।



इत किंकिनी छूटी लोलहार कुंडल कपोल झाई झलकैं।
नागरीदास राधा मोहन नचत देखि भूली सखी गांन तांन लागत न पलकैं॥ २॥

### ॥ चौताल ॥

देखि स्यामा जू श्रमित भई रासमैं।
वहो निर्त भेद खेद सर के सिंगार हार सिथल कुसम केस पास मैं।
रसिक रवन निज करतें पवन करैं हरैं हरैं ल्याये निवास मैं।
नागरिया सोये कुंज कंवलनि की सैंनी पर बैंनी बिथुरेंनी हैं बिलास मैं॥ ३॥

### ॥ तिताल ॥

आजु सखी प्यारी जू स्यांमहिं सिखावहीं। लैं लैं गति भेदनि बतावहीं।
चतुर सिरोमनि जांनि अजांन भये डुलत सुलप सरसावहीं।
तालिम कौं देत स्यांमा नाचत मैं रंग बढ्यो सखी सुख निरखि सिहावहीं।
नागरि कटाछनि की लगत चमोठी चौट त्यों त्यों पिय गतिहिं भुलावहीं॥ ४॥

### राग केदारो ॥ ताल चर्चरी ॥

सरस सुघर नव किशोर गति सुधंग नांचैं। नूपरादि मिल मृदंग बीन लीन अनुपम धुनि सहचरि कल गांन रंग चह चरि ह्वैं मांचैं। कहीन परत भुव बिधांन नवघन तन लहलहांन बिलुलित बनमाल भृंग लपटति गति आवैं। अभिनय जुत उरपति रप धरन चपल चारु मंजुल झुकिमुकट सीस गतिमति बिसरावैं। दांवन बिचि पवन परसि फैंलि फैंलि जात फिरत गति तरंग सागर बढ़ि रंग मांज बोरैं। नागरिया निरखि बन श्रम झलकन झलमलात प्रेमविवस बाल नील अंचर मुख ढोरैं॥ १॥

### ॥ तालचर्चरी ॥

रसिक रस रास नवरंग निर्तत लला। संग गउरंग गरबांह छबि देत प्रिय सजल घन मांझ मानौं चमकि रही चंचला। बलयकंकन कुणित छीन कटि किंकिनी पगनि छिगुनीनि के छोर छनकत छला। नागरीदास दोउ निर्त श्रम डगमगे बारखुलि उरनि चलि [illegible]ला॥ २॥

### ॥ इकताल ॥

रासरंग वर सुधंग निर्तित हैं प्यारी। तत्तरंग धुमकटि तकथेई तथेई थेई थेई थेई थेई उघटति जुवति समूह बाजित समतारी। बीन परन आवज मिलिगावत ललिता प्रबीनछीन

रसानंद आवेस बिबस पट नीवी सिथल सुअंगे।
रूढ़ बिमान अमर प्रेमातुर मुर्छित अवनि अनंगे।
श्री बृन्दाबन राधा मोहन केलि कलप बहोसंगे।
नागरिया गोलोक अखंडित कथत कथा सुक भृंगे॥ ४॥

## ॥ राग केदारो ॥

रासमंडल मधि छके स्यांमां स्यांम लैं लैं गति लपटि लपटि जात भरे रंग।
गांनधुनि नूपुर रह्यो हैं रंगपूरि तैंसे मधुर मधुर बीनां बाजत मृदंग चंद्रिका सिथल इत
मुकट झुकौ हैं उत ह्वैं गये बिबस रस सुधि न रही हैं अंग।
नागरीदास गति नैंननि की भई पंग मुरछि गिरयो हैं रति सहित अनंग॥ ६॥

## ॥ इकताल ॥

अरी रास मैं रंगभरी नचत सरस स्यामाप्यारी।
चितवत चक्रत रहि गई चपला मींडत हाथ बिचारी।
गांन सुनत खग मृग मन मोहे लज्जितभई कोकिला नारी।
नागरीदास चकोर सांवरो देखत इकटक बदन चंद उजियारी॥ ७॥

## ॥ तिताल ॥

सरद निस रास सिन्धु बढ्यो अनूपम उपजत तांन तरंग।
सुघट संगीत सुधंग सुलफ गति होत दुहुनि मैं हाव भाव भुवभंग।
मधि मंडल श्रीराधा मोहन लखि मुरछित रति अवनि अनंग।
नागरीदास अकास चंद्र रथ चलत चक्र गति पंग॥ ८॥

## ॥ चर्चरी ॥

चली सिंगार सजि सहज अभिरांमिनी।
हार अरु बार कैं भार लचकत लंक डगनि डिगुलात आनंद भरि भामिनी।
सुनत झंकार निज दाबि रसनां दसन सकुचि फिर धरत पग मंद गजगामिनी।
उरसि अंचल उड़त सरस परसत पवन रवन पैं गवन बिच खिलि व मधु जामिनी।
कुंज घन द्रुमन की पांति तरजाति छिपछांह छाडत नहीं चतुरि मनि स्वामिनी।
नागरीदास सुखरास माधव मिली अंग प्रति अंग छबि मनहुं घन दामिनी॥ ९॥

॥ इतिरासोत्सव॥



## ॥ अथ गोवर्धनोत्सव ॥

॥ समय या पद की अलापचारी मै दैनें ये दोहा॥

प्यारी ढिग पिय रस पगे गिरकर धरैं तृभंग। रंग भरे के संग मैं बिपत मांझहू रंग॥ १॥
जे बंशीके भारसौं झुके जात सुकुंवारि। तिन प्रिय ब्रजजन कैं लियें करपर धर्‌यो पहार॥ २॥
गयो तिमर ऊपर जहां बरसत हैं घनजोर। गिरतर चंद उदैं भयो भामिन भई चकोर॥ ३॥
नागरि सों ललिता कहत सब ब्रज गिर की छांह॥ तुम चितवत पिय ओर उत त्यौं त्यौं कंपैं बांह॥ ४॥

## ॥ राग अडानौं इकताल ॥

हमारो गोपाल लाल बल्लभ कुल तिलक भाल, ब्रज जन सुखदाई कुंवर सांवर तनरूप जाल।
इंद्रकोपि मेघमाल पीवत लखि गोपी ग्वाल, राखि लीनौं गिरकरधर छत्रछांह भुज मृनाल।
सतद्योस गोबद्धन तर रूप उत्सव भीर बाल, मनु चकोर मंढली मधि सरद चंद नंदलाल।
नागरीदास नग निवास इत कतूहल बढ्यो, रंग मघवा उत मन भंग ह्वैं रह्यो समैं रसाल॥ १॥

## ॥ चौताल ॥

देखि कैं सैंधौं छबीलो ठाढ़ो सुढार सौं।
एक कर गिर धरैं एक कर कटि तट नाचत ज्यों नटवा सम्हार सौं।
गोबरधन तरैं चंद मुख कैं उजारे मांझ दीठ न टरत इकतार सौं।
नागरिया सबकी भई हैं इक ठोरी आँखैं याही तैं तृभंग भार सौं॥ २॥

## ॥ ताल ॥

कुंवर किसोरी कहूं दरसी कुंवर कान्ह जा छिन तें मिलिबे की मति यह ठानी हैं।
गोपिन की मति फेरि मघवा की बल मेटी बरष्यो पुरंद्र तव प्रलय पौंन पानी हैं।
छूटि गयी सहजैं बिपत मांझ लोकलाज राखी गिरधारी नी रैं राधा रस सांनी हैं।
विषम उपाय करि सींची हित बेली ऐसैं लगन लगे की हेली अह कहांनी हैं॥ ३॥

## ॥ ताल ॥

जांनैंरी बलैया कित बरषैं प्रबल पांनी कित परैं ओला कित मेघमाला अनींकी।
पायो प्रांन प्रीतम निहारैं छबि गिरधैं चंदहि चकोरी जिम नेह चितवनीं की।
नागरी मुख बीरी देत लेत रूप नैंन सुधा पगि रहे बातनि परम हित सनीं की।
नागर दिन सात रैंन चैंन मैंन जाने जात घनीं घन बरखा मैं बनी बनांबनी की॥ ४॥

**॥ राग ॥**

मतमोर चंद्रिका रतन पेंच पगियां पैं सुन्दर सुमन गुच्छ सोभा नव भाल की
घुर्नित नयन बंक भुव मुख मंदहास परसत पौंन जुग अलकस चालकी।
ठाढो ह्वै तृंभगनि सौं गिरराज कर धरैं तैसी झुकि झुलनि ललित बनमाल की।
होत मद भंग मनमथ राज सुर राज देखि सखी देखि आजु छबि नंदलाल की ॥ ५ ॥

**॥ राग ॥**

सजनी निरखि नंदकुमार।
धरैं गिर कर बढ़ी छबि लखि मदन वोह बलिहार ॥
ललित अंग तृभंग कटि तटि कनक किंकिनी जाल।
बंक भुव द्रिग अलक थरसत चरन परसत माल ॥
उदित बिच ब्रजचन्द पूरन तिमर मेट्यो घोर।
तहां गोपी गन तरइयां भान कुंवरि चकोर ॥
उहां बाहिर इन्द्र बरषत प्रबल घन लियैं संग।
दास नागर गोवर्द्धन धर इहां बरषत रंग ॥

**॥ राग जथा समय अनुसार गावनौ ताल चर्चरी ॥**

जयति गिरराज कृत छत्र ब्रजराज सुत सहज सुर राज गति गर्ब हारी।
बर्य हरिदास जन घोष सुखरास रितु सर्बदा हरित हुल्लास कारी।
सकल रस बर्द्धनं देव गोवर्द्धनं प्रणित इन्द्रादि सुर लोकचारी।
विपुन मथि नायकं भूमि छबि भायकं पायकं नील मनि पीत प्यारी।
परम प्रिय हेत संकेत सुख कंदरा तहां निस दिवस बिहरत बिहारी।
नागरी दास लघु बुद्धि बरनैं कहा उतहिं नग प्रगटि जग महिमा भारी ॥ १ ॥

**॥ राग सारंग तिताल ॥**

कैंसैं रही देखि वृषभान की किसोरी नैननि पलनि लगावैं
वेउ कर गिरधरें सबनि की चौर चितैं फिर द्रिग इत ठहरावैं।
दुहुंनि कैं दुहूं वोर स्वेद रोम कंप होत चहूं ओर भार पैं परम कौंन पावैं।
नागरीदास उत इन्द्र कोपि बरषत इत गिरधारी प्यारी रंग बरषावैं ॥ १ ॥



**॥ राग टोडी ॥**

गोवर्द्धन धारी नाम कुंवरजी को अबही तैं हम लीनों।
सात दिवस गिरिवर कर राख्यो इन्द्र मान भंग कीनों।
भले खावो चोरी दधि ब्रज में भले दान दधि छीनों।
नागरिया घर घर को माखन आजु सुफल कर दीनों ॥ २ ॥

**॥ इति गोवर्धन उत्सव ॥**

॥ अथ दीपमालका ॥

॥ या पद की अलापचारी में देने ये ॥ ॥ दोहा ॥

और ठौर दीपावली धरैं दीवारी होत।
सदा दिवारी स्याम कैं प्यारी जगमग जोत ॥ १ ॥
दीपमाल स्यांमा सहज बिहस जबैं बतरात।
हसत लसत ऐसे जनूं फूलझरी छुटि जात ॥ २ ॥
दीपमाल प्रिय हार उर लसत सुमुक्ता आब।
पिय चख लखि चख बोध हवैं छुटत मनौं महताब ॥ ३ ॥
दीपमाल नव नागरी नव नागर सुख रास।
उरमैं बसो हिय भवन ये नित्य नागरीदास ॥ ४ ॥

**॥ राग ईमन तिताल ॥**

कुहूकच चूनरी सितारे दार सोई नभ अंग आभा सहज प्रकाश पुंज धारी हैं।
मनि गन भूषन सुदीपक जगी हैं जोति मोतिन की आब महताब उनहारी हैं।
फूलझरी हास मैं निवास महा मोहनी को कुंजनि कैं पुंज चखि चौंधि बिसतारी हैं।
ओर ठोर दीपनि की दुति सों दिवारी होत नागर बिहारी कैं दिवारी नित प्यारी हैं ॥ १ ॥

**॥ इकताल ॥**

धरि दैं दीप संवारें जिन बाती।
दीपनि की दुति फीकी लगत हैं तुव मुख चन्द जोति सरसाती।
निकसि आव दीपक मंडल तें दीप मालिका तुही सुहाती।
नागरी दास करी न्यारी प्रिय लाइ लई उर मोहन घाती ॥ २ ॥

**॥ कवित्त ॥**

सुन्दर सुघर स्याम राधा ठकुरायन जू जोरी जग भूषन सुआंनद अगमगी।
तारकसी बसन जवाहिर की जेब लसी बैठे कुरसी पैं प्रीत नौतन सगमगी।
जरबफ्ती समियानैं समैं दान किस्त सोज नागर अगर धूनि धूंधरि रगमगी।
दिपैं दीपमाल छबि छूटैं अग्नजंत्र जाल अजब जलूस जोति जीनत जगमगी॥ १॥

**॥ कवित्त ॥**

जसुदा के फिरें मुकतान की बेली सी नागरि राधे सिंगार करें।
बरबेनी के भार ओ हारनि के डग पाइन की डिगु लात धरें।
अति आनन जोति मई अंगना भयो रूप कथा कहि को उचरें।
जित जाय संवारत बाती बधू तित दीपन की दुति फीकी परें॥ २॥

**॥ कवित्त ॥**

नव कुंज के चौक दिवारी की राति सुप्यारी जहां अति सोभा सची।
जरतारी की सारी औ अंग जवांहिर सीस मुकैस की खौर रची।
इहि बानंक नागरि संग सखी लखि लालनि की मनसा ललची।
सब पांति ह्वै छोड़त फूलझरी तहां होज पैं रूप की मोज मची॥ ३॥

**॥ कवित्त ॥**

जहां तहां दीपन की दीपत दिपत दूनीं ज्यों जरी सजीवनि के पोधा लैं लगाए हैं।
कैंधों देखि दंपति की संपति बिहार चार इंद्र पारजात के पहुंप बरषाए हैं।
कैंधों पुखरागनि के नागर परे हें ओला कैंधों अंग अवनि सु नैंन सरसाये हैं।
कैंधौं नभ मंडल तें बृन्दाबन चन्दजू पें ह्वै कैं पांति पांतिनि नछत्र जुरि आए हैं॥ ४॥

॥ या पद की अलापचारी में दैने ये दोहा ॥

प्यारी पिय सखियन सहित। चोपरि खेलत बैठ।
मनों मदन पुर चोहटें लगी रूप की पैठ॥ १॥
छला झनक चुरियां झनक। पासे ठनकत संग।
बजवत गुनी अनंग मनु। जलतरंग जु तरंग॥ २॥
स्यांम सारि गोरी चलत चांपि चहुं टियनि चार।
मनहुं कँवल के अग्र हैं आवत भृंग कुमार॥ ३॥



जरद नरद घनस्यांम पिय द्वैं अंगुरिन गहि लेत।
मनों कोयल की चंचु मैं पीत अंब छबि देत॥ ४॥
नागरि पासे परनि की इंह उपमा दरसांनि॥
होत रूप सरतें मनों लहरें निकसत जांनि॥ ५॥
॥ दोहा॥ रगमग रहि चोपरि चहुल प्रीतम रहे निहारि।
दीपक ढिग जगि मगि रही लड़की ली सुकुवारि॥ ६॥
नथ लटकनि कुंडल हलनि। हारनि झुलनि निहारि।
जब झुकि पासे डारही लडकीली सुकुंवारि॥ ७॥
॥ दोहा॥ रूप लोभ पक्के पिया। कच्चो होत हें सार।
त्यौं त्यौं चितवत सतरह्वैं लडकीली सुकंवारि॥ ८॥
बचन निरादर खेल में लालहिं लगत सुप्यार।
चलि रुगटी हंस कहत यों लड़कीली सुकुंवारि॥ ९॥
॥ दोहा॥ समझि दाव पिय चूकि कैं सारहि चलत सम्हारि॥
पकरि पिछौंहों देत करि लडकीली सुकंवारि॥ १०॥
बेसरि बंसी पीतपट हार दये पिय हार॥
मनहूं लीनों जीति कैं लडकीली सुकुंवारि॥ ११॥
॥ दोहा॥ लाल चले जुग जोरि कें नील पीत रंग सारि॥
समुझि सकुचि हसि झुकि रही लडकीली सुकुंमारि॥ १२॥
बाजी बाजी उठि चली। बाजी लगनि बिचारि॥
हिय बाजी नागरि मिली लडकीली सुकुंवारि॥ १३॥

**आन कवि कृत ॥ तिताल ॥**

हो रंगीली बाजी लागि रही छै नैंणां मैं।
जाणी काम कटाछां ही का देख दाव दैंणा में।
कांपे अंग अनंग रंग सुर भंग हुओ बैंणा में।
रसिक बिहारी मन फूल बढ़ी हुई हार जीत नैंणा में॥ १॥

॥ इति दीपमालिका उत्सव ॥

## ॥ अथ श्री गुसांईजी को उत्सव ॥

॥ या पद की अलापचारी में देने ये ॥

॥ दोहा ॥ परम पुष्टि रस जल अमित। उर्मी प्रेमा बेस।
नागर प्रगटि आनंद निधि। वल्लभ सुत बिठलेस ॥ १ ॥
बल्लभाचारज कलपतरु। फल लाग्यो बिठलेस ॥
या फलकों रस रूप हैं गोकुलनाथ ब्रजेस ॥ २ ॥
धन बल्लभ बिठलेस धन। धन्य सात सुतबंस ॥
भव निरस्तारन हित प्रगटि। नागर जक्त प्रसंस ॥ ३ ॥

## ॥ राग ॥

श्री बल्लभा चारिज कुमार कुमद कुल निसेस।
भक्तिजन प्रसंसित श्रीमत्त बिठलेस ॥
विष्णु स्वामि सम्प्रदाय चूरामड़ि चार प्रणमाम्यहं अंर्न्हि कल्हार ॥ १ ॥

## पद चर्चरी ॥ यथा समें राग ॥

वेई गाय गोपवृन्द गोकुल मधि सन्तत सुख संपदा निघोष मोष पगनि पेलि डारी ॥
वेई नंद बल्लभ सुत भए हें प्रगटि बल्लभ ग्रह सोभित दुज कुल ललाम धाम ब्रज बिहारी ॥
वेई प्रेम पर कर निति गोबिंद कुंभनादि संग ललित लुब्ध लीला रस पुष्ट कोस तारी।
वेई दास नागर के प्रेरक मन मन सुवेस वेई विठलेस वेई गोवर्द्धन धारी ॥ १ ॥

## ॥ राग ॥

प्रगटि विठलेस दिनकर किरन ससुत भक्त कुल केवल आनन्द दयने ॥
नरनि उरनि विध्वंस मंगल करन कृष्ण प्रतिबिंब जगमगत नयने ॥
विटप खंडन कठिन काठ मायाबाद पुष्ट रस बरषही बिमल बयने ॥
नागरीदास दुजराज जानौं वे इसमें सुरराज गिरराज लयने ॥ २ ॥

## ॥ छप्पय ॥

धनि श्री बल्लभ विदित धन्य धनि कुंवर बिभूषन।
बिठलेस सुत सात धन्य हरि अंस बंस धन।
धन चौरासी भक्त जक्त हित पुरुस रूप छित।
धनि गोबिंद कुंभनादि प्रीत गिरधरन अपरमित।



धन्य भान भुव भागवत नागरिया हिय तमहरन।
धन्य २ फिर धन्य हैं महामंत्र केवल सरन ॥ ३ ॥

॥ इति श्री गुसाई जी को उत्सव ॥

## ॥ अथ बसंतोत्सव ॥

॥ बसंत उत्सव का या पद की अलापचारी में देने ये ॥

॥ दोहा ॥ काम जनम अभिराम दिन। बृंदा धाम लसंत ॥
हरि राधा बंदत तहां। मंगल कलस बसंत ॥ १ ॥
सुभ कारिक वृंदा बिपिन। नव बसंत दिन आज ॥
आगम मंगल गान धुनि। होत लगन को राज ॥ २ ॥
इहिं बसंत रितु उठत बहो। द्रुम नव पल्लव लागि।
जड़हूं कैंरो मांच है। ब्यथा मदन तन जागि ॥ ३ ॥
कुसमित द्रुम गह बरनि अति रितु बंसत अभिराम ॥
छबि छाई बृंदा बिपुन मनु सर पंजर काम ॥ ४ ॥
फूल भरे मंजुल कलस पिय प्यारो रसवंत ॥
नागरि नित बृन्दा बिपिन मूरतवंत बंसत ॥ ५ ॥

## ॥ राग हिंडोल इकताल ॥

खेलत बसंत ब्रजपति कुंवार। बिच बृंदा बिपुन बिहारि चार ॥
झुकि द्रुम नव पल्लव कुसम भार। उडि रज प्रसून बिच अलि गुंजार।
तहां सखा संग गावत धमार। बाजैं मृदंग डफ झांझर तार।
इत लिये बंदन कलस नारि। मिलि देत मधुर सुरस गारि।
चलैं विविध रंग पिचकारी धारि। गये चहुंटि चीर सब तन सुढार।
द्रिग पलन लगत लगे सर हैं मार। भये रौम कंप लोचन निवार।
रहे ललित परस्पर छबि निहार। नागर नागरि नहीं प्रीत पार ॥ १ ॥

## ॥ तिताल ॥

कहि हो हो हो खेलत बसंत पिय संग राधे सुकुमारि।
गावत हिंडोल बाजत मृदंग डफ झांझर तार कठ तार।
चलत पीत पहुपनि की पंखुरी सोभा रही निहार।

नागरिया नागरि बृन्दाबन मधुर तिरंग बिहार॥ २॥

**॥ चौताल॥**

फूले द्रुमबल्ली बन झूलैं अलि गंध बोलैं मदन सदन मानों मंगल बंधावनौं।
जहां तहां आवत धुनि गांन हिंडोल तैंसो कोकिलांनि कोयल को सोर मन भांवनौं।
उमहीं सकल बाल आंई ब्रजभान जू कैं सीस लैं कलस संग सो हैं महरांवनौं।
हिये हुलसंत बिकसंत कुंज तिय मुख नागर बसंत बरसाने मैं सुहावनौं॥ ३॥

**॥ तिताल॥**

अति सुखदाई री द्रुमनि कोयलिया कुहक मचाई नव बसंत रितु सरसाई।
छई सुवास भ्रमत मधुकर मिलि नूत मंजरनि की डारियां कदली कुंज गहबरि आई।
अंब सोर नवबाल बाल लें लालहि बहसि बंदाई।
पिय प्यारी नागरि नागर हिय फाग खेलि सुधि आय छाई॥ ४॥

**॥ इकताल॥**

हो धुं धुंकार डफ बाजत ताल मृदंग झांझि मिलि बिचि मुरली धुंनि थोरी।
वूका बंदन चंदन छिरकत कुंमकुंम रंग केसरि लैं घोरी।
दिन बसंत गावत नाचत तहां बनिता गनि दुहुं वोरी।
नागरिया खेलत वृन्दावन पिय घनस्याम प्रिया तन गोरी॥ ५॥

**॥ इकताल॥**

बन मदमाते पिय प्यारी खेलत बसंत हसि हसि छकि छकि डारि गरबांही।
कँवल पराग लिये कर कंवलनि कँवल बदन लपटाही।
परसपर आन देत मन माहीं सखी कंज किंजल्कनि खेलत गावत ससि सरसांही।
नागरि नागर बन बिहरत फूल मनिन की छांही रंगभरे अंग अंग उरझांही॥ ६॥

॥ इति बसंत समाप्त॥

**॥ अथ होरी उत्सव॥**

या पद की अलापचारी मैं देने ये॥

॥ दोहा॥ कुसल नंद वृषभांन की। तिनके द्वैं जगबंद।
होरी मांडो आज सुभ। ओप्यो वृज आनंद॥ १॥
नागरि नागर भाव तैं। मंगल रूप रसाल।



नित मंगल बृन्दा बिपन। नित्य फाग रस ख्याल॥ २॥
ग्यारे नहिं प्यारे लगैं। सोफी सदा उदास।
इस्क अैंस मदिरा पियें। कैफी फागुन मास॥ ३॥
कियैं रंगीले फाग मैं। हियें रंगीले अैंन।
महा रंगीले दिन सबैं। महा रंगीली रैंन॥ ४॥
फागजु रसिकन हित भयो। रसिक फाग के हेत।
चंदा बिन निस सांवरी। निस बिन चंदा सेत॥ ५॥
जाकौं होरी खेल सौं तनकहु हुवो न हेत।
खाल ओढ़ि सो मनुष की कियो मुलम्मा प्रेत॥ ६॥
फाग मास रितु उठत वहो द्रुम नव पल्लव लागि।
जड़हू के रोमांच ह्वैं ब्यथा मदन तन जागि॥ ७॥
इहिं रितु ओसर फाग कैं होत लगन को राज।
डफ मोहन मुरली सुनत छुटत बधुन की लाज॥ ८॥
इहिं होरी के खेल की जग सौं उलटी रीति॥
जीतन हीं में हार हैं हारन हीं मैं जीति॥ ९॥
सुनिरीं डफ बाजन लगे सिर पर आयो फाग॥
अब कैंसैं दबिहैं दई अंतर को अनुराग॥ १०॥
सुलगी लगन हियेन में जु लगी होरी आय॥
खुलगी ग्रन्थ बिचार की मीत मिलन दरसाय॥ ११॥
छिन देखैं बिन देत दुख लोचन परे जु गैल॥
फाग बावरे दिनन मैं रूप बावरो छैल॥ १२॥
ग्रह को नैं जातन रह्यो परत अगोनैं पाव॥
नित होरी के खेल मैं चित चोरी को चाव॥ १३॥
बरसानै नन्दगांव अति उमगे दल दुहुं ओर॥
समर खेत संकेत मैं आज फाग जुध जोर॥ १४॥
ढोल कि ढोल मृदंग बजि मुरली डफ सहनाय॥
गह गड़ गांन धमार धुनि रयो कुलाहल छाय॥ १५॥

उडि गुलाल आंधी पहल डफ गरजन अभिरांम॥
रंग धार बरसन लगी गउर घटा अरु स्यांम॥ १६॥
मची दुहुंनि मैं फाग इत राधे उत नंद लाल॥
जमुनाधर गिर तरु लता खग मृग भरे गुलाल॥ १७॥
लालमई सब देखियत घुमड्यो गगन गुलाल॥
मनु दंपति अनुराग को डार्‌यो ब्रज पर जाल॥ १८॥
राजत धूंध गुलाल मैं भरि भरि भाजत बाल॥
मानौं फूली सांझ बिच चमकत चपला जाल॥ १९॥
दृगही चाहत लाल कौं तन चह उड्यो गुलाल
धूधरि मैं दुरि ओछकां भुज भरि लीजैं बाल॥ २०॥
सकैं न दृग भरि देखि कैं तिनको बदन मयंक॥
जिनकौं होरी खेल मिस अंकनि भरत निसंक॥ २१॥
कौंधि उठत ज्यों दामिनी भरत भांमिनी आय॥३
पिय मन लै कैं पलटि फिरि मिलैं झुंड मैं आय॥ २॥
आवत मुठी गुलाल की छबि सौं छैल बचात।
पैं अचूकि द्रिग लगि हियैं बार पार भय जात॥ २३॥
रोकत घूंघट ओट सौं मुरि पिचकारी धार॥
यहैं बचावन देख उत बचत नहीं रिझवार॥ २४॥
अजू कहा आँखैं भरो कौन रीति को खेल॥
इन बातनि रहि हैं नहीं हमसौं तुमसौं मेल॥ २४॥
लगैं सु फिर निकसैं नहीं करी न भावत ओटि॥
होरी में अंखियान की आंखनि ही पैं चोटि॥ २६॥
आखैं भरत गुलाल सौं यह धौंकौं न सुभाय॥
मदन माधुरी पान में अंतर पार नहाय॥ २७॥
चतुराई करिकैं दयो पौंछनि द्रिगनि गुलाल॥
कहत चलावत उत गयो भौंरे छूटि रुमाल॥ २८॥
चलत गुलालनि झोरियां माची धूम धमारि॥



फाग केलि झकझोरियां फिरत गोरियां ग्वारि॥ २९॥
हार छुटत छूटत नहीं रहे खेलि रस भोय॥
हार टूटि पायनि परत हार न मानत कोय॥ ३०॥
नागरिया गति रीझि की क्यौं हूं जात कही न॥
दंपति फाग बिहार सर भयो लीन मनमीन॥ ३१॥

## ॥ राग भैरू ताल चरचरी ॥

होरि खेलि खेलत जब रही रैंन थोरी। सोये हैं रसिक लाल संग लैं किसोरी।
पियरी यह जगि लगि दोऊ चले हैं रंग भीनैं। सगवगे गुलाल बसन अंसनि भुज दीनैं।
अस्त विस्त अभरन नग टूटे हार ही के। अलक भौंह मूल रंग अधर रंग फीके।
फाग भरे लाग भरे रजनी के जागे। फिर फिर रस उरझत नहीं सुरझत अनुरागे।
गउर श्याम ललित अंग भुज लता निकसिया। नागरिया हिय बसे फागुन के रसिया।

## ॥ राग राम कली तिताल ॥

तैं उबट बाट चलाई बहुत दिन अब क्यौं नारि नवइयां।
आई हम बरसांनैं वारी निकसि अरे नंद गइयां।
आगे आयरु हाहा खाय कैं परि सखियनि के पइयां।
यौं कहि नागर अैंचि लये गहि उड़ि गुलाल नभ छइयां॥ २॥

## ॥ राग खट तिताल ॥

इत मत निकसि चौथ के चंदा देखत कलंक मोकौं लगि जायगो रे।
दूरितैं गुलाल भरि जिन छूवैं छैल मोहि तेरों स्याम रंग मेरैं लगि जायगो रे।
पाय परौं हा हा अब नियरैं न आव करनि चवाव गांव लगि जायगो रे।
नागर तू लोभी फाग स्वारथ ही को हैं मीत मो मन निगोड़ो भूलि लगि जायगो रे॥ ३॥

## ॥ तिताल ॥

सांवरे छैल छबीले खिलार सौं गोरी किसोरी जू होरी मचावैं।
हो हो कहैं इत तारी बजाय जबैं उत प्यारी गुलाल लैं धावैं।
जाहि सबैं अवसांनजकी लगि कंप ह्वैं लाल हिये हहरावैं।
नागरि कीन अवाई थंभें जब रूप हवाई सी छूटि कैं आवैं॥ ४॥

**॥ राग टोडी ॥ इकताल ॥**

अरी यह कौन हैं री नंद गांव वारे नि मैं पेच ही पेच भरी बातैं गावैं।
ओट कियें उत कौं डफ की इत कौं लखिकैं अँखियां ठहरावैं।
सांवरे अंग कंवल से नैननि सैंननि हा हा खावैं।
नागरि होरी भई तो कहा इन्हें कोऊ सखी समुझावैं॥ ५॥

**॥ राग सारंग ॥ इकताल ॥**

होरी या बगर मैं माचि रही हैं पनियां भरनि कैंसें जाउं।
लाज लिये मेरी घूंघट पट सौं किंहिं बिधनि बहनि पाउं।
दौरि दौरि रंग भरत परसपर तिन सौं कहा वसाउं।
नागरि कान्ह छुवो मोहि तो फिरि नावं धरैं सब गाउं॥ ६॥

**॥ तिताल ॥**

छैल वहि काहू सौं न डरैं।
आधी रात बृंदाबन मांही ठीक दुपहरी करैं।
आय निकट ललचाय लालची और ही ढार ढरैं।
नागरी दास रंग भरि भरि फिरि भुज भरि अंक भरैं॥ ७॥

**॥ इकताल ॥**

मोहन लये हैं दबाय लंगर होरी की।
मुरली माला छीन बहुरि डारी सौंज झटकि झोरी की।
खैंचत झपटि पीत पटि कटि सौं दैं भाजत बैंदी रोरी की।
जीती नांहि जात हैं क्यों हूं नागर नव नागर ओरी की॥ ८॥

**॥ तिताल ॥**

खेलैं होरी मन मोहनां।
फैंटा सीस केसरी सुन्दर छूटी अलक मुख सोहनां।
भरत रंग मन हरत फिरत लाग्यो रस बस ह्वैं तिय गोहनां।
नागरि कंवल कंवल प्रति लपटत भंवर कंवर ब्रज जोहनां॥ ९॥

**॥ इकताल ॥**

फूटैं कर की चूरियां मोहि हा हा लंगर दैं जान।



होरी मैं भली ये करत बर जोरी मच्यो हैं कौन खेलि सुखदान।
तरकत कस दरकत हैं अंगियां धर धर धरकत प्रांन।
दूरिही तैं जु भलो पिय नागर नैननि को सनमांन॥ १०॥

**॥ तिताल ॥**

छैल लंगर घनस्याम मग मेरो रोकि रह्यो री।
उर पर डारि रंग पिचकारी अंचरा आनि गह्यो री।
नैंन लगे अरु दिन होरी के यातैं सबैं सह्यो री।
नागरिया छिन कलन परत अब चार बिचार बह्यो री॥ ११॥

**॥ तिताल ॥**

न सहि होंरी याकी इतनी ए लंगराई।
अरी ये अति ही ढीठ हैं कान्ह हमसों करि बरजोरी धूम मचाई।
सब याकी लैं लकुटी बंसी उरमाला छीन लेहु पिचकाई।
अब तुम सकल सिमटि लैं लैं कर गागरि नागरि भरोरी कन्हाई॥ १२॥

**॥ आन कवि कृत राग खंभायची तिताल ॥**

आज बरसानौं हेली लागैं सुहांवणौं।
फाग गति गीत सुर छायो सुहायो आजु नंद कुंवर आयो पाहुणौं।
उठोजी किसोरी गोरी ल्योनैं गुलाल ओली भर होली अब सुख सरसांवणौं।
गह गड़ खेल धूम धूंधर अबीर मांहीं रसिक बिहारी कंठ लगांवणौं॥ १३॥

**॥ आन कवि कृत तिताल ॥**

फागुणिया रो घुमडि रह्यो छैं ख्याल।
कुंज भूमि सो लाल लाल हुइ हुवा लाल तमाल।
उड़ि गुलाल की लाल धूंधरि मैं भलकैं बैंणा भाल।
सखी लाल अरु लाल बिहारनि रसिक बिहारी लाल॥ १४॥

**॥ आन कवि कृत ॥**

या पद की अलापचारी मैं दैंने ये।

दोहा=उडि गुलाल धूंधर भई तन रह्यो लाल बितांन।
चौंरी चारुनिकुंज में ब्याह फाग सुखदांन॥ १॥

फूलन के सिर सेहरा फाग रगमगे वेस।
भांवर ही में चलत दोऊ लैं गति सुलप सुदेस॥ २॥
भीजे केसर रंग सों लगे अरुन पट पीत।
डोलैं चाचर चौक मैं गहि बहियां दोउ मीत॥ ३॥
रच्यो रंगीली रैंन मैं होरी के बिच ब्याह।
बनीं बिहारन रस सनीं रसिक बिहारी नाह॥ ४॥

**॥ आन कवि कृत तिताल॥**

कुंज महल मैं आजु रंग होरी हो।
फाग खेल मैं बनां बनीं की ह्वैं रही पट गठ जोरी हो।
मुदित ह्वैं नारि गुलाल उड़ावैं गावैं गारि दुहुं ओरी हो।
दूलह रसिक बिहारी सुंदर दुलहनि नवल किसोरी हो॥ १५॥

**राग धनाश्री ॥ इकताल॥**

मेरें लाग्याई आवें साथरी नंदनंदन मनमोहनां।
ब्रज बीथन निकुंजनि कुंज मैं आनन तन दुति जोहनां।
सैंननि हाहा खात लालची छाड़त नहीं छिन गोहनां।
नागर नवल छैल होरी कों चित ललचत लखि सोहनां॥

**॥ इकताल॥**

फागन खेलत फाग रह्यो क्यों जायरी। सास ननद डर आगैं परत नहिं पायरी।
अरी नंदनंदन सौं नेह सुनैं दुख कौंनरी। क्यौं चितवैं दिन रैंन अकेलैं भौंनरी।
सूनौं सदन निहारि मदन पायो दावरी। मारत बान निसंक करत उर घावरी।
डफ मुरली धुनि आंनि परत जब कांनरी। श्रवन रहत ठहराय चलत ये प्रानरी।
अरी नांहिं रहूं घर घरी बहुरि कब फागरी। फिर मोहन सों भई द्रगनि की लागरी।
तोरि कैं लाज कपाट चली गज गामिनी। मिली नागरीदास मनौं घन दामिनी॥ १८॥

**॥ तिताल॥**

फेरी दैं दैं बोल हीं राज बैद गुन बैद।
बिरह बिथा बस एक ब्रज बधू ताहि कुटंब की कैद॥
दोरि पोरि लौं झांकि सकत नहिं भये दिवस दस बीस।



डफ मुरली धुनि सुनि सुनि काननि परी धुनत हैं सीस॥
तापैं ल्याई स्याम तबीबैं एक सखी हित पाइ।
इत उत तैं अंसुवनि जलभरि भरि मिले नैंन अकुलाइ॥
छिन सियरो छिन तातो तन हैं चमकि चल्यो मुख स्वेद।
कंपति हाथ नारि कैं देखत को समुझैं यह भेद॥
ओषद कैं मिस लैं मुखदीनौं करतैं पान उगार।
बहुरि कह्यौ वह नीकी ह्वै हैं बतकी लगें बयार॥
नागरिया इहि फाग मैं हरि सब बिधि पूरे काम।
तपत बुझाई बालकी बनि नये गुनी घनस्याम॥ १९॥

**राग काफी॥ तिताल॥**

कोई इक जोगी रूप कियैं।
भौंहें बंक छकौं हैं लोयन चलि चलि कोयनि कांनछियैं॥
देखि स्यामतन बेष मनोहर बार बार जल बारि पियैं।
नागर मनमथ अलख जगावत गावत खांधै बीन लियैं॥ २०॥

**॥ इकताल॥**

स्याम घन घेर्‌यो नवल किसोरी दांमिन तन दुति गोरी।
करि विचार खिलवारि नारि सब दुरि सांकरी खोरी।
तहां गह्यो चित चौर आपुनौं करत प्रेम झकझोरी।
उड़त गुलाल लाल गह बरबन धुनि सुनियत होरी होरी।
मन कौं हरनि तहां अंकभरन है अधरपान की चोरी।
बढ़ि गयो रंग खेलि होरी मैं क्यों बरनौं मति थोरी।
ब्रजजीवनि नंदलाल नागरी चिरजीवो यह जोरी॥ २१॥

**॥ तिताल॥**

न कीजिये नजर भरि दिल इश्क की निगाहें।
देखें सब खेलि बीचि छूवो मति बांहें। क्या पूंछना गुलाल का रुमाल की अदा है।
नागरिया नेह की न जाहरी सलाहैं। लगैगा कलंक फेर बनगी निवाहैं॥ २॥

**॥ तिताल ॥**

जांनदैं तेरैं पईयां परत हौं रे कन्हइया॥

टुटि गये हार छूटि गयो अंचर भीजि गई अंगिया रे दइया।

या मग मांझन कर बरजोरी हैं गोकुल को लोग चवइया।

नागरिया धन नीति तिहारी धन्य खेलि तू धन्य कन्हैइया॥ २३॥

**॥ इकताल ॥**

अंखियां रंगराती जोबन मतबारी।

छुटि लटैं झुकि झूलत वेसरि केसरि खोरि संवारी॥

भौहैं कसौ हैं हंसों हैं सेओं ठनिकैं बिच दामिन कौंधें।

अंचर छोड़ि चलैं गज ज्यौं दरसैं अंगिया रंग सौंधें॥

होरी मैं रूप ठगोरी भरी मुसकाय करी चित चोरी।

सांवरे की लगवारि बड़ी ठगवारि हैं गवारनि गोरी॥

फागभरी अनुराग भरी निकसैं जब घूंघट मारी।

नागरिया लखि लाग्यो फिरैं रंग मोहन रिझवारी॥ २३॥

**॥ आन कवि कृत तिताल ॥**

हो राज थे छोड़ो जी किशोरी जी रो छेहडो।

राखो राखो मन में चार बिचारि।

थे फागुण रस बावला ऐ लाज भरी सुकुंवारि॥

कांई हुवो होली हुवां सुण हँससी सोह संसारि।

थे गायां का ग्वालिया छौ अर ऐछैं राज कुंवारि॥

थांहरी यांहरी नहीं छैं बराबरी जाय परसो दूजीनारि।

रसिकबिहारी थांरो नांव छै कांई खेलो ख्याल गवारि॥ २४॥

**॥ तिताल ॥**

अणी कोई सांवला खेलनवाल।

सोहनां मुख सोभा जगमगियां लगियां रंग गुलाल।

कर्नफूल पर फूल जुलफ बिच हाल हाल करैं हाल।

नागरिया मेरे आकैं अदब सौं लैं आंवदा हाथ रुमाल॥ २५॥



**॥ इकताल ॥**

संइयो मैंनूं कांन्ह बुलावैं।

चढ़िकैं अपनी ऊंची अटारी नैंनौं दी सैन चलावैं।

केसरिदा रंगभीना चोला होरी दा छैल कहावैं

नागरीदास कहा कहौं री लखि मैंडा भी जी ललचावैं॥ २६॥

**॥ इकताल ॥**

खेलिहौं नहीं होरी हौं होरी री॥

लैं उरसौं मसकी कसमैं ससकी भरिना कस कोरी कीनी हैं बरजोरी॥

छैल कैं हाथ परी छल सौं नहिं छूटि सकी विचखोरी रस सिंधु झकोरी॥

बे बहो छंद भरे गुन आगर नागर हौं मति भोरी की अधरा रस चोरी॥ २७॥

**॥ इकताल ॥**

नंद कुंवर देखिकैं कछु भी न रही ताब। छूटि गया घूंघट पट हुई बेहिजाब।

जोबन मद होस हुस्न जादु हैं निगाह। लियैं पिचकारी दस्त अजब खुस अदाह।

इस्क बाज होलीबाज सांवला छछंद। दुदांमी इकतई पोसे बंसती फैंटा कजबंद।

तिसपै चलैं मूठ उसकी सो हो मस्त हाल। गोया पढि पढिकैं सिर डालता गुलाल।

मुझकौं कछु किया हैं उसनैं खेलि बीच आय। पाय परौं हाय वही नागर दिखलाय॥ २८॥

**॥ तिताल ॥**

हुस्न तमासे का हैं अजायब होली का खिलवार।

पिचकारी दरदस्त अजायब सजि फैंठा कजदार।

रंग सांवला जर्द दुपट्टा उर मर वारिदाहार।

हैं नागर स्यांमा साहिब के यह फरमांबरदार॥ २९॥

**॥ इकताल ॥**

दइयारे सब लोग जागैं। धरकैं हियरा तनकां पैं जिय डरअति लागैं।

मकर चांदनी रात हैं मोहि आवत लाजैं। सेझ मोहन की न चढ़ौं पायल मोरी बाजैं।

फाग रंगीली रैंन दई मोहि मैंन संतावैं। नागर सुन्दर स्यांम कौं अधरा रस भावैं॥ ३०॥

**॥ इकताल ॥**

रसिया तेरे कारनैं नैंननि भई हौं कनौंडी।

अपनैं स्वारथ रीति मगन तू प्रीति रीति अति औंडी।
तैंसोई फागन तैंसीये ब्रज की चार चुवायनि भौंडी।
नागर घर घर डगर बगर में बजी नेह की डौंडी॥ ३१॥

॥ तिताल॥

खेलि न जानैं नयो होरी को खिलवार।
उर रानों ही गरैं परत नहिं समझत चार बिचार।
पुन्य बड़न कैं सीख्यो यह ढंग या नीत की हौं बलिहार।
नागर वा घर जाहु चल्यो किन आतुर निलज उतार॥ ३२॥

॥ इकताल॥

चूरियां झनकैं गोरी बाहु बहुरियां।
बाजूबंद फफूंदनि फुंदवा अंगिया गडरही गाढ़ी मऊरिया।
आजारी मिलि सांवरे सों गोरी डारि दैंरी दिवरानी लहुरिया।
नागरिया पिय ठाढ़े गरी दुरी भई जात हैं पीरी पहुरियां॥ ३३॥

॥ तिताल॥

तू सुंनि मोहन बैंन बजावैं। मनमोहन बैंन बजावैं॥
रितु फाग लाग सरसांवहीं। मुख नांव तिहारो गांवहीं।
दूती धुनि सैंन बुलांवहीं। चल बेग छबीली अब नहीं भवन सुहावैं॥ १॥
सुनि चली चपल जब भामिनीं। होरी अभिसारिका कामिनीं।
बिच खिली बिमल मधु जामिनीं। चलि मिली स्याम घन दामिनीं।
अति रस बरस्यो हैं फाग चैत मिलि गावैं॥ २॥
बिच रची रासमंडल होरी। मिल बाहु निबाहु लता जोरी।
पिय स्याम सुघर राधा गोरी। गति लैं लैं लेपति मुख रोरी।
अति रंग बढ्यो री कहत कह्यो नहिं आवैं॥ ३॥
बज मृदुल मुरज टंकार तार। किंकिनि नूपुर झं झं झंकार
चंचल कल कुंडल अलकहार छुटि छुटि अंचर गये खुलेबार।
मनु तिय छबि बेली पवन लगैं डिगुलावैं॥ ४॥
छिरकें केसर कुमकुमा संग। चिउटे पट उघरे अंग अंग।



लखि मुरछि गिर्‌यो आतुर अनंग। रस रास फाग मिलि बढ्यो रंग।
थकित रह्यो चंद नभ पवन गवन बिसरावैं॥ ५॥
उड़ि गुलाल बन भई घुमडनि पलटित गति लैं लैं भरि रंगनि
बढ़ काम तरंगन पिय संगनि लखि गउर स्याम उरझे अंग अंगनि।
नैंननि गति भूली बैंननि मैंन समावैं॥ ६॥
नित दंपति संपति सुख सुहाग नित रास रहसि अरु नित फाग।
नित बृन्दाबन आनंद बाग नित केल कतूहल हिय अनुराग।
नागरिय नागर इहिं सुख समैं बितावैं॥ ७॥ ३४॥

॥ इकताल॥

रंग हो हो हो हो होरी उल्हयो फाग सुखलाग संग।
बेग आव सखी दौरि दौरि कैं देखि अटा चढ़ि कैं उतंग॥
सुनियैं गान गहिरी धुनि आवत बरसानें की ओर आज।
या नन्दगांव के सांवरे ऊपर गउर घटा आई गाज॥
हैं बिच कुंवरि किसोरी गोरी दामिन सी द्युति चमचमात।
प्रीत पवन इतप्रेरि चलाई उमड़ी आवत उत्तर कौं आत॥
नंदी सुरतैं हैं आनि रगमगी बन उपबननि सरनि कैं कूल।
पीत रंग सब रंगी देखियत सरसौं सी रही फूल फूल॥
गली गली मैं अली रली सब समध्यानें की गारि गाय।
रुकी डगर महरांवनैं मैं आनंद कुलाहल रह्यौ छाय॥
पहुंचि आय राजमंदिर मैं जसुमति भीतरि लई गेह।
उड़ि गुलाल छूटि पिचकारी बरसि पर्‌यो अति मेह॥
मिलि मिलि देत झमकि झूमक तहां बाजत चंग मुहचंग उपंग।
छूटत बसन हार उर टूटति रावरि मैं मचि पर्‌यो रंग।
दुरे लाल लखि लये सबनि मिलि पकरे तोरि किंवार।
भई मनोहर भीर भुजन बिच भरि लाई अंकवारि नारि।
नंद जसोदा हसत दुरि ठाढ़े देखि रहे रस रीत प्रीत।
सुन्दर कुंवर लाडिलो नागर फगुवा मैं लैं गई जीत॥ ३५॥

## ॥ इकताल ॥

कहा करौं रे कहा करां दइया दिन कठिन बिहाय। जबतैं लग्यो हैं मास फागुन आय।
भरन न दै नंनदिया पनघट पानी। नाहर सी बेठी रहैं बाहर जिठांनी॥
हौं ही एक रूपवंत वैस किसोरी। ओरहु न कोऊ कहा गोकुल मैं गोरी॥
बंसी डफ सुनि सुनि हियो अकुलावैं। मेरे घर आस पास छैल मंडरावैं॥
नागरि कुंवर आयो तोरि किंवार। होरी के खेल मिसि मिल्यो लगवार॥ ३६॥

## ॥ इकताल ॥

होरी के खेल मैं गुमान कैंसो गुमान गुमान की ठोर।
को रांनां को रंक फाग मैं जहां प्रेम की रोर॥
हिलग जहां नहीं बिलगि मांनि बोलैं अबीर फिरि ओर।
नागरिदास निसंक स्यांम कौं भरहू कुंवरि दौरि दौरि॥ ३६॥

## ॥ इकताल ॥

दइया तें कन्हइया कर डारीहों नक बानी कर रे।
आछैं हाथ धोय पाछैं पर्‌यो नैंक दईतैं डर रे।
चुरिया फोर गढ़ायो कंकन अंकनि भर भर रे।
यह नागरता होरी खेलि की सीख्यो कोनैं घर रे॥ ३७॥

## रागगौरी ॥ तिताल ॥

मनिहारनि बनि स्यांम देत फिरैं फेरियां। संग लीनैं वहो रग चुरिन की ढेरियां।
नैंन लगे जिंहिं गली सु फिर फिर बोलहीं। पीय बचन पहिचानं प्रिया चित डोलहीं।
भई आतुरी चित रही न संम्हारनी। भींतर लई बोलाय नवल मनिहारनीं।
लालचुरी दुहुं और स्याम चुरियां लियैं। कंपत रोम कटया तकर निज बकर छियैं।
चुनि चुनि छोटी चतुरि चांप पहिरातरी। कसि कस सिकसत रात सुकुच मुसकातरी।
थकी दीठ मैं दीठ बिथा मन मथ बढ़ी। समझि तबैं यह भेदि सखी ढिगतैं कढ़ी।
बलया कर की रीझि दैं न चित में ठई। देखिइ कौंसी बेर अंक माला दई।
भये मगन सुख सिंधु अधर रस पान मैं। तन मन सुरझत नांहि रंग उरझांन मैं।
वोहो भांतिनि चित चोर करत चित चोरियां। लाल रूप आसक्ति भई ब्रज गोरियां।
करत मनोरथ सांच सबनि के फाग मैं। नागरिया नंदलाल भरे अनुराग मैं॥ ३८॥



## ॥ राग ॥

दिठा ग्वार गारि सुर मिठा गावत इस्क लपेटा।
मद अलसौंही नैंन सैंन दैं मारत मैंन चपेटा।
पिय गोरीदा छैल होरीदा सुंदर अंग अंगेटा।
नागरीदास दिवांनी हुइयां देखि अजब महरेटा॥

## ॥ तिताल ॥

नैंना सोहनैं रंग खुमार॥
॥ दोहा॥ काम केलिरस रगमगी सब निस जगी बिहार।
हम जानी मनमोहनां तेरो हैं लंगर लगवार॥ १॥
आवैं आधी रात उठि अगवारैं पिछवार।
तूब कंवल अलि सांवरो रस लंपट रिझवार॥ २॥
रहे तुटेही हार उर छुटे छबीलेवार।
पीक कपोलनि ही रहैं सब तन सिथिल सिंगार॥ ३॥
हाथ परी तू छैंलकैं नागरिया सुकुंवारि।
तन झकझोरी सी रहैं रंगहोरी की यार॥ ४॥

## ॥ तिताल ॥

हौं जमुनाजल भरन गई तहां दुहुं दिसरी द्रुम गहबर गैंल।
निकस्यो हैं तहां आय अचानक रंगभीनौं होरी को छैंल।
चलनि सकी लखि के पग कंपत रहि जु गई तब हौं सिरनाय।
मद गजराज की चाल लाल धुकि गहि लीयोरी अंचर मुसकाय।
तब घूंघट पट छूटिगयो हैं निलज रहे नैंना मुखचाहि।
मींडत दुहुंनि कपोल गुलालनि आयो अति उर मदन उमाहि।
लई भुजनि कैं बीच सखी कसि कंपत सीत सिथिल भयो गात।
धीरज हरी हर्‌यो मन मेरो कहा कहों ओर लाज की बात।
गुरजन लई कछु बाति जांनि अब निकस न देत भवन कैं वार।
अति ब्याकुल जिय मरत मसोसनि सुनि सुनि मुरली डफ धुंकार।
लाजसौं काज सर्‌यो नहिं मेरो स्यांम अंग ह्वै हौं बनमाल।
जिहिं तिहिं बिधि लैं चलि नागरिया जहां होरी खेलत नंदलाल॥ ४२॥

## ॥ तिताल ॥

पनियां न जाउंरी आगैं मचि रह्यो ख्यालरी। बीच बटपारो ठाढ़ो मदन गुपालरी।
तैसेई उपाधी हैं री निलज संगु बालरी। हाथनि मैं पिचकारी फैदनि गुलालरी।
वहि देखि आवैं छैंला मदगज चालरी। अब कित जाउंरी दइया दुरि इहिं कालरी।
नागरिया कंपैं पग होत हैं बिहालरी। मेरो रूप भयो मेरे जिय को जंजालरी ॥ ४३ ॥

## ॥ इकताल ॥

सुंदर सांवरी कोउ आइ हैं नइनियां आज।
बैंदी दियें जराय की हैं लिये द्रगनि मैं लाज।
घूंघट झीनौं चीर को पहिरैं हार हमेलि।
अंग जोति जगमग रही मानूं रची नीलमनि वेलि।
झवा महाबर उबटनौं लियैं धरत मंद गति पांव।
रूप अचंभो ह्वै रह्यो वाकैं कौतुक लाग्यो गांव।
समझि नैंन की सैंन मैं घर लई विसाखा बोलि।
नायन नायो सीस पायनि कौं कह्यो भेद सब खोलि।
लैं आई जब निकट कुंवरि रही निरखि रूप अभिराम।
नागरिया ढिग बसी महल मैं पूरे मन के काम ॥ ४ ॥

## ॥ इकताल ॥

अरी देखिये मुरली वाला प्रानजान।
फैंटा जरद अमैंठा तिसपर तुरराना फरवांन।
जुल्फ के पैच परे लखि आंनन पांन चवांन।
भौं हैं कसौं हैं चस्म छकौं हैं मारत हैं मुसकान।
दिलकूं भावत गैंद चलावत गावत होरी तांन।
ढोरी लगी दिल वोरी भई मन मोहन पर कुरबान।
होय सदा हैं अंग अदा हैं देखि फिदा हैं ज्यान।
किया घर घर इस्क उजागर नागर स्याम सुजान ॥ ४५ ॥

## ॥ राग ईमन इकताल ॥

इस होरी खेलि बीच इतनी इजूतराबी क्या।



टुकरो कचलो दिल कौं इहां रुकता नहि क्या।
छूवो मत देखते हैं निजर बाज लोग।
जाहिर जहांन बीच इश्क करना है क्या।
आपही गुलाल साथ आते हो क्या।
लिपटेही जाते हो क्याजी यह क्या।
मस्त हाल साहिब हो तुम कौन ही नंग।
नागर पियारे जान देखो इतना भी क्या ॥ ४६ ॥

## राग अडानौ ॥ इकताल ॥

गांस गंसी लिये बातैं छिपाइये इस्क न गाईये गाइये होलियां।
गैंद बहानैं न बीरा चलाइयैं। सूधैं गुलाल चलाइयैं झोलियां।
लोग बुरे चतुरे लखियांवैं गेदावैं रहो दिल प्रीत कलोलियां।
पायं परौं जिन डरो पिय नागर हाय करो मति बोलियां ठोलियां ॥ ४७ ॥

## ॥ तिताल ॥

भरि भाजत इहिं ओर सबनि मिलि गहि लीनौं चित्त चोर।
उरझि गयो पिय बाहुल तन बिच परे प्रेम झक झोर।
अप अपनौं मन भायो करलई पिचकारी करन मरोर।
नागरिया लैं आई प्यारी ढिग बांधि पीत पट छोर ॥ ४८ ॥

## ॥ इकताल ॥

जात कितैं कतरायैं लाल रंग होरी हैं।
ह्वै रहे या ब्रजबीच दुबहियां आई नवल किशोरी हैं।
ठाढे रहो अब बचै बहुत दिन कहा चाचर मैं चोरी है।
नागर छैल छछंद छली तुम मैं करिये सो थोरी हैं ॥ ४९ ॥

## ॥ राग बिहागरो इकताल ॥

रंग हो हो हो होरी खेलैं लाडिली वृषभानकी।
दामिन अंगरूप अभिरामिनि स्वांमिनि तिय रसखानकी।
मास माघ सुदिराका निस मुख प्रथम खेलि आरंभ हैं।
होरी डांडो रुप्यो ग्वैंरवैं मनौं मदन रनखंभ हैं।

बाजत डफ दुंदभि सहनाई गोमुख आनक भेर।
सरसानौं फाग सुख औसर बरसांनौं तिहिं बेर।
नवसत अंग सिंगार साजि जे रंग भरी खिलवारि हो।
अप अपनैं भवननि तें निकसीं बिच वृषभांनि कुंवारि हों।
कुंवरि किशोरीजू की सोभा लखि सबही तृणतोरैं।
सूरजमुखी झुकि जात फिर कंवल मनौं चौंरढोरै।
बाबा ओ कीरति जूता छिनवारे रतन अमोल हैं।
खेलन चली राजमन्दिर तें कुण्डल हार सलोल हैं।
देखी प्रिया जबैं आवत उत मनमोहन अति सुख बनैं।
सावधांन भये गोप सिमटि सब बाजि उठे बाजे घनैं।
दुहुं दिसि गारि धमारिन को सुर मिलि मंडप गयो छायकैं।
शिव समाधि छुटि गई श्रवनि सुंनि मुनि मन रहे लुभाय कैं।
उत नंदनंदन रसिक सिरोमनि इत राधा अभिरामिनी।
उड़त अबीर गुलाल गगन चढ़ि भई दिवस तैं जामिनी।
ब्रजनारी पिचकारी धारादैं रोकी अंचर पांनकैं।
मुरि मुरि भरनि बचावनि छबिसौं को करि सकैं बखानकैं।
रूप लालची लाल बालकौं भरत हैं नियरैं आयकैं।
गहि लीनैं घनस्यांम सबनि मिलि दामिनी सी लपटाय कैं।
अंग परसि मैं रंग-बढ्यों दोउ परिरंभनि उरझानैं।
नागरिया जब फिरी जीतिकैं बजत चले सहदानैं॥ ५०॥

**॥ तिताल॥**

रंग हो हो हो होरी मची।
अगनित छुटत करन पिचकारी दुहुं दिशि चमकत रतनखची।
लाल गुलाल लयो मुख मीडनि मृगनैंननि की भौंह नची।
लिपटि गई घनस्याम लाल सौं चमकि चमकि चपला ललची।
दुरत गहत फिर करत मनोरथ दंपति अंखियां पीक रची।
नागरीदास मिलनि झकझोरनि हो हो बोलनि कोउ न बची॥ ५१॥



**॥ इकताल॥**

होरी खेलि ठाढ़े दोऊ केसरि की कीच बीच मोती बेशुमार परे हार निरलक मैं।
रंगनि बसनि भीजे अंगनि लपटि रहे सरके सिंगार देखि बिसरी पलक मैं।
स्यामा के सम्हारत हैं नागरिया भूषन कौं त्यौंही सखी स्याम की सु आनन्द ललक मैं।
लालन के बेसुरी सु पाई प्यारी बेसरि मैं प्यारी करनफूल पायो लालकी अलक मैं॥ ५२॥

**॥ तिताल॥**

चले मिलि भाव ते रस अैंन।
खेलि भाग भुज अंस मेलि दोऊ मत्त द्विरद गति गैंन।
सोहत बसन गुलाल सगमगे अरु आलस बस नैंन।
नागरी दास दोऊन मिलि कीनों नवनिकुंज सुख सैंन॥ ५३॥

**॥ राग परज इकताल॥**

आजु होरी खेलत सांवरो।
पिचकारनि धारनि बूका बंदन उड़ि छाय रह्यो नंद गांवरो।
निरखि मदन जोरी रंग वोरी आय गिर्‌यो तन तावरो।
नागरी दास चतुर हसि डारत चितवनि में उर झांवरो॥ ५४॥

**॥ तिताल॥**

होरी खेलैं मोहनी मोहन संग।
धांवनि भरनि बचावनि री रह्यो चाचर में मचिरंग।
बीननि परनि प्रबीन मिलावैं नूपुर मधुर मृदंग।
गावत गारि धमारि नारि नव निर्त्तत स्यांम सुधंग।
रंग भरे लपटात भुजनि बिच रुकत न प्रेम उमंग।
नागरीदास भई अंखियनि की निरखि निरखि गति पंग॥ ५४॥

**॥ तिताला॥**

रंगीली गलिन बिच हो हो होरी।
इत नंद नंदन रसिक लाडिलो उत ब्रजभान किसोरी।
उड़त गुलाल कछू नहिं सूझत झक झोरा झकझोरी।
नागरी दास परसपर ढारत भर भर कनक कमोरी॥ ५५॥

**॥ इकताल ॥**

गले बिच इस्क पया जंजाल।
क्यौं मैं गई दिवानी वेखनि नंद नंदन दा ख्याल।
मुह गुलाल पूछण नूं मेरे लाया रिंद रुमाल।
नागरीदास हुई उस छिणतैं सब सुखदी हटनाल॥ ५६॥

**॥ तिलाल ॥**

अरी ब्रज मंडल परम सुहावनौं इहां सदा सहज रस रीत।
नंद गांव बरसानैं की अब वो हो विधि बाढ़त प्रीत।
उतैं कुंवर नंद राय को इतश्री ब्रजभान कुमारि।
लगन लाज उरझौं हैं दोउ नाहि सकत निरवारि।
गनत रहत दिन फाग के यह आयो सो फाग।
ठौर ठौर डफ बाजही अब दबत नही अनुराग।
आज खेलि आरंभ हैं उमग्यो हियैं हुलास।
ये इत उततैं आये दोउ बिच संकेत निवास।
गांन रंग गह गड मच्यो ब्रज रह्यो कुलाहल छाय।
उड़त अबीर गुलाल सौं नभ दिन मनि नहिं दरसाय।
छैल छली छिप सांवरो फिर चल्यो प्रिया भरि भाजि।
तब जुवतनि मिलि गहि लयो इत उठी दुंदभी बाजि ।
रोकि दिये बिच कुंच कैं रही ढिग श्यामा मीति।
नागरिया इहि बिधि रहो नित बरसाने की जीति॥ ५७॥

**॥ तिताल ॥**

रगवगे बसन गुलाल रंग दोउ छबि सौं लगि लपटाय खरे।
प्रतिबिंबित तन मौज होज पर छुटत फंवारे रंग भरे।
कुंजमहल रस फाग मनोहर रूप रीझि भीजि उघरे।
नागरि नागर बढ़न चंद मैं द्रुग चकोर फिर फिरि न टरे॥ ५८॥

**॥ इकताल ॥**

दुहुंनि मैं आजु रह सिरस फाग।



ताल तांन बंधांन गांनधुनि परज गरजि रह्यो राग।
बीन रवाब मृदंग मुरज मिलि चल्यो झमकि झंकार।
सखिन सहित दंपति गति लैं लैं चलि छोड़त पिचकार।
दुहुं घांतैं आवनि उलटनि की छबि बरनी नहिं आवैं।
अलबेली सहचरि चाचर मैं चह चरि चहूल मचावैं।
नूपुरनाद सुनत बिथकित रहे कोकिल मधुप मराल।
उड़त गुलाल गगन आंगन सब हरित कुंज मई लाल।
हुई अरुन सगबगे बसन तन रगमगे नेह नबीनैं।
लटपटाय लपटानैं तिंहिं छिन गउरश्याम रंग भीनैं।
सिथल अलक टूटी उर माला गर बहियां मुसकाते।
नागरिया हिय बसे महल में होरी के मद माते॥

**॥ राग खंभायची तिताल ॥**

आजु फागसुख सरसांनौं बरसांनौं शोभादेत। आये श्रीवृषभानजू कैं गोपराज।
सुंदर सिंगारे सब बीच बलराम श्याम। सोहैं संग रंग भर्यो कुंवर समाज।
कीरति जशोदा मिलि जारिन मैं झाकैं। झूमि मिले वृजराजा दोउ उर लपटान।
होत रस रीतिन के विविध बिनोद तहां। धनधन बरखैं महिंद्र वावा वृषभान।
ठौर २ बाजैं डफ गावैं ब्रजनारि गारि। गहि महि भीर भई उमग्यो हुलास।
होरी को त्योहार फिरि मिल्यो समधानौं । तामें आनंद कुलाहल हवैं बीच रनिबास॥
नंद को कुंवर वृषभान गोद लियैं बैठे। लिये नन्द वृषभान की कुमारि।
दुहुनि कैं हाथ दैं गुलालहि खिलाये जब। नागरिया बहुतनि दीनैं प्रांन वारि॥ ६०॥

**॥ आन कवि कृत ॥ तिताल ॥**

रह्यो रंग होली सरसाय।
एकण दिसि प्यारी हुई हुवा एकण दिस पिय आय॥
गावैं सखि सुहावणी साथे रुंज मुरज सोहैं साज।
कुंज सदनरें आंगणैं रह्यो मदन झुझाउ बाज॥
फागुण समैं सुहावणों खेलैं नवल रंगीला खेल।
उडी गुलाल घुमडी घणों वहि चली धरणी रंग रेल।

लूंम झुमि लपटाइयां दोन्यों मुख माण्डण रे ख्याल।
रसिक बिहारनि लाडिली पिय रसिक बिहारी लाल॥ ६१॥

**॥ राग सोरठ ॥**

कान्हा निलज गारि जिन दैरें।
हौं हारी हाहा अब तोसों नैंक लाज मुख लैं रे।
अब या बगर भूलि नहिं ऐहौं सौंह बबा की हैं रे।
नागरिया नव बधू बिगोई होरी मांझ सबैं रे॥ ६२॥

**॥ इकताल ॥**

हौं पिय नैंननि कीनी बोरी कहा कहौं कलन परत दिनरतियां। सोवत जागत चलत फिरत अब मोहि तलफतही बीतत छिन छिन लगी इहिं मुख की ढोरी। इन नैंननि कैं हाथ बिकानी देखनिकौं उठिदोरी। नागरिया घर बरजि तरजि रही हौं न रही जिय लरजि डारी तुम होरी मैं रूप ठगोरी॥ ६३॥

**॥ इकताल ॥**

मोहनवारी बसि कीजैं।
हसि लीजैं होरी मैं हो हरि ऐसी गारि क्यों दीजैं॥
हा हा पाय परत हौं प्रीतम मो जिय लाज न भीजैं।
नागर नवल बिहारी प्यारे जो चाहैं सौं लीजैं॥ ६३॥

**॥ तिताल ॥**

प्यारी जू के खुलि गये सौंधैं भीनैं वार।
देखि सखि यह रीत अनोखी बंधि गयो मन रिझवार।
झूल रह्यो वैंना ग्रीवा ढिग टूटि रहे उर हार।
नागरिया यह छबि हियें बसि बिच मनमथ रंगबिहार॥ ६५॥

**॥ इकताल ॥**

बोलैं रंग होरी होरी होरी ढोलैं रस मत्त गोप वृंद।
ता मधि मधिनायक वृजचंद नंद नंद।
निकसत जहां जहां होज केसरि की कीच।
करत हैं कुलाहल वृज बीथिन कैं बीच॥ १॥



भरतहैं निसंक जाय तोरि कैं किवार।
छांड़त मन भायो करि फाग मग्न ग्वार।
सुनि सुनि डफ दुंदुभि बिच मुरलिका रसाल।
झुंडनि मिलि झुमि झूमि आई वृज बाल।
गाइ उठि गारि गरजि रूप की घटा।
उड़ि गुलाल दुहुं ओर अटिगई अटा॥ २॥
होत बिबिध खेलि बढ़्यो सिंधु रस हिलोर।
गिरि गिरि तहां परत गलिन मांझ हार डोर।
नीकैं नहिं सकत लखि जिनके मुख मयंक।
तिनकौं लाल धूंधिर मैं निसंक भरत अंक॥ ३॥
छूटि छूटि अंचरि गये खूट खूट बार।
हार टूट पगनि परत मानत नहीं हार।
राधे सैंन पाय सिमटि धाई सब बाल।
कहि होहो होरी होरी पकरे नंदलाल॥ ४॥
खैंचत इक किंकिनी कटि फिरत संग संग।
रोरी लपटात एक लपटत अंगअंग।
गउरस्यांम उरझनि छबि बढ्यौ रंग रंग।
नागरिया निरखि नैंन भये पंग पंग ५॥ ६६॥

**॥ इकताल ॥**

रसफाग आजु बाज डफ दुंदभि सहनाई। कलगार निध मारनि धुनि गान रंग छाई। सब खेलनि को उल्हये उत कंठत मन नैनां। वोहो साजि कैं चलीहैं मानौं अनंगसैंना। उत मोहनां रंगीलो इत राधे रंगवोरी। वृज बीथनि परसपर मांची हैं रंग होरी। पिचकारी रंगधारा वोहो छूटत सुहाई। घुंमड़ि गुलाल धूंधरो कछु देत ना दिखाई। भरि भाजत पकरि लैं सिर नावत कारोरी। दुहूं ओर हवैं रही हैं झकझोरा झकझोरी। पट अंचर उसरिगे उर हार डोर टूटे। झुकि झूलत हैं वैंना बरबार पीठ छूटे। तिय दामिनी न घेरयो घनस्यांम रंगभीनौं। कोऊ लैं गई हैं बंसी पट पीत खैंचि लीनौं। बनमाला कौं उतारत वनमाल होत प्यारी। यह छबि नागरिया टरैं न जियसौं टारी॥ ६७॥

**आन कवि कृत ॥ तिताल ॥**

बिच बृज नार्यां रैं झुंड राधा रूप हैं रूडो।
ग्रीव झुकायां झूमक नाचैं सीस कसारो जूडो।
केसरि रंग भीजी साड़ी में झलक रह्यो छें चूडो।
देखि छक्या पिय रसिक बिहारी रह्या धीर धर कूंडो॥ ६८॥

**॥ इकताल ॥**

ब्रज फागुन आज सुहायो। आनंद रूप धरिआयो।
हुल्लास हिये न समावैं। नट नागरि धमार गावैं।
इत बधू बृंद सुखरासी। उतरंग भरे वृज बासी॥
॥ दोहा॥ ब्रजबासी रहे रंग भरि मोहन कैं अनुराग।
जुवति जुत्थ सनमुख चले मुदित मचावत फाग॥ १॥
मुदित ह्वैं फाग मचावैं। डफ कुंज गुंजरित आवैं।
भीनैं रंग सौभाति भली हैं। मनु काम की फौज चली हैं।
सब करत कतूहल ग्वाला। मधि नायक नंद के लाला॥ २॥
॥ दोहा॥ मधिनायक नंदलाल उत इत राधे सुकुवारि।
संग छिपा करि कैं मनौं उडगनि सब ब्रजनारि।
उडगन सब वृजनारी। उमडी आवैं गावत गारी।
मुखतैं कछू घूंघट टारे। सो हैं सुंदरश्याम निहारे।
चली अछनि अलछ कटाछै। मांच्यो नैंन खेलि अति आछैं॥
॥ दोहा॥ नैंन खेलि आछेंमच्यो दुहुं दिशि चतुर खिलार।
रहे जु इत उत रीझि कैं गउर श्याम रिझवार॥ ३॥
रिझबार श्याम अरु गोरी। महा मची परस्पर होरी।
पिचकारिन को झरलायो। घन सांवन सौं दरसायो।
भयो उड़ि गुलाल अंधियारो। बिच झलकत लाल टिपारो॥
॥ दोहा॥ लाल टिपारो झलकहीं धूंधरि मांझ गुलाल॥
तिहिं सुध धावत भरन मन हरन तरुन ब्रजबाल॥ ४॥
मन हरनि तरुनि वृजबाला॥ मनु खलति दांमिन माला॥



इक भरत अंक घनश्यामैं इक खचत मुक्ता दामैं।
इक पौंछति हैं मुख पानन। इक लेत उगार हिं आनन॥
॥ दोहा॥ आंनन लेत उगार इक घायल बांनन मैंन।
इत उत दोऊ रस पगे खगे नैंन बिच नैंन॥ ५॥
खगे नैंन बिच नैंना रंग कह्यो परत नहिं बैंना॥
टूटे हार डोर मनि माला। छूटे छबीले बार बिसाला।
फूटि चुरियानी वी खटी सी ठाढ़ी मैंन की सैन लुटी सी ।
॥ दोहा॥ लुटी मैन की सैन सी थकी खेलि रसफाग।
जीति लाल कौं लैं चली भरी महा अनुराग॥ ६॥
अनुराग भरी रंग मांही। दई गउर स्याम गर बांहीं॥
सौंहैं फाग खलि गठ जोरी। मनमोहन संग किसोरी॥
आये काम के कुंज निवासनि। सुख दीनों नागरी दासनि॥ ७॥

**आन कवि कृत ॥ राग ॥**

मन मोहन सोहन स्यांम नंद ढटोनां री।
बिन देख पल कल न परत हैं मेरो जीव लगो नां री।
होरी मैं मोपैं ठगोरी सी डारीहैं रिझई रीझि रिझोनां री।
खेलौंगी मिलि रसिक बिहारी सौं वा बिन खेल अलोनां री ॥ ६९॥

**राग धनाश्री ॥ इकताल ॥**

तू ही कह कैंसें करूं मेरो रूप दुराऊं किहिं भांत री।
घूंघट मैं नहिं दवत निगोडी मेरे गउर बदन की कांत री।
निकस न सकौं भौंन तैं बाहर कौंन बन्यौं यह जोग री।
हौं सुन्दर अरु या ब्रज के हैं रूप बावरे लोग री।
मोहन कुंवर लग्यों हैं आतुर अधिक अधीर री।
मोहि रूखी लखि नारि नाद रही जात नैंन भरि नीर री।
बिन होरी यह गति जासौं कैंसैं रहूं बचाय री।
अब नागर डफ फाग झुझाऊ मेरे सिर पर बाजे आय री॥ ७०॥

॥ राग ॥

मोहि होरी खलन दे नंदबारे सौं।
छांड़ि छाड़ि बहियां नंनदी यह उधम देत सांवरे सौं।
लै लांवन कसि लाग वंस गहि खेद आऊगी द्वारे सौं।
नागरिये अवतो टरिवा नहिं फागुन रंग अखारे सौं॥ ७१॥

॥ राग ॥

सबकी हैं चोट निसांने पैं।
नैंनां बांन छुटैं चहुधां तैं चंद्रिका बहर कबांने पैं।
लाखनि हू की भीर लगि रही मनलोचन परसांने पैं।
जा नागर पर यह ब्रज अटक्यो सो अटक्यो बरसांने पैं॥

आन कवि कृत ॥ राग नाइकी तिताल ॥

हो हो होरी कहि बौलैं सब वृजकी नारि।
नंद गांव बरसांनैं खेल मैं गावत इत उत रसकी गारि।
उड़त गुलाल अरुन भयो अंबर चलत रंग पिचकार की धारि।
रसिक विहारी भानदुलारी मधि नायक दोऊ खिलारि॥ ७२॥

आन कवि कृत ॥ इकताल ॥

ए जुनी कैं तुम जाहु चले जिन भरो मेरी सारी।
सुंनि स्यांम सुंनि स्यांम सो हैं तिहारी।
याही बेर छिनाय लैंहुं कर तैं पिचकारी।
अब कुछ मोपैं सुन्यौं चाहत हो गारी।
घर मैं ई सीखे ढंग रसिक बिहारी॥ ७३॥

॥ तिताला ॥

क्यों सतरानैं होरी हैं जू सुकुंवार।
गरैं परैं बिन न्यारो रहौं क्यौं तिहारे हियको हार।
पंडित मदन दयो मोकों यह फागुन मंत्र बिचार।
गार तिहारी प्यारी प्यारी लागत है ए नागरिया इहिं बार॥ ७४॥



राग नाइकी ॥ इकताल ॥

सांवरो खेल अटपटो खेलैं।
कौ खेलैं वाकैं संग सजनी बरवट धीठ भुजन भरि झेलैं।
मोही सौं कछु बैर पर्यौ तकि पिचकारी उर बिच पेलैं।
नागरी दास लाज हौं भीजौं बउडे नैंन नैन सौं मेलैं॥ ७५॥

॥ आन कवि कृत ॥

खासा चाकर रहस्यां जी म्हे राजरा चाकर रहस्यां राज कुंवर किसोरीजी।
फूल बिछाता जास्यां आगैं लियां पीत पटझोरी जी।
सूरज मुखा हाथ लियां फिरस्यां छांहि कियां मुख गोरी जी।
रसिक बिहारी रह्या टहल मैं होसी रंग रली भरि होरी जी॥ ७६॥

आन कवि कृत ॥ तिताल ॥

भीजैं म्हारी चूनरी हो नन्दलाल।
मति नाखौं केसर पिचकारी हा हा मदन गुपाल।
भीज बसन उघड्या सी अंग अंग कौंण निलज यह ख्याल।
रसिक बिहारी छैल निडर थे मानै तो जंजाल॥ ७७॥
॥ दोहा॥ मति टोको रोको मती। चला जाहु इण गैल॥
रंगभरो मति भांवता मतिजी मति पिय छैल॥ १॥
मनहीं में ए रहणद्यो इसा अटपटा फैल॥
रंग लग्यो छिपसी नहीं। मति जी मति पिय छैल॥ २॥
चुगल चबाइ गांव यो बुरा लोग अणखल॥
कांईं खलो ख्याल ए। मति जी मति पिय छैल॥ ३॥
रसिक बिहारी ख्याल ए। सीख्या भला अडैल॥
पगां पडां छां हाथ जी। मति जी मति पिय छैल॥ ४॥

॥ राग ॥

कन्हैया माई अंखियन होरी मचावैं।
अंखियन मैं अनुराग अरुनई अंखियनि रंग रचावैं॥
अंखियन मैं ललचाय लालची अंखियन मैं ललचावैं।

नागरीदास पैठ अंखियनि मैं फिर अंखियन तरसावैं॥

**राग झिंझोटी॥ राग झुरमटरा॥**

अनी हा हो नंदमहर दा नागर मैंन रंग भरै वरबटरा॥
क्यौं कर पनीयां जाउ सजनी राह ठाढो पनघटरा॥
हा हा करत भरत जूवतन कौं रसिकबिहारी नटरा॥

**आन कवि कृत॥ राग काफि॥**

कैं से जल जाउ मैं पनघट जाऊं।
होरी खेलत नन्द लाडिलोरी क्योंकर निवहन पाऊं।
वे तो निलज फाग मद माते हौं कुल वधू कहाऊं।
जो छुवैं अंचर रसिक बिहारी तो हुं धरती फार समाऊं॥७९॥

**राग काफी॥ आंन कबि कृत॥**

मनमोहन मेरी अंगियां रंग डारी रे।
या होरी में लाज रहैं क्युं सास नंणंद डर भारी रे।
तुमतो छैंल गैंल नित रोको हौं आऊं संग नारी रे।
काहे निडर धीट बटपारे हुवा रसिकबिहारी रे॥८०॥

**॥तिताल॥**

हरि सौं अटकी ग्वारनि गोरी लगि रही रूप सुरत चितडोरी।
मद मोकल गत ज्यों गोकुल मैं कुल संकुल गहि तोरी।
बिन दधि ही दधि बेचत बीथनि कछु सुधि रही न थोरी।
बिरह बिबस जानी न गई कहूं सिर तैं गिरत कमोरी।
नागरिया कौतिक सब लागी बालक बैस किसोरी।
खुलि गये बार सुधि न अंचर की फिरत प्रेम झकझोरी॥८१॥

**॥बादणो॥**

प्रथम बीज नैंननि बये मुसकिन अंकुर जागेरी।
नेह बेलि रही फूल कैं भर होरी फल लागेरी।
खेलोहो रंगीली होरी रंग सों॥१॥
प्रगट होन लगि यार यां ब्रजफाग अमल सरसानौं जू।
नागरिया उरझे नंदी सर सुबस बसो बरसानौं जू।



खलो हो रंगीली होरी रंगसौं॥२॥
बरसानैं नंदगांव मैं फाग खल ह्वैं गरवारी।
जीति रही ब्रज नागरी हारे हरि भरिवा भरवारी॥
खलो हो रंगीली होरी रंग सौं॥ ३॥ ८२॥

**अथ होरी॥ राग॥**

आजु खलत होरी सांवरो।
पिचकारनि धारनि बूका उठि छा रह्यो नंद गांव रो॥१॥
निरखि मदनजोरी रंग बोरी। आय गिर्‌यो तन तांवरो।
नागरी दास चतुर हसि डारत चितवनि मैं उरझावरो॥२॥

**॥राग॥**

होरी खले मोहनी मोहन संग।
धावनि भरन बचावन री रह्यो चाचरि में मचि रंग॥१॥
बीननि परन प्रबीन मिलावैं नूपुर मधुर मृदंग।
गावत गारि धमारि नारि नर्तत्त श्याम सुंधंग॥२॥
रंग भरे लपटात भुजन बिच रुकत न प्रेम उमंग।
नागरीदास भई अंखियन की निरखि निरखि गति पंग॥३॥

**॥राग॥**

रंग मोहन के अनुरागी।
लोचन कहा दुरावत हेली नवल रैंन मिलि जागी।
झलकत उर आनंद रंग तुव अंग अंग रसपागी।
या होरी मैं नागरिया दृग प्रीत श्याम सौं लागी॥३॥

**॥राग इमन॥**

मुरवारी बेसरि कान्ह सुधारी।
नैंन मिलाय सकुचि उरझावत उरझो बाल बिहारी।
उरझि गये बनमाल पीत किंकनि उरझी सारी।
नागरी दास फाग में उरझो हिये उरझो पिय प्यारी

॥इति श्री होरी उत्सव॥

## ॥ अथ फूल रचना॥

दोहा - फूले फूलनि स्वेत बिच। अलि बैठें मधु लैंन।
दंपति हित बृंदा बिपिन। धारे अगनित नैंन॥ १॥
रंग रंग भूषन फूल के। रहे फूल तन झूल॥
अंतर की बाहिर मनौं। प्रगडी अंग अंग फूल॥ २॥
बन फूल्यो फूल्यो जुमन। फूल वेस अभिराम।
सवैं करी फूलनि सफल। मिलिकैं गौरी स्याम॥ ३॥
फूले फूले लसत हैं। दोउ दिये गर बांह॥
लखि फूली नागर सखो। फूलो कुंजनि मांह॥ ४॥

## पद राग विहाग रो॥ ताल चपक॥

फूले वहो फूलनि सौं बृन्दाबन सोभादेत ता मैं फूली राका निस अति छबि छाई है॥
कुंज-२ फूल पुंज गुंजत मधुप मति फूलनि सौं मिली मंद पौन सिय राई हैं॥
सोहैं स्यांमा स्याम पैं सिंगार सजैं फूलनि के फूल भई हियें लखि फूली बनराई हैं
नागरिया दुहुं फूलनि सफल करि भुज धरि अंस फूल रहे सुखदाई हैं॥ १॥

## ॥ इकताल॥

फूलनि के वेष नव बसन बनाय लिये फूलन की क्यारी सी कुंवरि अलबेली हैं॥
फूलनि के भूषण बसन भांति फूलनि के फूल भरी छबि भरी हरीये न चेली हैं॥
अधर मधुर मकरंद लैंन फूलनि कौं फूल सौं अलिंद स्याम भुज निस केली हैं॥
फूली हैं जुन्हाई ता में फूल पंक बानिन निरख अकेली नागरि सहेली हैं॥ २॥

## ॥ ताल चपक॥

फूल महल मैं फूली जौन्हि जगमगी॥
तामैं फूले करैं केलि स्यांमां स्याम सुख झेलि फूलनि मरग जीवा सरगमगी॥
फूलनि की सैंनी पर राजत बिथुरी बैंनी फूली हैं बदन जोति मदन अगमगी॥
फूल सर अरसांनौं फूल रंग भी ये सोवे नागरिया मोहे मन रीझन डगमगी॥ ३॥

## ॥ राग परज तिताल॥

सखो आजु निरखि सुख पुंजरी। तहां मैं न गांन अलि गुंजरी।
दंपति हिय फूलनि लियैं है वहो फूलनि सौं फूली नव कुंजरी।



फूलनि की सैंनी पर दीन्हें गरबांहीं तन फूलन के सोहत सिंगार री।
फूलनि की फूही हलि बरख लता हैं होत तैसी फूल की बहत बयार री॥
फूली हैं जुन्हाई फिरि मदन दुहाइ होइ रहे आरति गउर श्याम गात री।
फूलनि सफल करी नागरिया आजु हो भई परम सलौंनी यह रात री॥ १॥

## राग खंमायची॥ ताल जात्रा॥

सखो देखि नवकुंज छबि पुंज कुसमित महा करत अलि गुंज मनु रुंज बाजैं॥
जौन्ह जग मग सुमन बात रगमग तहां मंदन डर डगमगत लाज भाजैं॥
कमल सयनीय पर कमल नयनी कमलनैंन चैंनी रंगे रंग रैंनी॥
लाल की अलक पर बाल फूलहि धर्‌यो फूल सौं लाल रची बाल बैंनी।
हार पिय करत मनुहार कर हार टूटै बिथुर बार छूटैं॥
सुरत सुख सुभट दोऊ लिपट हीं निपट द्रढ कंचुकी पट कपट ग्रंथ खटै॥
गउर सांवर अंग संग अति रंग भुव भंग द्रग द्रगनि मैं पंग कीनैं॥
मंद बतरानि मैं दामिनी रदन दुति छबि सदन बदन रसभीनैं॥
मधुर मधु अधर रस रसनां रसत हसत मुख हसततां बोल दैंहीं।
बंधे भुजपास सुभवास पुलकत अंग नागरीदास सुख रास लैंहीं॥ १॥

## राग केदारो॥ तिताल॥

फूल भरे पिय प्यारी फूलनि सों खलिहीं।
फूलनि के हार झूलत झवा फूलनि के फूलनि चलाय झुकि झेलिहीं॥
फूली हैं जुन्हइया कुंज फूल के बिछौनां तहां दोऊ चढ़े आनन्द अलेलिहीं।
नागरिया सखो सब फूल भरी आंखिनि मैं फूलनि की केलि हि सकेलिहीं॥ १॥

## ॥ इकताल॥

महकि रही फूलनि की नवल निकुंज सुबास।
फूलनि की रचना लखि ह्वै जहां महकि काम हुलास॥
फूलनिके भूषन दंपति तन चंद्रिका रही प्रकास।
नागरिया गावत केदारो तहां सखो सुघर आस पास॥ २॥

## राग अडानो ॥ इकताल ॥

एक गुलाब के फूलनि की पंखरी बिखरी सुख सेझ झकोरैं।
एक ही माला गुलाब के फूल की झूलि रही तन सांवरैं गोरैं।
एक गुलाब की सी सील सीकर रंग सौं अंग सुढारनि ढोरैं।
एक गुलाब के फूल कौं नागर सूधें दोउ मुख सों मुख जोरैं॥ १॥

## ॥ तिताल ॥

फूलनि की सैंनी पैं पिय प्यारी मदन रंग रग मगे।
फूलनि के हार मरगजे ह्वैं रहे उर गुलाब सगमगे।
कानन फूल लगि हे आनन परम प्रेम अग मगे।
फूली सखी नागरि के नैंन खुभे दंपति मैं फिरि न तहां तैं डग मगे॥ २॥

## ॥ तिताल ॥

फूल महल कालिन्दी कूलि।
फूल भरि द्रुम लता ललित जहां जल परसत झुकि झुलि।
फूलनि मैं फल मैंननि के दोऊ धरैं ग्रीव भुज मूलि।
नागरिया रागर रस बस सखी निरखि रही सुधि भूलि॥ ३॥

## आन कवि कृत ॥ राग खंभायची ॥ तिताल

कुंज पधारो रंग भरी रैंन।
रंग भरी दुलहनि रंग भरे पिय स्यांम सुन्दर सुख दैंन॥
रंग भरी सैंनीय रची जहां रंग भरयो उलहत मैंन।
रसिक बिहारी प्यारी मिलि दोऊ करो रंग सुख सैंन॥ १॥

## आन कवि कृत ॥ या पद की अलापचारी में दैनेए ॥

दोहा॥ गह गड साज समाज जुत अति सोभा उफनात चलि बिलसो मिलि सेज सुख मंगल गलती रात॥ १॥ रही मालती महकि तहां सेवक कोटि अनंग करौ मदन मनुहार मिलि सब रजनी रस रंग॥ २॥ चले दोऊ मिलि रस मसे मैंन रस मसे नैंन। प्रेम रस मसी ललित गति रंग रस मसी रैंन॥ ३॥ रसिक बिहारी सुखसदन आए रस सरसात॥ प्रेम बहुत थोरी निसा ह्वैं आयो परभात॥ ४॥



## आन कवि कृत ॥ तिताल ॥

सुरंगी सेजां रगमग रह्या सुख सैण।
हारां उरझा हार हियारा नैंणां उलझ्या नैंण।
मनमथ अमल अगाधा बोलैं आधा आधा बैंण।
रसिकबिहारी प्यारी मिलि आनंद मैं सोहत बितई छैं रैंण॥ १॥

॥ इति फूलरचना ॥

## ॥ अथ राम जनम बधाई ॥

दोहा॥ बड़ि गहगड गहमह मची घन से घुरत निसांन।
उदयाचल अवधेस पर प्रगटयो रघुकुल भांन॥ १॥
कोलाहल कल गान लखि आनंद चहुल उतंग।
इत छित के रहे छकि उतें छके विमानी खंग॥ २॥
जनम समय आये जिते बिप्र गुनी बृद्ध बाल।
लोकपाल से ते किसे दशरथ अवधि नृपाल॥ ३॥
बिधिनां तोसौं कहत हौं ए पुरवो मम आस।
बेग बढ़ो फूलो फलो जाचत नागरीदास॥ ४॥

## राग बिलावल ॥ ताल जात्रा ॥

उदधि अवधस अर्धंग प्राची दिसा प्रगटे श्री राकेस जग तम हरन।
गीत बहो बाद्य वेदादि आनंद रव पूरि रह्यो नाद सुजस कृत गगन मंडल धरन।
बरखैं नृप नगर पर अमर पहुपांजुली कनक मणि महल कैं सिखर सुषमां परन।
नागरीदास रघुबीर बर जनम दिन डरत बिध्वंस बिच बिश्व मंगल करन॥ १॥

## रागबिलावल ॥ ताल जात्रा ॥

अवधिपुर धांम आराम बिश्राम मुनि प्रगटे जहां राम अभिराम नयनं।
स्याम तन बरन मन हरन मंगल करन धरनि बिच उरनि निति अमल अयनं।
हंसके बंस मैं हंसही उदित अवतंस जग योग्य प्रसंस बयनं।
नागर रघुनंद सुरवृंद बरबंद सो सच्चिदानंद करैं पलना सयनं॥ २॥

## राग सारंग ॥ तिताल ॥

भयो हैं आज अवधि आनंद झर भीजि रहे नर नारि।

राम जन्म सुख सिंधु बढ्यो सब भूले अंग सम्हारि।
गांन निसान दांन मंगल धुनि छई भवनि प्रतिद्वारि।
नागर देव बिमांननि बिथकित आये लोग बिसारि॥ ३॥

**॥ इकताल॥**

राम जनम दशरथ घर बाजैं बधाई।
इतैं अवधि अरु उतैं अमरपुर दुहुंनि की मिलि धुंनि छाई।
खोजतरहे सदा शिव सुर मुनि जाकी रूप रसायन हाथ न आई।
नागर धन्य अयोध्या बासी सो घर बैठे निधि पाई॥ ४॥

**रागकाफी॥ तिताल॥**

चलिरी आजु हैं मंगल चार। राजा दशरथ कैं दरबार।
अति सुन्दर श्री राम स्यांम तन प्रगटे राजकुमार।
पावत गुनी दान वोह कंचन अरु मनि मुक्ता हार।
नागरीदास अमंगल मिटि गये मंगल लोक अपार॥ ५॥

**रागकाफी॥ तिताल॥**

अवधिपुर बाजत आज बधाई॥
भई नगर पर भीर बिमांनन प्रगट भये रघुराई।
बरखत कुसम धुजा कलसनि पर अति शोभा उफनाई।
नागरीदास गांन मंगल धुनि छाय रही सुखदाई॥ ६॥

इति श्री रामजनम उत्सव॥

**॥ अथ श्री महाप्रभुजी को उत्सव॥**

**॥ राग॥**

राधा कृष्ण गोवर्द्धन धारी॥ बृन्दाबन यमुना तटवारी॥
ललितादिक वल्लभ बिठलेस। मो मन करो कृपा आवेस॥ १॥
श्री नगेंद्र धर नागर नायक। निज बल्लभ रस पुष्ठि प्रदायक॥
तस्य कृपा ब्रज भक्त उपासी। सांवतेस बृन्दाबन बासी॥ २॥

**॥ राग॥**

प्रगटे हैं श्री बल्लभ देव।



वहो जीवन कैं भये सुगन सुभसों समुझो मैं भेव॥
गोकुल हरख हरख गिरराजहि हवैं ही ब्रज बई भवसुख सेव।
नागरीदास गोवर्द्धनधारी हरखे नेह लाडकी टेव॥ ३॥

**॥ छप्पय॥**

समैं घोर कलिकाल धर्म पद छेदन कीनैं।
बिफल क्रोध कंदर्प जीति जीवनि कौं लीनैं॥
लोभ मोह तैं करी प्रवर्ति मारग मति पंगी।
चित चंचल अति अजित नीचंगी बहोरंगी॥
नागरीदास न और कुछ त्रिविध ताप सीतल करन।
प्रगटित बल्लभ बदन तिहिं सरन मंत्र की हौं सरन॥ ४॥

इतिश्री महाप्रभु जी को उत्सव॥

**॥ अथ हिंडोरा उत्सव॥**

॥ या पद की अलापचारी मैं दैंनें ए दोहा॥

भानभवन भई भीर मिलि झुंडनि झूलत बाल।
सखी वेष तहां देखिहों रूप लालची लाल॥ १॥
झूलत झुंड उमंड बहुरंग रंग पहरि दुकूल।
बाला लाला को मनौं रह्यो बगीचा फूल॥ २॥
उतरि झमकि झूलैं चढ़ैं रंग रंग पहरनि चोल।
लाल मुनीयनको मनौं झुंडनि मची कलोल॥ ३॥
नील बसन गोरैं बदन झूलत तिय रस कंद।
आवत जात बिमान ज्यों घटा लपेटैं चंद॥ ४॥
रमकत प्रिया हिंडोरनैं छबि दुरि देवत पीय।
वे झूलत ये श्रमित कटि लचकनि लचकत जीय॥ ५॥
झूलत ठाढ़ी प्रियहि लखि रहेलाल सुधि भूलि।
फहरत अंचर चंद्रिका बैंनी बरखत फूल॥ ६॥
झूलत छबि उमची अधिक मचकत द्रुमची बांम।
उचटैं चोटी पीठ मनौं लगैं चमोठी कांम॥ ७॥

दावन लावन दुहुंनि के बाजत आवत जोर।
बैंनी हार हिलोरहीं बढ़ि झोटा झकझोर॥ ८॥
झूलत झोटा चढ़ि गगन बैंन गरज सम तूल।
गउर घटा अरु सांवरी बरखत हारनि फूल॥ ९॥
बरजैं दूनीं हठ चढ़ैं ना सकुच न संकाय।
तूटत कटि द्रुमचीं मचकि लचकि लचकि बच जाय॥ १०॥
नागरीदास हिंडोर नैं सोभा मन अवरेखि।
प्रेम झुलनि झूल्यो करैं दंपति झूलनि देखि॥ ११॥

**राग मलार॥ ताल॥**

झूलत रसिक मोहन राय॥
संग भामिन दामिनी घन बीच मनौ दरसाय॥
कटि लचकि मचकनि चलत अद्भुत लेत चित कौं चोर॥
बढ़ि गई झूलनि झननिन किंकिनी घुनि सोर॥
नील पीत दुकूल फहरत तुटी नव बनमाल॥
गयोअंचर छूटि उर उर मिलत झुकि झुकि बाल॥
छई चहुं दिसि मेघमाला छयो रागमलार॥
दास नागर तिहं समैं सुख बढ्यो बिपुन बिहार॥

**॥ चर्चरी॥**

नव कदम्ब अंब केलि चंपागह बरतमाल परसत झुकि जमुना तीर लगि समीर लहर॥
रच्यो ह तहां बर हिंडोल वल्लबीन कृत सलोल नव निचोल रंग रंग रमकत रहे फहर फहर॥
पाव सरित बन बिहार गान रंग धुनि मलार बीच रली मुरलीसुनि आवत घन घहर घहर॥
राधा हरि झूलत लखि बरख कुसम सुर बिमान छबि निहार नागर मनरीत पति रहे हहर हहर॥

**॥ राग गौरी तिताल॥**

नई कौन हैं झूलनि हारि॥ टेक॥
॥ दोहा॥ स्यामा कैं संग छबि भरी सोहत सखी नवेलि॥
अति सुन्दर तन सांवरी। अरी मनहुं नील मनि बेलि॥ १॥
स्वेद कंप रोमांच ह्वैं जांन परत कछु तोत॥



झुकि झुकि झोटा मैं हसहि कुंवर लजोंहीं होत॥ २॥
निरखौं फूलनि नेह की सखी चतुर सिर मोर॥
हम जानी जानी सबैं अरी यह झूलनि कछु और॥ ३॥
सबै छकाये नागरी द्रगनि सुधा सों प्याय।
कपट रूप धरि मोहनी अरी प्रगट भई वृज आय॥ ४॥ ३॥

**राग इमन॥ चौताल॥**

भीजहीं भीजहीं रीझि भीजहीं झूलत लाल भीजहीं नवल नेह रस अटके।
झोटा लेत हरैं हरैं भुज मूल ग्रीव धरैं हसिहसि बातैं करैं नियरैं निपट लूंब लटके।
भीजत पट लपटे प्रगट अंग लखि रहे इक टक द्रिग नागर नट के।
नागरीदास मेह बरस निसि भई चपला चिराक ठई तउ न परत बीचि हटके॥ ४॥

**राग अडानौ॥ इकताल॥**

झूलत हिंडोरे लाल नवल बृंदा बाल संग।
चहूं ओर ठनक मनक जुवतनि तन ठनिय बनक
मनहुं मदन बाग बसन सोहत है रंग रंग। फूलन के बरन नवलासी लीनैं करनि
प्रीतम मनिहरन तरुनि दीपति दुति दामिनी अंग। बजवत बीनां नवीन गावत
तियगन प्रवीन गह गड गनि गांनतान परन मिलि मृदंग। घहरत नभ घटाकारी
ठहरत नहिं चपलारी फहरत पट नील पीत निरखत मन लोचन पंग। रमकनि
मैं रंग हर्‌यो जाति नहिं मौ पैं कह्यो नागरिया दास रस प्रबाह बह्यो अति उमंग॥ १॥

**॥ तिताल॥**

एहो लाल झूलिये नैंक धीरैं धीरैं।
काहे कौं इतनी रमक बढावत द्रुम उरझत चीरैं चीरैं।
क्यों तुम झुकि झुकि झोटा कें मिस आवतहो नीरैं नीरैं।
यह बरजत त्यों त्यों वे नागर लेत भुज भीरैं भीरैं॥ ६॥

**॥ तिताल॥**

हौं तौ सोभा देखि लुभाई मेरी अंखिया जलभर आई।
झूलत कदंब तरैं जमुना तट सुंदर कुंवर कन्हाई।
झलकत निकसत मुकट लतनि बिच पीतांबर फहरानि सुहाई।
नागरिया तवतैं मोहि जिय मैं फिरि रही मदन दुहाई॥ ७॥

**राग अडानौ ॥ तिताल ॥**

बैठे हैं हिडौरें बीच तखत मुर सैनकारी जेब सरदारी की मजे जन भुलावही। दुहूं ओर चंवर चलावैं सखी चौंरदार सायवान संग सो झुकाये ही झुलांवही। पुले वार हार निज बाहिर जगमगाति देखि सोहैं लाल ठाढे दीठन डुलावही। नागर सुगंध की झकौर उठैं झौटा संग झूलैं स्यामा साहिब मुसाहिब झुलावही ॥ ८ ॥

**॥ इकताल ॥**

सखी सांवरी गोरी ये झूलत कौंन हैं झूलत देखि हियो हहरैं। ढरक्यो अति स्वेद रोमांच भये लखि नैंननि लाज छटा छहरैं। थहरैं तन फूल दुकूल खिसैं न संभारैं दौऊ अंचरा फहरैं। कर कंपत डोरी न जाय गही नहिं नागरया पटुली ठहरैं ॥ ९ ॥

**॥ इकताल ॥**

झूलत रंगभरी अलबेली।
मानौं पवन परसतैं लहकत कंचन लता नबेली।
छूटि गयो उर अंचर फहरत दरसत हार हमेली॥
नागर पिय लखि रीझि रीझि कैं बीच भुजनि भरि झेली ॥ १० ॥

**राग बिहागरो ॥ इकताल ॥**

जमुनां कैं तीर बीर जुवतिन की भीर तहां परम रंग बोरनां रच्यो हिडोरनां। बजत मृदंग बैंन बीन संग राग रंग पावस रितु होत सिंधु रस झकोरनां। झूलत प्रिय नवल किसोर झोटा झकझोर जोर झननन किंकिनीं सोर छबि हिलोरनां। नागर बढ़ि नेह मेह रमकनि मैं रंग रह्यो चलि कटाछ दुहुं ओर द्रिग निहोरनां ॥ १ ॥

**॥ ताल चपक ॥**

तू देखिरी सोभा या बरियां।
बढ़ि जु गये झोटा द्रुम परसत अरझि रह्यो पीतांबर डरियां।
तूटिगई बनमाल हिलोरत छूटि किंकिनी कटि ढर हरियां।
नागरीदास प्रिया अंचल चलि डरि लगि जात देह थरहरियां ॥ १२ ॥

**॥ तालचपक ॥**

उतरे झूले तैं सोभा सिंधु झक झोरे से। प्यारी छूटे बार बैंना बेसरि सरकि गए उत



तूटी बनमाला सिथल किंकनी कटि खुले फैंटा पेच सुख सुरति झकोरेसे। सँवारते भूषन बसन आय सखी जन मन वारैं रीझि रूप निरषि ठगौरे से। नागरीदास दोऊ श्रमित ह्वैं सो सेज देखि छवि भुरयेरो मेरे नैंन भोरेसे ॥ १३ ॥

**॥ रागसोरठ इकताल ॥**

नित गरज गरज गरज कैं बरसनि घटा लगी पावस रितु ब्रज मैं रस रंग रस मगी। हरितभूमि गहबर रहे नवकदंग अंब कुसम कलत भंवर भार झुकिझुकि रही झंब॥ १ ॥ नित० ॥ झूलैं जहां झुंडनि मिलि बल्लभ कुल नारि। जिन मधि नायक वृषभानकी कुमारि। गांन करत चहूं ओर जुवतिन की भोर। पहरैं मनहरनि तरुनि बरन बरन चीर ॥ नित० ॥ २ ॥ रूप चहल पहल बिच हिंडोरनां सलोल। मांनूं मुनियन लाल कैं झुंडनि मची कलोल केकी सुर कुहकि कुहकि गावैं नब बाल। सुंनि सुंनि मलार मेघ घुंमडि आवैं तिहिं काल ॥ नित० ॥ ३ ॥ द्रुंमनि मांझ झूलत बर बैंनी पुलिजात। ज्यौं उड़त मोर तरल पछ पुछा फहरात। छूटि गये अंचर उर टूटि गये हार डोर। मचकनि मैं लचकत कटि झोटा झकझोर॥ ४ ॥ नित० ॥ आई श्रीराधा जब शोभा हैं बढ़ी। सांवरी सहेली झूलैं संग लैं चढ़ी। कही न परत ता समय की बरस पर्‌यो रंग। नागरिया निरखि भई नैंननि गति पंग। नित ॥ ५ ॥

**॥ तिताल ॥**

दोऊ मिलि झूलत रगहिंडोरैं ॥
नीर पीत अंचल चल चंचल बैनी हार हिलोरैं ॥
भंवरभीर लपटत संग आवत लगि सुगंध कैं डोरैं ॥
नागरिया नागर रमकनि मैं मिलि गावत थोरैं थोरैं ॥ १५ ॥

**आन कवि कृत ॥ राग सोरठ ॥ इकताल ॥**

हो प्यारीजी नैं रसियो पीव झुलावैं छैं॥
रंग भर्‌या झोटा देवे सांम्हैं नैंणां सूं नैंण मिलावैं छैं॥
बरस रह्यो रस रंग हिंडोरैं मिलि मलार सुर गावैं छैं॥
यां बातां सूं सांवरियो म्हानें रसिक बिहारी बर भावैं छैं॥ १६ ॥

**आन कवि कृत ॥ इकताल ॥**

हिंडोरैं हेली रंग रह्यो सरसाय॥ टेक॥ हौं तौं वारी जी वारी गई देखि॥ झलनि मैं

झुकि झूमि रह्या पिय प्यारीजी रो रूप लुभाय॥ भीजै तन तरवर चूवैं लागा गलबांही लपटाय॥ रसिक बिहारीजी रो झूलबो म्हांरां मन मैं झोटा पाय॥ १७॥

**ख्याल॥ तिताल॥**

सुन्दर नंद कुंवार झूलत ललित कदम्ब तरैं जमुना तट नव मन श्याम सरीर॥ सोहत फहरत माल मोहत महकि मालती रही चहूं दिसि भई भंवरन की भीर॥ चलि री चलि बलि आज नैंननि रूप अमी रस पान करहि किन हरहो मन तन फेर॥ तू वीर वे श्याम जोरी जगत विभूषन नवल नागरी बनियँ धीर समीर॥ १८॥

**॥ तिताल॥**

झूलत हिंडोरैं नवल दोउ मन मोहन मोहनी छबि पावही॥
द्रुम पर ह्वैं २ कढत बढत छबि परसि परसि धुरवामनौं आंबहों॥
खुलि बैंनी उरहार टूटि पट छूटि अंबर फहरावंहीं॥
नागरिया झोटा बढि रमक रगीलो ता मैं झुकि झकझोरनि मिसि लपट वहीं॥ १९॥

**तिताल॥**

झूलत हैं दोऊ सखी झुलावैं॥ सौंधैं की झकोरैं श्याम तन गोरैं आवैं॥
हिंडोरैं हिलोरैं मांझ थोरैं २ गावैं॥ नागर झकझौरैं होरैं डोरैं उरझावैं॥ २०॥

**आन कवि कृत॥ राग काफी॥**

धीरां झूलो जी राधा प्यारी जी॥
मचक रंगीली थांरी मांनैं बाली लागैं झुलावत हैं सखी सारीजी॥
फरहरात अंचल चल चंचल लाज न जात संभारी जी॥
कुंजन ओट दुरे लखि देखत प्रीतम रसिक बिहारी जी॥ २१॥

*****



श्री गोपीजन वल्लभायनमः

# अथ भक्ति प्रबंध

## महाराज श्री कल्याण सिंह जी कृत लिख्यते



### दोहा

प्रभु गुरूचरन प्रताप तैं, होत बुद्धि परकास।
तिन कौ हृदय सुध्यान धरि, ग्रंथ करत अब दास।

॥ श्री सरस्वती स्तुति॥

### कवित्व

सुंदर स्वरूप जाकौ, परम सुभायमान,
ज्ञानकी बिज्ञाता दाता, बुद्धि सुरसति हैं।
हंसकौ सुबाहन हैं उजल बदन ताकौ,
वाकौ राखै हियै ध्यान ताकी थिरमति है।
गउर स्वरूप धरैं, अधिक प्रकास पुंज,
ललित किशोर प्रभु, जाकौ यहै चित्त हैं।
चार भुजा धारैं आप, बुद्धिकौं सवारैं नरके,
तेहू सुधारैं ताकौ, पारतौ अमित हैं।

### ॥ दोहा॥

श्री बल्लभ कुल चरन निज नमो-नमो जगदीस।
सुद्धि-बुद्धि दाता हौ जु तुम, सब भक्तिन के ईस।
चरन सरोरुहता सु मधि अंकित कमल समांन।
जिन चरनन कै आसरै दासनिदास कल्यांन।
भृंगबन्यो यह मन फिरै लोभित महा सुगंद।
श्री आचार्य सुकुल बिसद जिनकै घर नंदनंद।
चरन पीठ जिहिं भ्रमर सिर मधुकर चरननि पास।
सीत मुद्रिधारैं जु सिर, इन अंध्रहिं कौ दास।

॥ चौपाई ॥

यहै दास कै मन मै आई
बंदो पद पंकज अधिकाई
पद पंकज को कहा जु पार बरनौं अपनी बुद्धि अनुसार
ऐसे गुरु पद दुष्टनिकंदन तिनकौं नहिँ कीजै कहा बंदन
ऐसौ रूप प्रभु जग धार्यौ
दासनि कौ सब पाप निवार्यौं

॥ सवइया ॥

त्रास लगी जिनकै जियमैं हियमैं मति कौ अनुसार न जानैं।
बात करैं अति हींनता की मन मैं अति वे अभिमान जु वानैं।
ऐसै किते ऊते नीच अपार जिनैं जग आंन किये जु प्रमानैं।
वे तो प्रसिद्ध अनाथ के नाथ हैं सो बुद्धि के अनुसार वखानैं।
हौ प्रभु जू तुम श्याम स्वरूप अनूप हैं सोभा सो भूप बखांनी।
कृष्ण को रूप धर्यो जग आप मिटावन ताप सुजात बखानी।
कीनौं सुधर्म औ बांध्यों है कर्म जू बात यहै अनुसार बखानी।
देह धरी पुरुषोत्तम आप पवित्र सु ताकी ये भांत बखांनी।

॥ कुंभलिया ॥

चरन चिन्ह उरमैं रहै यहै दास की आस।
तन मैं अंतर नहिँ परैं चित्त सरोवर पास।
चित्त सरोवर पास ता सुमधि अंकित छहरत।
मन यह भ्रमर समान चरन के औरैं फहरत
कमल कंठ मेरै बसै बरनौं कहा इनकौ बरन
गोवर्धन कर पैं लियें इनके सिर उनके चरन।

॥ चौपाई ॥

श्री आचार्य सुबुद्धि स्वरूप।
तिनकौ बर्नन कियो अनूप।



तिनके पुत्र सु बिट्ठल नाथ।
मारग पुष्ट जु उनके हाथ।
दास यहै जिनकौ अब बंदैं।
काटैं वेभव सागर फंदैं।
कोउ दासजी होय अनाथ।
तोउ वाकौं जु लगावैं साथ।

॥ कवित्व ॥

रूप सु अनूप ताको भूप यों बखान करैं
उज्जल स्वरूप धरैं करै जपजाप हैं।
जिनके स्वरूप सात पुत्र प्रगटे जु तबैं
जब तै सु भक्तन को काट दयो पाप हैं।
मेट्यो सब मैल गैल मन ये लगाय लीनौ
कीनौ जु बियोग तबै दीनौं तन ताप है।
दुःख के निकंद आनंद के कंद हिय
सेवकनि चंद तुल्य सोहैं वह आप हैं।।
( श्री गिरिधर जी )

॥ चौपाई ॥

श्री नवनीत प्रिये हिय ध्यान।
श्री गिरिधर तप तेज निधांन।
दुतिय स्वरूप रहैं इन सीस।
श्री मथुरेस महाजगदीस।।

॥ सवैया ॥

रूप दुहूं जु बिराजत सीस अनूप तिहूंन की सोभ सुहाई
आप स्वरूप सुबुद्धि कुमार कै भक्तिन कै सिर छाप सु पाई।
होत नहीं सब एक सी बुद्धि मे जन हे जिननै यह गाई।
कहा लौं कहौं गुन है जु अपार दासनि के तुम हौ जु सहाई।।

## ॥ कुंमलिया ॥

सात रूप इक ठां सुभित सब  के प्रथम जु आप।
गिरधर जू बिनती सुनौ रहैं मोहि हिय छाप।
रहैं मोहि हिय छाप आप बिनती यह सुनियें।
मेरी बुद्धि अनुसार कहां लौं बर्नन गुनियें।
यहै मोहि हिय मैं बसैं प्रभु चर्न सब बात।
उद्धारन सबकौ करै ऐसै रूप जु सात।।

## ॥ दोहा ॥

मोसौं बिनती होत लघु तुम हो गुरु गोबिंद।
दासनि पैं हित कीजिये हियो बहत मनु सिंध।

## ॥ चौपाई ॥

विठ्ठलराय जु सीस स्वरूप
सेवक गोबिंदराय अनुप।
श्री विठ्ठल के दुतियक नंदन।
तिनकौं अब करि हौं मैं बंदन।

## ॥ कवित्व ॥

गउर स्वरूप रूप अद्भुत धरत आप प्यारी गहैं
बांई ओर रूप मनौं चंद कौ।
ऐसै प्रभु आप जाकी सीस पैं बिराजैं छाप
सीतल स्वरूप धरैं आनँद के कंद कौ।
भक्ति रूप जाकौ बंस अंस पुरुषोत्तम कौ
अच्युत सरूप आप काटैं दु:ख फंद कौ
भक्तिन कौं देवो ज्ञान ताकौ तो बिधान नांहि
आप हौ अनूप महा सेवौ नंदनंद कौ।

## ॥ बरवै ॥

बल्लभ कुल उर महि यां अंनूत रूप।
बर्नन करि हौं इनकौ गउर स्वरूप।



## ॥ सोरठ ॥

अधम उधारन काज दुतिय स्वरूप जु प्रभु धरे
बांह गहे की लाज हमसे दासनि की तुम्हैं।
( बालकृष्ण जी )

## ॥ दोहा ॥

नाथ द्वारका के यहै बाल कृष्ण सिर कूल,
इनकौ बर्नन होत लघु मेरी बुद्धि नहिँ थूल।।

## ॥ कवित्व ॥

बित्त होय जाकौ जेसौ सेवक कबित्त कहैं।
चित्त की चलाकी लघु बर्नन अपार हैं।
बुद्धि अनुसार मैनैं ग्रथ को आरंभ कर्यो
धर्यो यह हिये ज्ञान पार वे उतार है।
बाल कृष्ण कृष्ण रूप गउर स्वरूप जाकौ
केसनिकौ जूरा सीस  जुलफ सँवार हैं।
नाथ द्वारका के जाके चारभुजा सास परैं
सुख जु अपार देवो कष्ट कौं निवार हैं।

## ॥ चोपाई ॥

अद्भुत ध्यान मोहि हिय आयौं बुधि
माफक यह ग्रंथ बनायौ
तीन रूप कौ बरनन कीनौं ज्ञान यहै
हिय मै धर लीनौं।

## ॥ बरवै ॥

बल्लभ कुल मो बसियां अधिक अनूप
बाल कृष्ण अति लसियां ललित स्वरूप ॥

## ॥ कवित्व ॥

धरे जगदीस रूप आपनैं स्वरूप दुहूं

सेवक औ स्वामी जू कौ मेरे ध्यान हिय पैं
तुम तौ अनाथन कै नाथ प्रभु मेरे ही रहोगे।
अपनी बिरद बात जी काहू किय पै
ललित किशोर आप चर्नन बिराजै छाप।
पीतांबर भेष धारैं कंज कर लय पैं
उपरना पीत देख मोहि उठी हिये
गोकुल के नाथ नाथ गोकुल के जय पैं॥
( गोकुल नाथजी )

## ॥ कुंभलिया ॥

हिय में यह सेवक करैं सुनौ बीनती नाथ।
तन की बुद्ध अनुसार है मन यह लाग्यों साथ।
मन यह लाग्यों साथ हिय रस अमृत बैठ्यो
तासौं कहिय तु बात मन सु कविता मधि पैठ्यो।
कोमल पद धर ध्यान ज्ञान उपज्यो मो जिय में
अग्नि बंस को रूप धर्यौ निश्चय मम हिय मैं॥

त्रतिय रूप बर्नन कियौ तुम हौ चतुर स्वरूप
ऐसी बुधि मो दीजिये कविता होय अनूप।
कवित होय अनूप ग्रंथ सबके हिय प्यारा
दासनि कै अनुकुल दुष्ट तैं है अति न्यारा
ळंदबंद या मैं अधिक संतनि कै बसवै जु हिय
यह प्रबंध मैने कियो अद्भुत है रूप जु त्रतिय।।
( श्री रघुनाथ जी )

## ॥ चोपाई ॥

श्री रघुनाथ जु पंचम रूप बर्नन करि हैं इनकौ भूप।
सिद्ध करत हौ तुम सब काज मोसे नर की तुमकौं लाज।



## ॥ कवित्व ॥

लाज है हमारी तुम्हें अरज ये दास करैं।
आवत ऊलास हिये काटो दुःख फंद कौ।
यहै हिय धर्यो ध्यान रस के निधान आप
चर्नन के चिन्ह सीस सोहै वृज चंद कौ।
आप के प्रताप तैं तौ होत सब काज सिद्ध।
रिधि जू के दाता यह रूप सु अमंद कौ।
भक्ति सुख साग हैं रघु बर क्रपानिधन।
हमरे हिय मैं ध्यान विट्ठल के नंद कौ।

## ॥ कुंमलिया ॥

रघुबर रूप अनूप अति सेवक बुधि अनुसार।
कंबु कंठ मेरैं बसैं अमृत रस जु अपार।
अमृत रस जु अपार पार मुनि जन नहिँ पायौ।
यहै बीनती करौं उछाह जु मन मैं छायौ।
आस दास की यअ क्रपा करिये करुनाकर।
विट्ठल नंदन ध्यान रहौ हिय मो श्री रघुबर॥

## ॥ चोपाई ॥

गोकुल चंद मनोहर मिंता प्रभजन की सब मेटत चिंता।
चंद ऊतैं अति होत प्रकास ए सब काटैं जग की पास॥
( श्री यदुनाथ जी )

## ॥ छपौ ॥

अद्भुत सुमित स्वरूप अनूप जु इनकी सेवा।
चंदन चर्चित अंग सदा संतन सुख देवा।
बाल कृष्ण बृज चंद नंदनंदन इन सिर पैं।
सोभित है वह आप लियें नवनीत जु करयौं।
मन लग्यो साथ यदुनाथ के मैंहौं इन कुल के सरन।

श्री आचार्य जू के तनय तीन लोक तारन तरन।।
षष्टम इन कौ रूप अष्ट सिधि निधि के दाता।
शंख चक्र कर धरैं रूप तिनकै बिख्याता।
अच्युत बिट्ठल नंद लसित आनंद बिलासी।
महिमां तुमहिँ अखंम अधिक मो बुधि प्रकासी।
तातैं कारज सिध होत अरिमति खंभन।
यदु के चरन प्रताप मोहि मति ठयो मंभन।

## ॥ दोहा ॥

सरद चंद से आप हौ तिनकौ करौं बखांन।
महिमां अपरमपार हैं जानत रसिक सुजांन।

## ॥ चोपाई ॥

कलम लतोम तिमर रवि रूप।
महिमां इन की अधिक अनूपा।
अमित अखंभ तेज गुन रासी।
रसमाला हिय भक्ति प्रकासी।

( घनश्याम जी )

## ॥ दोहा ॥

अब घनस्याम स्वरूप कौ बर्नन करौं विचार।
मदन मोहन जिनके मुकट जग के फंद निवार।

## ॥ चोपाई ॥

नमो नमो मोहन जग देवा।
नमो स्याम धन करत जु सेवा।
नमो कंस अरि कालिय मोचन।
कमल पत्र से सोहत लोचन।
ऐसै प्रभु घन सीस बिराजैं।
नंदनंदन वृंदाबन राजैं।



## ॥ छाप ॥

कोमल पद बपु गउर अवर को इन समहैगौ।
श्रीजी के यह रूप कहा अति इनकौं कहगौ।
सुंदर रूप जु आप ताप हिय की जु बुझावैं।
यहे रहै जन हीय मनहिँ बंछित फल पावैं।
तैलंग बंस घनस्याम प्रभु मदन मोहन जिन सिर सुभित।
गोस्वामि चरन जिनके सरन तिन कौ मन अतिही लुभित।
बिप्र बंस हरि अंस स्वरूप आनंद अखंडित।
समझत हैं यह रसिक कहा लहिगौ कोउ पंडित।
ब्यापत है दिन रैन रहैं मोहि यइ न महिमां।
मोपर कृपा अपार ताहि तैं समझऊ लहिमां।
साधक जिनके स्यामधन पति जिनके मोहन अमित।
गोपिन के मिंता यहे सेवक का चितचोर अति।

## ॥ कवित्व ॥

स्यामधन आनँद सुजांन मनमोहन हैं।
सोहन तिनों ही छबिरस कौ सदन हैं।
बस कियो हम मन तन कौं लगाय दियो।
चरन तिहारे प्रभु दुखके कदन है।
मूरति मनोहर की सूरति बसी मो हिय।
ललित त्रिभंगी ऐसौ नंद को नंदन हैं।
रस है अमंद याकौ चंद सौ मुखार बिंद।
मोहन मदन जाकौ सुंदर बदन हैं।
सेवत हैं ब्रह्म वेद संकर सुरेस जाकौ
मुनि जन समात रस जानत सुजांन हैं।
सात ही स्वरूप रूप भूत के बसत हिये।
भक्ति है गौर सदल जाकौ ए निसांन हैं।

बर्नन अपार याकौ पार कौंन पावत है।
गावत पुरांन जातैं कियो मैं प्रमान हैं।
सिधि मन काज होत अति ही उदीत बुधि।
भक्ति कौ प्रबंध यहै देवत कल्यान हैं।

## ॥छंदभुजंती॥

भयो हैं अनूप महा ग्रंथनी कौ
सुनैं सुख होवैं कटै दुख जी कौ।
करत है बिचारैं जु इही सीस टीकौ।
जैसी बुधि होवैं सु तैसी बखांनैं।
बडे पुरुष कौ है जु कैसो प्रमानैं।
सबैं संत इहि पंथ कौ आन बंदैं।
निराधार है तो कटै काल फंदैं।
यहै रूप अद्भुत हैगौ अमंदं।
मिटैं जाल फंद भजै नंदनंद।
इंही कौं पढै तै ठये बुधि आछैं।
कटैगौ सदा कष्ट संबोध पाछैं।

## ॥दोहा॥

सूरज शिव गनपति सकति है विष्णु यहै इक रूप।
जो बांचै सीखैं सुनै इनकौ बिरद अनुप।
लघु स्वरूप अरु रूप अति ज्योति जु विष्णु अखंड।
सुख दाता ज्ञाता सबनि नमो नमो अरि दंड।
राज भक्ति अरु रूप इक शिव जू बडे स्वरूप।
रुंड माल धारैं जु गर सीस चंद कहि भूप।
अष्ट बाऊ कोमल बदन नमो तुमहिँ हैं शक्ति।
जस दाता दुर्गा सुभित देवत हौ हरि भक्ति।
गनपति के इक दंत हैं सिर सिंदूर निज तुंड।



कन सुरन के भुज बंधे सोभित गउर जु सुंड।
रवि कौ तेज सरूप अति बाल जहाँ पेस।
तपत पुंज प्रफुलत किरन बंदे तिनहिँ नरेस।
पंचरूप प्रभु नैं किये जिनकौ मोहिय ध्यान।
बिष्णु भक्ति अति ही अधिक यह कबि करैं प्रमांन।

## ॥चोपाई॥

अजामेल औ तारे प्रभुनल। तिन कौ हेगौ मोकौं अतिबल।
हमसे नहिँ कोऊ है पापी। कृपानाथ हमरी बुधि थापी।
लोभी अरु कांमी संसारा। आवागमन लहैं केइ बारा।
जौ कोऊ नर रहै अनाथ। तोऊ कृपा कर पकरैं हाथ।
बडे पुरुष करनी नहिँ जोवैं। बिरद अपुन तैं राजी होवैं।
रामावत हैं बडे महंत। तिनकौ है गौ बिरद अनंत।
रघु की इनकैं हिय उपास। धनुसग हैं लक्ष्मन सौंहास।
यह प्रबंध मुनि आगैं कीनौ। ताकौ ध्यान हियै धर लीनौं।
नीमावत गोपाल उपासी। रस प्रबीन आंनंद बिलासी।
नंद नंदन गोपाल अमृत जुति । परसराम कीनी हैं स्तुति अति।
स्याम बिंदु कौ तिलक सुदीनौ। बडजन जांन पकर कर लीनौं।
सबैं जक्त ( जगत ) की माया झूठी। इहिँ मति मांही जुक्ति अनूठी।
बिष्णु स्वामिका पंथ निराला। बल्लभ कुल पर सैं बडताला।
श्री आचार्य सुबर्न अपारा। इनके सिर हैं कष्ट निवारा।
जिन कर सौं गिरराज उठायौ। मित्रन सहित बृजहिँ बचायौ।
रूप मनोहर वृज के चंदा। मोहनि मूरति नैन अमंदा।
माधव पंथ बडे निरभोगी। कहाय ऊँचे इनकौं कोउ जोगी।
माधव राधापति अति सुंदर। सखि के मिंतन लहत पुरंदर।
भाल तिलक इन उनकौं दीनौं। तातैं मति यह इब चल कीनौं।
इनकी कविता अधिक प्रसाध। रस जन पन जानैं कछु साध।

## ॥ कवित्व ॥

पहिलैं निरंतर मैं करिकैं बिचार कियौ।
देखिये तौ पंच प्रभु जाकौ बर्ननाँहि हैं।
फेरतौ सुध्रर भाति खांति सौ बखान कियौ।
मन मैं विनोद लियौ वेई करैं साहि हैं।
च्यार संप्रदा कौ भेद वेद जिन्हें गावत है।
तिनहू की बीनती तौ थोरी बौत चाहि हैं।
फल के अमंद दाता ज्ञांन के बिसेष ज्ञाता।
मेरौ हाथ आप याकी तौ निबाहि हैं।

## ॥ चोपाई ॥

प्रभु की कहाँ लौं करौ प्रसंसा। तुमरौ सेवक हमरौ बंसा।
बल्लभ कौ अब गुन मैं गावौं। मोमन का जसबैं सिधि पावौं।
आगैं रिख यह बचन जु चाही। सो सुध उपजी मो हिय मांही।
मेरे हिय मैं ये ही चाला। सुमिरों सुंदर रसिक रसाला।
अहल्यादिक के इ मनुष उधारन। गिरवरधारी कारज सारन।
जिनके चरन बिंदु अति बिम्मल। इन पर सै मन होत सुनिर्म्मल।
गोस्वामी पद सुंदर अच्युत। जिनके पति हैं वा नंदसच्युत।
हमरे मन मैं ध्यान अखंड। सबके सिर पैं इनकी मंड।
कहां लौं कहिए इनकी सोभा। इनकी बांनी मो मन लोभा।
ठयें बियोग मनौमन चकवा। तन रह्यां अरु मन रह जकवा।
सुख मैं करवत काल जु सुल्प। मोहिधनी की माया अल्प।
एक रूप में सब बह्मंड। तऊ गिनिये वाकौं जु अंखड।

## ॥ दोहा ॥

ललित स्वरूप रूप अति तेज अति सोहत सुंदर स्याम।
पुष्ट मार्ग थापन उथप दुष्टन के अभिरांम।
गोल रूप नीतण नैयन जा ढिग फबती अलक्क ।



अपनी माया मैं भ्रमै जानै कहां खलक्क।
मन की छानी नाहिँ कछु तुम सो हैं महाराज।
जन की बीनती है यहैं करिये सिध सुभ काज।
बात लघु क्रामात अति जाकै अंदर होय।
अढ कौ मति स्वामी जु मो बिरद आपनौ जोय।

## ॥ चोपई ॥

आज ग्रंथ यह पूरौ कीनौं, रवि बंसी रवि कौ दिन लीनौं।
ऐसौ यहै जू हैगौ ग्रंथा, चिंता मिट जग होवत मिंता।
जो नर निश्चय यहै विचारैं करुनां सिंधु वाहि कौ तारैं।
दीन बंधु बिनती यह सुनियें तुमरौ बर्णन कहाँ लों गुनियें।

## ॥ दोहा ॥

गुरु ईश्वर बर्नन कियौ, तन मै ठयौ उछाह।
कारज कर सब सिधि होंहिंगे, मिट हैं मन की दाह।
सम्वत अष्टादस सतम चउसठ बरस प्रमांन।
मास चैत्र श्रीकृष्ण पख पूरन कियौ सुजांन।
तिथि नवमीं अरु बार रवि, रवि बंसी कहि आज।
बुद्धि फलौ मो अधिक ही, बढिये सुभट समाज।।
।।ग्रंथ भक्ति प्रबंध सम्पूर्णम ।।

## ॥ अथ माधुर्य रस लिख्यते ॥

प्रथम मंगला चरण मैं यहै बार्ता जांन।
श्री शुक जू राजा निकट श्री भागवत बखांन।
लीला कही निरोध तब कृष्ण चरित सब जांन।
बैठे पात्र अपात्र सब तातैं मन सकुचांन।
जब व्है कैं जयदेव जू ऊमग्यो हीयो सुसिंध।
तब इन गीत गोबिंद को बांध्यो काब्य प्रबंध।
बिस्वा बेद सु अष्टपदि अर्क प्रमाण सुसर्ग।

भगवत यश सारस जुतैं तुछी कृत अपबर्ग।
हैं पुराण बैवर्त्त ब्रह्म तहां विवाह क्रम जांन।
वह ध्वनि हिय मैं धारिकैं लीला रहस्य बखांन।
प्रथम सर्ग मैं अष्ट पदि नैत्र युगम-युत जांन।
या मधि श्लोक जु सर्ब ते विश्वे देव प्रमांन।
अष्ट पदी व्है जानियैं द्वितीय सर्ग मैं सिद्ध।
मदन बाण परमाण वहां श्लोक जु कहे प्रसिद्ध।
तृतीय सर्ग बसु भू प्रमित श्लोक अष्टपदि जांन।
पूर्बाद्ध मैं जो कह्यो सो गिन सत्य प्रमांन।
चौथे सर्ग जु अष्टपदि युग्म जु श्लोक सगंध।
अरू बहुविध के छंद को कीनो सु कवि प्रबंध।
पंचम सर्ग सु जानियै श्लोक अष्टपदि रीत।
सूरज के हय सम वहै, अर्ध जु वेद पुनीत।
षष्ट सर्ग के मध्य पुनि जानो यह विस्तार।
चंद अष्ट पदि श्लोक गिन अर्ध बसु समसार।
हरि तिथि मैं जग ब्रत करै ता सम श्लोक प्रकार।
सप्त सर्ग मै अष्ट पदि गनिये नह चै च्यार।
कवि कह अष्टम सर्ग मैं श्लोक अष्ट पदि जांन।
रूद्र नेत्र अरू युग्म तैं अर्ध गिनौं सह नांन।
नवम सर्ग ऐसै गिनौं श्लोक अष्ट पदि बिद्धि।
वेद नेत्र के अर्ध कीहै गिनिती जु प्रसिद्धि।
दसम सर्ग मैं श्लोक अरू अष्ट पदि इहिं रीत।
अर्धकला अरू वेद मध डारो बुद्धि पुनित ।
एकादशमें सर्ग मैं श्लोक अष्ट पदि जानि।
विश्वा अरू रस अर्ध सम गिनियै हृदय प्रमांन।
द्वादसमें सर्ग जु गिनौं श्लोक अष्ट पदि युक्त।



बिधा त्याही रस जु की या सम नांही मुक्त।
राधा कृष्ण जु भक्त कै अवस्य सीखबो जांन।
अन्य ऊपासी वाचि हैं ताकूं निज गुरू आंन।
घोर घटा नँद देखि कह राधे घर पौहुँचाय।
वुहाँ तैं चलि दोऊ पुलिन मैं रमन करत चित चाय।
श्री सरसुति हित युत गिनौं पद्मावति स्वछंद।
बासुदेव हित केलि युत किये जयदेव प्रबंध।
कला कुतूहल रस सहित हरि मैं जो तुव चित्त।
तो कविता जयदेव की सुनौं श्रवन दै मित्त।
गोवर्धन धोई सु कवि ओर उमा धर पत्त।
प्रौढ़ी कीये जयदेव जू हम कवि तार समत्त।
अष्ट पदि पहली महां बर्णन दश अवतार।
प्रेम पक्ष के अर्थ मैं नह चै बंध प्रकार।
अष्ट पदी दूजी मंही मुखनायक नँदनंद।
रस लीला के कारणैं किये ऐश्वर्य प्रबंध।
अन्य कुंज प्रीया निकट बर्णन करत बसंत।
सखि उद्दीपन काज कूं दंपति हित मथमंत।
दक्षिण केल सु औट कर हरि की सखी दिखात।
कही और तैं सुगल ज्यूं तुम सम नाहि न बात।
प्रिया सखी तैं यौं कहैं अधिक प्रीत मम जांन।
अन्य रमन पिय हास्य यह मोपैं चित्त न घटांन।
हरख युक्त पूरब रमन बिरह सहित सखि बात।
कहत सखी सौं ताहि दुरि प्रीतम सुन सुन जात।
अन्य रमन की ला[illegible] युत मुद्रा सोच जु तास।
अन्य कुंज हरि देखयौं सखी अरज परकास।
सदन वैठ कैं बदन तैं अर्चन मदन सु होत।
यह माधव ढ़िग श्रीदशा करत उधोत।

बासक सज्जा राधिका कुंजांतर द्वहु आय।
सखी कहत माधव चलो द्वहुंदिशि आनंद छाय।
प्रीतम लोटत भूमि पर नाम बिरह संयुक्त।
भेजी सखी सु आय कहि यह प्यारी सैं उक्त।
वेणु नाद सुनि रूचि प्रीया सखी लिखी निज चित्त।
कहै बेग पग धारियै इकटक चितवत मित्त।
आप बिरह करि उठि प्रिया बैठि गई अकुलाय।
सो प्रीतम ढ़िग चित दशा कहत सखी हितलाय।
प्रीयतम निकट बुलायबे श्री भेजी सखि आप।
बिन लालन शशि देखिकैं करबे लगी बिलाप।
फिर आई सखि देखि चुप अन्य विलासी जांन।
प्रीतम कै चित महि प्रिया रमण विलाप बखांन।
अन्य कुंज मै और कै प्रीतम करत सिंगार।
स्फुरित प्रीया के होत हिय सखि सौं कह बिस्तार।
चोरी गिनि हिय अन्य की लाज धार जिय कोट।
प्रिया वार्ता प्रिय सुनैं छिप बृक्षन की ओट।
अन्य रमण के चिन्ह युत देखि प्रिया कह बैंन।
गमन ईर्ष्या हीय धर अति ही जिय रस मैंन।
रिसि प्रियतम कुंजातरे बैठे प्रिया सु ताप।
समजायस फिर मिलन की कहै सखी मुख आप।
संग सखी के आयकैं प्रीतम ठाढ़े पास।
प्रिया मांन कूं छाडियौं बिनती सहित ऊलास।
प्रियतम सज्या कुंज मैं प्रिया पधारौ आप।
सखी करत यौं बीनती मिटै द्वहूं दिस ताप।
फबत निकुंज पलंग पर प्रीतम प्रिया सलज्ज।
हात पकर कैं द्वार महि प्रेरैं सखि रतिकंज।
सज्या ढिग राधा बदन देखत हिये उमंग।



सिंधु चंद्र कौ देखि ज्यौं राका रैंन तरंग।
दंपति व्हैं एकांत मैं करत मनोरथ सिद्ध।
तन मन करि आधीन दूहूं रचत बंध की बिद्ध।
दंपति मन कर सुफल व्हैं दृढ़ हित रस कौ सार।
प्रिया करैं स्वाधीन पति करवावत श्रृंगार।
यहै ग्रंथ माधुर्य रस प्रीतम प्रिया बिलास।
कीनौं गीत गोबिंद कौ भूप कल्याण प्रकास।
मंद बुद्धि नर या समय शास्त्र अर्थ निर्जान।
जिनकौं यह सीखैं हृदय चित्र ग्रंथ व्हैं ज्ञांन।
मन दृढ पागै इष्ट रस त्यागै दुर्बुधि बास।
लागै गुरू मुख ज्ञान चित जागै हीये प्रकास।
दूर श्रवन दरसन दूहूँ पूर निकट व्है आन।
चूर होत दुहूं लोक दुख नूर यहै रस पान।
संबत अष्टादश जु सत इक्यासी की साल।
भक्ति जु सूचक यह बरख गिनती पौण जु माल।
पोष शुक्ल दशंमी जु तिथि सिद्ध जोग गुरूवार।
पूरण तिथि मैं ग्रंथ किय पूरण रस को सार।
विद्यावान अभक्त जो दोषमास मल कैत।
यहै ज्ञांन चै ये रख्यौ बिना भक्ति मल रैत।
चौपन या कारण कीये दुहा जुगल कौ ध्यान।
दुरावृत्त के पाठ तैं माला जपन प्रमांन।

॥ इति माधुर्य रस संपूर्ण ॥

## ॥ महाराजा कल्याण सिंह जी ॥

### ॥ राग विहाग ॥

नहिछूटै मोहन मोरनां अहौबलि बाध्योंल मेती जू कैं पान प्रथम व्याह विधि के रही कर कंकन चार विचार। हसि हसि कसि कसि ग्रंथन नाव तलब निपंव ब्रज

नारि ॥ बमेही कुतब छोरियों हौ सु नौधोस केराज ॥ कर जौ ररोवितितीक रौछू वौलमती जू के पाय यह नही रागिए कौधरि बौहौसु नौकुंवरगोपीनाथ। बकु कहा व तहे आकुनका है का पुनलागे हाथ। खेदसि थल कर पलवा होली ने छोरि संवारि। किरन किक हतस श्री सम्पाम की लुभ बौलोसुक वारि॥ तुम कितकरतस हासस बीरी छाडी अशिक संसान॥ बोलन देउ कंवरि कौ कंकन कैबोलौ वृष भान कमल कमलक रिवर रिन से हो आन श्री मा जू के लाल अबक विउलसा जेन सेजब मेटे हैं कटीलेनाल ॥ ज्यौं ज्यौछू टेकोरना हो त्यौं त्यौं बढत प्रेम की ओरि॥ देखिहु कुनि की रीति सखी री हसति मुदित मुख मोरि लीला ललित मुकंदचंद की करौ रसिक रस पान॥
यह जोरी अविचल ब्रंदावन बलि बलि दास कल्याण॥



## महाराज मदन सिंह जी

हिंडोरे हेली रंग रयो सरसाय।
तेरस को सुभ लगन देखके दीने खंभ गडाय।।
गोपीजन सब आय ठाडी भई। झोटा देत हरखाय।।
मदन नृपत मन मोद बडो है आनंद उर न समाय।।
हिंडोरे हेली रंग रयो सरसाय।



## महाराजाधिराज श्री यज्ञनारायणसिंह जी

### राग बसन्त

बन छाई लता फूले हैं फूल । कूजत अलि काम मन्त्र मूल ॥१॥
रस पिवत कुसुम चटि झूल झूल, अति शोर करत कोकिला भूल ॥२॥
मिले यज्ञपुरूष यमुना के कूल बृजयुवतिन की हरि मन की सूल ॥३॥

### ॥ सिन्दूरिया काफी ॥

सखी ह सब जुर जुर आई खेलन फाग बसन्त पंचमी आज।
नये नये पुष्प नये नये पतुवा अरी कुछ गडवा लाई साज॥
नये नये वषन नये नये भूषण मदन मदन ही को राज ।



यज्ञपुरूष संग हिल मिल खेली छांडी लोक की लाज॥

### ॥ नूर सारंग ॥

डफ काहे को बजायो मेरो घर नेरो।
जब हूँ मिलूंगी छैला मोहते लरेगी।
कहल करेगी बहु तेरा डफ
सास ननद मोरी सुन लख पावें
भरम धरेगी तेरो मेरो डफ
यज्ञपुरूष प्रभु तिहारे मिलन कूँ
बहुत परेगो उरझेरो डफ

### ॥ सोरठ ॥

हेलो देती लाज मरूं झालो दियो हुन जाय।
सुनयोरी म्हारी संग की सहेली।
यो दुःख म्हासू सहयो हुन जाय।
ऊँची चढूंतो म्हारी पायल बाजे
नीचे म्हासूं रहयो हुन जाय॥
यज्ञपुरूष प्रभु री सैनन ने
म्हारों मनडों लिया लुभाय॥

### ॥ सांझी का पद ॥

अरी तुम बरसाने की बाल नागरी मोलदे।
अहो बृसभान नृपति की बाल नागरी मोलदे।
या गहबर बन बीच में हो ना पावें कऊआन।
तुम आवत देखों नही हो हम जानी सुन गान ॥१॥ नागरी
सब ही युवती एकसी हो और न संग में कोय।
बिन हि बिचारे फिरत हो तुम यौवन के वश होय ॥२॥ नागरी
को भेजी को नागरी हो आई हो केई काम।
मदन दोहाई इंहि फिरे हो जाव हु निजि निजि धाम ॥३॥ नागरी

अरे तुम ब्रज जन प्राण आधार लंगर हठ छोंड दें।
रानी यशोमति प्रान अधार लंगर हठ छोंड दें॥
फूलन बीनन आइ हैं हो इहि गहबर बन माहिं।
सार बूझिबे में कहा हो तुम ठानी जिय माहिं ॥१॥ लंगर
टेढी अँखियन देखि के हो टेढी बोलत बात।
टेढे हैं ठाडे भये हो छलन छरी ले हाथ ॥२॥ लंगर
युवतिन ढिग एकान्त में हो रहिबों उचित हैं नाहिं।
निकसि जाहु अब तुरत हि हो यहि गैल की छाहिं ॥३॥ लंगर
नां तरू अन बोले रहो हो छोड के गहबर गैल ।
सहसि बेर हम आव ही हो कहा पडी तोहि छैल ॥४॥ लंगर
अरी तुम बरसाने की बाल नागरी मोल दे ।
अहो बृसभान नृपति की बाल नागरी मोल दे॥
चिन्ता या बन की रहें हो मोको आठों याम ।
काम भूप के धाम की हो रखवारी का काम ॥१ ॥ नागरी
काम भूपते सब मिले हों यौवन रसको दान।
बूझत है या हेतु ते हो तुम ना मानत कान ॥२॥ नागरी
हम हूँ तें गहबर हर्यो हो हम हुते फल फूल ।
हम बिन रूप न पाव ही हो ब्रज यमुना के कूल ॥३॥ नागरी
फूल पराये मोल बिन हो हमन लेने दे तोय ।
हम को रद दे लीजिये हो जो कुछ लेनों होय ॥४ ॥ नागरी

* * *

अरे तुम ब्रज जन प्राण अधार लंगर हठ छोड दे ।
रानी यशोमति प्राण अधार लंगर हठ छोड दे ॥
श्री राधे की भूमि है हो ब्रज मंडल सब ठोर ।
पशु पक्षी उन को रटे हो नाम न जानत और ॥१॥ लंगर
बन सरवर राधेहि के हो अरू फल फूल रसाल ।



फिरत दोहाई उन्ही की हो जहाँ हे लाल ॥२॥ लंगर
कौन पराई चीज है हो यह राधे को राज।
झूंठ बोलते सांवरे हो तोहिन आवत लाज ॥३ ॥ लंगर
अरे तुम बरसाने की बाल नागरी मोल दे ।
अहो बृसभान नृपाति की बाल नागरी मोल दे॥
राधे जू के हम हूँ हैं हो लीजिये अब अपुनाय।।
निरखत ही छवि चंद की हो धीर चकोन न आय ।।१।। नागरी
अहो सखी सुकुमार की हो रहो न सुनसि खिजाया।
प्यारी ढिग लेजाय कै हो चरणान देहू लगाय ।।२।। नागरी
पुनि चाहे सो लीजिये हो आप ही देहूँ तोर।
फूल घने ही लीजिये हो तजिके भोंह मरोर ।।३।। नागरी
सब ही बन द्रुम रावरे हो हमने मारी हार।
रखवारे को दीजिये हो कछु आदर सतकार ।।४।।

* * *

अरे तुम ब्रज जन प्राण अधार लंगर हठ छाँडदे।
रानी यशोमति प्राण अधार लंगर हठ छाँडदे।
फूल हमारे लेंवगी हो तुम को देवन हार।
तरस हमे अति है हो तुमने मानी हार ।।१।। लंगर
जाकी रोकड वाहि को हो देवन लगे उधार ।
यह चतुराई नां चले हो, हो को हटकन हार ।।२।। लंगर
अब ही क्यूं सीधे भये हो भूल के बीती बात।
ऐंठ तिहारी कित गई हो जोर खरे हो हाथ।।३।। लंगर
व्है निशंक ढिग अब हू हो रखवारी लो लाल।
मनुहारी आगे सब ही हो हम हारी बृज बाल ।।४।। लंगर

* * *

अरि तुम बरसाने की बाल नागरी मोल दे।
अहो बृसभान नृपति की बाल नागरी मोल दे।

धनि यह दिन धनि यह धरी हो धनि धनि सांझी रीत।।
फूल बीनते तुम मिली हो ऊमगी पूरब प्रीति ।।१।। नागरी
राधे तेरे दरस हित हो भटकत हूँ दिन रैन।
नीको सूरज आज को हो सफल भये मिली नैन।।२।।
चलो कुंज में लाडिली हो खेलें साझी संग।
रीति मोहे आवे भली हो ऊपजहि नूतन रंग।।३।। नागरी

* * *

अरे तुम ब्रज जन प्राण अधार लंगर हठ छोंड दे।
रानी यशोमति प्राण अधार लंगर हठ छोंड दे।।
भल प्यारी मोहन मिले हो यह सुख कहयो न जाये।
बशी-करन छवि रावरी हो मो मन लियो लुभाय।।१।।
एक रैन मन भावं दे हो रहियो मोरे गेह।
प्रकट किये रस जात है हो गुप्त ही राखो नेह।।२।।
भई अबेर अब लाडिले हो लडि हैं कीरति माय।
सखी भेस कर संग चलो हो घूंघट मुख लपटाय।।३।लंगर
भूषन बसन गुपाल को हो दिय ललिता पहिराय।
चतुराई लखी लाल की हो सब ही हंसी हहराय।।१।।
श्याम सखी केअंग की हो शोभा बनी अनूप।
श्री राधे हित मोहिनी हो तोलन आई रूप।।२।।
पूरन चंद श्री लाल जू हो राधे भई चकोर।
प्रेम सिन्धु सब मन बढो हो निरख युगल चित चोर।।३।।
नगधर नागरि रंग भरे हो रहे भानु के छाय।
नैति नैति सुर मुनि कहे हो लीला बरणी न जाय।।४।।
धनि ब्रज धन गिरवर नदी हो धनि बरसानों गाम।
यज्ञपुरूष प्रिय नेह बश जहाँ बने नब बाम।।५।।

## बधाई बाज है जी राज

गिरते गिरधर प्रगट भये हैं सब देवन सिर ताज।



ब्रजबासी सब पूजन आवें साज पूजा को साज।
यज्ञ पुरूष श्री नगधर नागर प्रकट भये लख आज।।

## ये तुम भली करी गिरधारी।

सरबस धन ही छीन लेले के भये दाय बिहारी।
रामचन्द्र त्रेता में व्हे के एक नारी ब्रह्मचारी।
यज्ञ पुरूष तुम भये अति लम्पट दुवापुर में ब्रह्मचारी।।

## राग काफी

योगी हेलो सांवरो सुखदाई ॥
जटा शीष ओडे बांघबर अंग विभूत रमाई ॥
गलिन गलिन प्रति चलत हंस गति सींगी नाद बजाई ॥
सबन मन चटक लगाई ॥ सावरो ॥ १ ॥

* * *

सुनिकैं नाद धुनि बृज बनिता घर घर तैं उठ धाई ॥
अति आतुर दौरी योगी पैं तन मन सुधि बिसराई ॥
रंक मानों निधि पाई ॥ साँवरो ॥ २ ॥

* * *

कोटि काम छवि लखि योगि की लिखित चित्र गति पाई ॥
फिर कछु अंग सँभारि चतुर इक औरैं तैं बतराई ॥
देखियत दुसरो कन्हाई ॥ साँवरो ॥ ३ ॥
कोउ कहै यह साहू का लरिका कोन नृप पुत्र बताई ॥
कांमिनि कटुक बचन के भारे यह बिरक्तता छाई ॥
यातैं यह भटकत हैं माई ॥ साँवरो ॥ ४ ॥

* * *

मात पिता स्त्री बहिन को या बिनां किहिं बिधि परत रहाई ॥
सुंदर रूप बिलोक प्रेम बश योगी तैं बतराई ॥
क्यों न अब फिर घर जाई ॥साँवरो ॥५ ॥

* * *

कोंन देश मैं बास बसत हो कौंन सिद्धि तुम पाई ॥
कहा काम कहा नाम तुम्हारो ऐसी क्यों जुगत बनाई ॥
कहो हम सों समुझाई ।।साँवरो ॥६ ॥

* * *

मान सरोवन बास बसत हैं हम योगिन के राई ॥
स्वयं प्रकाश हैं नाम हमारो दिव्य दृष्टि हम पाई ॥
जांनी तिंहु काल की जाई ॥ साँवरो ॥७ ॥

* * *

बशी करन उच्चाटन स्तंभन मोहन की अधिकाई ॥
मंत्र शास्त्र और सबही जांनहु ऐसी लगन लगाई ॥
सो तुम यहां दोरी आई ॥ साँवरो ॥८ ॥

* * *

घातहु काल का जो तुम जानत कहो योगिन के राई ॥
या बिरयां हमरे नुर उरतर कैसी बात समाई ॥
नहीं बिगडत सिद्धाई ॥ साँवरो ॥९ ॥
यह तो है एकांत कहबेकी कांन मैं देहुं सुनाई ॥
जो तुम कहो कहूं सब आगे मानों बुरो न कोई ॥
रहोगी तुरन्त लजाई ॥ साँवरो ॥१० ॥

* * *

बसरे योगी अब दम साँवरो की सिद्धाई ॥
जाकों हम चितवत नुर उरतर ताहि कों देहु मिलाई ॥
तबहि है तिहारी बढाई ॥ साँवरो ॥११ ॥

* * *

बहुत कठिन तुमनें यह मांग्यो तऊ मैं देहुं बुलाई ॥
नैंन मूंदि वाको ध्यान धरो तुम सब कारज हो जाई ॥



रहो बिसवास जमाई ॥ साँवरो सुखदाई ॥ १२ ॥

* * *

तजिकैं भेष हरी योगी को सैन दे आंख बुलाई ॥
देखत ही वे हेम लतासी श्याम के अंग लपटाई ॥
नहीं सुरझत सुरझाई ॥ साँवरो ॥१३ ॥

* * *

इहिं बिधि फाग खेल आलीरी बृज बृंदाबन आई ॥
यज्ञ पुरूष प्रिय नेह वशीले चंहु दिस रँग बरसाई ॥
प्रेम सरिता चदि आई ॥ साँवरो ॥१४ ॥

* * *

कित लायो मेरे यार पहाड़न मे कित लायो रे।
साड़ी भी उलझी मेरो लहंगा उलझ्यो, अंगिया उलझ गइै झाड़न में ।।
अबीर गुलाल के बादल छाये, केसर कीच मचावन में ।।
यज्ञ पुरूष प्रभु की छवि ऊपर चित चरणन में राखन में ।
कित लायो मेरे यार पहाड़न मे कित लायो रे।

* * *

## बना-राग काफी

बनां थां पर वारि थांरी चित्तवनि लागैं प्यारी।
संग सोहैं वृखभान दुलारी।
रतन जटित सिरमोर बिराजैं अलक बनी घुघरारी।
लटकि-लटकि पग धरत अवनि पर मत्त गयंद गति भारी।
जै श्री किसोरीलाल के प्रान जीवन धन अगर अली बलिहारी।

बना-राग खंभायची तिताल

देख्यां ही बनी आवें बनां जी थांरी चाल रूडी लागैं ।
मुड मुसिक्याय निहारत फिरि फिरि मन पाछैं तन लागैं।
देत चके रौधे रौमन को सीधे भीनै बागैं।

अनुरागी उनमत गज बांध्यो प्रिया प्रेम कैं धागैं।
बना-राग खंभायची तिताल
कँवराई थारी काइम रैज्यो रे म्हारा लाडला बनां।
निसी रिरि कसी जरी बांता पगडें म्हांनें कैज्यो रे।
अति गरबीली अति ही हठीली लाखिलो बनों जी म्हारो मनमोहैजी।
छैल भँवर सो कँवर मांणीगर वर म्हारी बाईजी नैं सोहैंजी।

## महाराजा श्री यज्ञनारायण सिंह जी कृत श्री दीक्षित जी महाराजश्री की बधाई

श्रीनाथो विजयते

कौन सुक्रत फल पायो हम, यह कौन सुक्रत फल पायो॥
आन बसे निज ग्रह पुरुषोत्तम, अति आनन्द बढ़ायो॥
दैवी जीव हेत प्रभु प्रगटे, माया तिमिर नसायो ॥
यज्ञ पुरुष दीक्षित श्री बिट्ठल, रहो मेरे मन छायो॥
कौन सुक्रत फल पायो हम, यह कौन सुक्रत फल पायो॥

परम पुज्य तैलिंग बिप्र कुल, मध में यज्ञनारायण जू।
ये भये बड़े भक्त ज्ञानी, वेदिक धर्म्म परायण जू॥
निज ग्रह प्रभु अवतार हेतु, इन सोम यज्ञ बहु कीने जू॥
यज्ञ कुंडते प्रभु कहि वाणी, मनमाने बर दीने जू।
इनके पुत्र भये गंगाधर , तिन सुत गणपत जानों जू।।
सोम यज्ञ इन दोउन कीने, महिमां कहा बखानों जू।।
गणपत सुत बल्लभ भट कहिये, निज कुल रीत निभाई जू।।
इनके पुत्र भये लक्ष्मणभट, शेष रूप अधि काई जू।।
किये समाप्त शत सोम यज्ञ, इन अति मन हरख बढायो जू।।



पूरण करण बेद मर्यादा, जन्म लेउँ तव धाम जू।।
बल्लभ अग्नि कुंडते प्रगटे, काकर वार सु ग्राम जू।।
श्री बल्लभ महाप्रभु की महिमा, कहत न आवै पार जू।।
अग्नि रूप हरि मुख की शोभा, यज्ञ पुरुष अवतार जू।।
चारों बेद शास्त्र खट सीखत, लागे महिना चार जू।।
जेती करी दिग्विजय रावर, गिनत न आवै पार जू।।
शुद्ध ब्रह्म वाद किये स्थापन, माया वाद निवारे जू।।
पुष्टि भक्ती रसदान देय के , दैवी जीव उबारे जू।।
कृष्णदेव आदि को दीनों, शरण मंत्र सुखसाज जू।।
गोवर्द्धनधर दई आज्ञा, ब्रह्म संबंध सु काज जू।।
जेते जीव शरण लिये बल्लभ, भे सब प्रभु के प्यारे जू।।
सानुभावता गिरधर कीनी, उरते कबहु न टारे जू।।
तीन बार पृथिवी परिक्रमा, करिके तीर्थ उजारे जू।।
मिलके बिट्ठलनाथ ब्याह हित, कहि पंडरपुर वारे जू।।
बल्लभ नाइ करी तब बोले, हम त्यारे सुत होहै जू।।
आज्ञा मान चले काशी को, ब्याह बीच दोउ सोहै जू।।
बिट्ठलनाथ प्रगट भये पाछे, श्री बल्लभ के धाम जू।।
पुरुषोत्तम को रूप निरख कें, कोटि लजाय काम जू।।
केते सहस बर्ष पहिलेतें , कर रहे शास्त्र पुकार जू।।
हो वहि श्री बल्लभ सुत बिट्ठल , श्री गिरधर अवतार जू।।
इन पितु धर्म्म पुष्टि कर बाँध्यों, अपने जन के हेत जू।।
कियो प्रबंध सेवा को इहि बिधि, जाँको सुख प्रभु लेत जू।।
जिन पै कृपा करी श्री बिट्ठल , ते सब हरि रस पागे जू।।
केतन के संग खेलत गिरधर , ढेल चलावत भागे जू।।

जिनको सुयश विश्व सगरे में, भाँति भाँति सब गाय जू।।
को कहि सकै कीरती इनकी , बेदहु पारन पाय जू।।
प्रथम पुत्र इनके श्री गिरधर, गिरधर के अनुहारी जू।।
धर्मी रूप भक्त वत्सल अरु , ब्रत मर्यादा धारी जू।।
कंठी तिलक त्याग करिबे की, आज्ञा यवन जु दीनी जू।।
सब सामर्थ होत हू पितु, आज्ञा भंग न कीनी जू।।
गोपीनाथ भये सुत इनके , रूप राशि अधिकाई जू।।
तिनको सुयश रह्यो जग छाई , को करि सकै बडाई जू।।
कीनी बहुरि दिग्विजय जहँतहँ, जीव सहस्त्र हि तारे जू।।
सोमयज्ञ करि दीक्षित पद ले, बेद धर्म्म प्रति पारे जू।।
श्री मथुरेश हि शिर पधराये, हिय आनन्द बढाई जू।।
लीला ललित अलौकिक इन, बहु भक्तन हित दरसाई जू।।
कोउ सेवा इन काहु न दीनी , सब कुटुम्ब मिल कीनी जू।।
सिखई सेवा धर्म रीत इन, निज भक्तन रस भीनी जू।।
सो अद्यापि बंश इनके में , भली भाँति चलि आई जू।।
निज हस्तन सों करत रसोई, बहु बेटी सचु पाई जू।।
परम कृपा करि नगधर देके , रूप बंश अपनाये जू।।
याते अधिक और का बरनौं , ये मेरे मन भाये जू।।
इनके पुत्र भये श्री प्रभु जी , जिन बहु शास्त्र पढाये जू।।
द्वारकेश मथुरेश प्रभु दोउ एक ठौर पधराये जू।।
भये रणछोडलाल सुत इनके, बहु विधि सेवा कीनी जू।।
यात्रा करी बहुत इन ब्रज की, गिरि परिक्रमा दीनी जू।।
प्रगट भये जीवन जी इनके , निज पितु धर्म्म निभायो जू।।
इनको सुयश कहा लो बरनों, सबहिन के मन भायो जू।।



बिठ्ठलनाथ प्रगट भये इनके, माया वाद नसाये जू।।
कीनो पुष्टि धर्म्म दृढ फिर, इन दैवी जीव लुभाये जू।।
जिनके पुत्र भये श्री बल्लभ, महा पंडित अरु ज्ञानी जू।।
बाणी दोष निवारण कारण, मौन अधिक कर मानी जू।।
बिठ्ठलनाथ प्रगट भये इनके, बिठ्ठलनाथ प्रमान जू।।
भयो प्रकाश सबै भूतल पै, मानो उदयो भान जू।।
करुणा सिन्ध भक्त वत्सल प्रभु, नगधर बहु सुख दीने जू।।
भये तादृशी सेवक इनके, जुगल रूपरस भीने जू।।
श्री प्रभावती नाम बहू जी, इनकी मात चरण को जू।।
तिन निष्काम भक्ति की प्रभु की, दृढ कर राख भरोसो जू।।
गोवर्द्धनधर बर माँगन की, कीनी आज्ञा तोऊ जू।।
कछु ना माँग कहीये देऊ ,चरण कमल नित जोऊ जू।।
देख अटल विश्वास भक्त को, व्है प्रसन्न हरि भाखी जू।।
तो सुत के सुत होवहि बल्लभ, जाव हुये उर राखी जू।।
श्री रणछोड भये बिठ्ठल सुत, श्री बल्लभ अवतार जू।।
इनको सुयश कहालो बरनों, गोर श्याम सुख साज जू।।
कीनी लीला बाल अलौकिक, निज स्वरूप दरसाये जू।।
निज पत्नीये सास उदर मां, हस्त लगाय बताये जू।।
तीन दिवस लो जगन्नाथ रथ,इन हित नांहि चलायो जू।।
हस्त लगत रणछोड प्रभु को , तुरत हि बेग बढायो जू।।
ब्रज यात्रा में आप कृपा करि, नूतन थल प्रगाटायो जू।।
और बहुत तीरथन में निज, महात्म दरसाये जू।।
श्री मथुरेश प्रभु के बदले, जीवन प्रभु दरसाये जू।।
केती वार आप प्रभु दरसे, आपमें प्रभु बताये जू।।

चमत्कार एते दरसाये , गणना गणी न जाय जू।।
जब जब भीर परी भक्तन पै, तब तब करी सहाय जू।।
मथुराधीश संग पधराये, ब्रज परिक्रमा काजे जू।।
कोउन करी यात्रा एसी, उपमा सबही छाजे जू।
कहँ लो इनके गुण हूँ बरनो, बेद गुणन ते न्यारे जू।।
करि के कृपा हीन मो सम को, देदे झूंठन पारे जू।।
इनके पुत्र भये श्री जीवन, श्री प्रभु जी के रूप जू।।
तेज पुंज शोभा के सागर, महिमा बड़ी अनूप जू।।
बहुत मनोरथ किय इन प्रभु के, नाना साज मंगाई जू।।
ते सब अंगीकार हरख किये, हटडी मांझ लगाई जू।।
जीवन प्रभु के प्रगट भये है, दीक्षित बिट्ठलनाथ जू।।
छूटी आसा पूरी कीनी , निज जन किये सनाथ जू।।
मंगल ध्वनी होत भई घर घर , इन्द्र छत्र ले धायो जू।।
किये अभिषेक वृष्टि कर, ताछिन उर आनंद बढायो जू।।
या दिन की महिमां का बरनों, अद्भुत छवि सरसाई जू।।
पुत्र जन्म सुन कै में आयो, दीजे मोहि बधाई जू।।
पुरखन ते हम यहि घर जाँच्यो, अंत न जाचन जैहैं जू।।
हक्कदार नेगी इहि घर के, दुगुन बधाई लैहैं जू।।
भले बुरे की करैं न गणना , यहि बड़ेन की रीत जू।।
सेवक पै राखत शुभ दृष्टि , प्रभु न करे विपरीत जू।।
लालन निरख बहुत मन हरख्यो, कहैं लो रूप बखानू जू।।
पूरनचंद कलंक रहित मनु, निकट आय दरसानू जू।।
छवि लावण्य कहाँ लो बरनों, पायन मदन परायो जू।।
सदा बिराजो लाल तिहारे, दिन दिन हरख सवायो जू।।



रावर कृपा यज्ञ सब पायो, जो भयो या घर चेरो जू।।
देहु बधाई में यहि मोकों , रहुँ इन चरणन नेरो जू।।
।। इति शुभम् ।।



# महाराज जवान सिंह जी

## बना राग सोरठ

बनड़ाजी हो राज नवल बनी रैं रंग राता,
मुख पंकज की सोभा निरखत, निरख-निरख निरखाता।
प्रीत छकै देखत प्यारी कुं, फिर द्रग वहि दिस जाता।
देख छक्या दृग खंजन इक टक, नगधर पिय मदमाता।

बना राग सोरठ ताल दीपचंदी

## महाराज जवान सिंह जी

बनो म्हारो यो छैं सेहरा वालो, यो तो बन रह्यो छैं नगराळो।
जाहि निरखत आवैं मैं नतवारो।
बंक छबीली भौंहें पर अलकन दृग अंजन अनियारो।
बसन जरकसी वदन सिहानैं मोतिनहार धरारो।
प्रीत प्रगट सब अंग मनोहर नगधर प्राण अधारो।।

## बना राग सोरठ

म्हारा लाडला बनां नैं आघो आबा दीज्यो सा।
सेहरिये सिरपेच किलंगी मोतियन लूंम लगाबा दीज्यो हे।
धन-धन भाग सुहाग सखी री बगला में अतर लगाबा दीज्यो हे।
कसतोड़ा हे लाग उमंग सौ छैला सौ छतियां छुवाबा दीज्यो हे।।

## बना राग सोरठ

धीमां-धीमां चालो जी बनां जी जानी डारी जोड़ सो।
घुड़ला री असवारी छाडो पांव धरो गज मोड सो।

चढ़ी अटारी निरखत ...गी निजर करो जी इक ओड सो।
ललना सखी सोना को सूरज ऊग्यो छै किरण करोड़ सो।।
॥ श्री नृत्यगोपालो जयतितराम्॥
अथ रसतरंगो लिख्यते॥ तत्रादौ प्रथमस्तरंग॥
अथ मंगलाचरण॥ राग यथासमय॥

श्रीगोवर्द्धनोद्धरणधीर आनंद की निधि गाइयैं॥ श्री व्रजराजकुमार रसिक रिझवार वर गाइयैं॥ श्रीजसोदाजू के लाडिले ललन वर सुंदर सुकुमार वर गाइयैं॥ श्री ब्रजजन प्राणआधार राधिकांतःकरणभूषण वर गाइयैं॥ श्री मथुराधीस नटवरलाल भक्तजनप्रतिपाल वर गाइयैं॥ श्री कल्यानराय त्रिभुवनराय जगजीवनधन वर गाइयैं॥ श्री नृत्यगोपाल मदनमूरति रसाल छविजाल हित गोहन रिझवार वर गाइयैं॥ श्री वल्लभ उदार जगदुद्धार करुनानिधान वर गाइयैं॥ श्री विठ्ठलनाथ अनाथनाथ व्रजनाथ अवतार वर गाइयैं॥ १॥

## अथ बधायां॥ राग झिंझोटी॥ तिताल॥

हेली नंद घरन आज बधायो॥ गोकुल गली अली घर घरतैं नूपुर शब्द सुहायो॥ टेक॥ गोकुल रंग रंगे व्रजवासी आनंद ओप अलेलैं॥ गोकुल सकल मही लैं लैं कैं दधि कादो भरि खेलैं॥ १॥ झूंमका॥ अंगन साज सुवास जरी हैं॥ मुख बैंदी शिर तिलक करी हैं॥ भूषन साज सिंगार उजेरी॥ बाजत चली चरनन मैं जेरी॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ २॥ गोकुल नंदमहोत्सव सुंदर मंदिर सरस सुहायो॥ गोकुल घर घर बजत बधाई मंगल अति मन भायो॥ ३॥ झूंमका॥ करन फूल प्रतिबिंब कपोलन॥ अलक मोहनी करत कलोलन॥ तनसुख सारी नील निचोलन॥ सुंदरता सागर मृदु बोलन॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ ४॥ गोकुल गांव सकल ब्रजवासी आनंद उर न समावैं॥ गोकुल प्रगट भये मनमोहन सुंदरता



उफनावैं॥ ५॥ झूंमका॥ अंजन साज सिंगार चली हैं॥ मुख बीरी छबि अधिक खुली हैं॥ हाथ लियैं उपहार अली हैं॥ गावत सब मिलि नंदगली हैं॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ ६॥ गोकुल निगम पुरान बखानैं सुंदरताको सार॥ गोकुल प्रेम दुहाई फिर रहि आनंद हृदय अपार॥ ७॥ झूंमका॥ सकल ग्वालिनी मंगल साजैं॥ नाचत करत कतूहल आजैं॥ कोउ गावैं कोउ प्रेम सु छाजैं॥ हरख उमंग सबन हिय राजैं॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ ८॥ गोकुल धुजा पताकन छायो मंगल कलस सुढार॥ गोकुल सुर कुसुमन बरखासौं मंडित अटा अपार ॥ ९॥ झूंमका॥ गर्गाचारज आये द्वारैं॥ कांह्न कांह्न कहि नाम उचारैं॥ जसुमति भाग्य कहैं अनपारैं॥ कृष्ण जन्म लियो जग उजियारैं॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ १०॥ गोकुल भीर सकल सुर नरकी आगम सरस सुहावैं॥ गोकुल आज बधाई छाई घर घर मंगल गावैं॥ ११॥ झूंमका॥ कीरति आई सब मनभाई॥ रोहिनी आदर दै बैठाई॥ गोपीजन कहि कहि मुसिकाई॥ मंगल मंगल हैं अधिकाई॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ १२॥ गोकुलराज दान दैं दानी सबहिन कौं सुख काजैं॥ गोकुल मनु उमग्यो सलिता ज्यौं लोप नेमकी पाजैं॥ १३॥ झूंमका॥ ढाढनि नाचैं ढाढनि गावैं॥ ढाढी ढाढनि रंग बढावैं॥ जसुमति कीरति गाय सुनावैं॥ सोने के नूपुर पद पावैं॥ यह मंगल शब्द सु छायो॥ १४॥ गोकुल गोकुल गोपकुलन कैं हा हा हरख हुलासी॥ गोकुल नगधर जनम लियो हैं नैंन निरखि सुखरासी॥ १५॥

॥ २॥ राग काफी तिताल॥

खेलत डोलति ग्वालनी दधिका...ै माती॥ लैं मटकी डारत शिर पर हरखी हरी जनम सुहाती॥ सबहिन मन भाती॥ प्रेम उमंग सबहि मिलि आवत नंदभवन मैं जाती॥ आनंद की राती॥ निरखि निरखि छबि कमलनैंन की रही हरख हरखाती॥ सब रंग बढ़ाती॥ शोभित रतन सुदेश सुभग तन उर

पदिकन की पांती ॥ अँग जोवन उफनाती ॥ आवैं नाचत रंगसूं नगधर जनम सुगाती ॥ हिय प्रेम सु राती ॥

॥ ३ ॥ राग हूजाज ॥ ताल झूमरो ॥

आंगणिया मैं बाजैं छैं जी रमझोल ॥ सहियो हे बधाई गावो हे ॥
( या बधाई मैं अस्थाईतो प्राचीन हैं ॥ याके अलापचारीके दोहा नये )
॥ दोहा ॥ घन सी नोपत घुरत हैं विज्जुलता सी वाल ॥ इंद्रधनुष पट लसत मनु बूढनि वैंदी भाल ॥ १ ॥ घन ज्यौं वरषत नंदजू दान रंग झर मेह ॥ दादुर बंदी रटत हैं शोभा बढी सु गेह ॥ २ ॥ वगदल से मुक्ता लसैं ॥ भूषन रतन अपार ॥ दान रंग सरिता चली ॥ सुवरन रजत अपार ॥ ३ ॥ दधिकादो सरवर भरे ॥ ग्वालहि हंस कलोल ॥ नगधर पंकज जन्म सुनि ॥ ब्रज अलि बढी अलोल ॥

॥ ४ ॥ राग झिंझोटी ॥ तितालो ॥

जसोदे जच्चा भाग सुहाग भरी हो , गोद खिलावैं प्यारे लाल कौं ॥ नंदमहर कुलदीप उजारो शत्रुन के उर साल कौं ॥ महर जसोदा ढोटा जायो सोहत हैं तन स्यामको ॥ नगधर जनम असीसत ढाढनि भैया भयो बलरामको ॥

॥ ५ ॥ अथ पलनां ॥ राग वसंत ॥ ताल धमार ॥

सुंदर मनभांवदा हो ॥ पलनां लैं पोढाय ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ भूषन तन छबि पाय ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ पंकज नैंन विसाल ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ तुतरेबैंन रसाल ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ गोरोचन छबि भाल ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ घूघरवाले बाल ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ मंद हसत सुकुमार ॥ सुंदर मनभांवदा हो ॥ जसुमति प्रान आधार ॥ दोहा ॥ झूलत सुंदर पालनैं ॥ सोभाकी निधि आज ॥ जनम लियो गृह नंद कैं ॥ जगत सुधारन काज ॥ १ ॥ पलनां झूलत सांवरो ॥ करि जसुमति स्तनपान ॥ खेलत नंद अवास मैं ॥ ब्रजजन जीवन प्रान ॥ २ ॥ झूलत पौढे पालनैं ॥ जसुमतिको



गहि हात ॥ चूंसत कर अंगुष्ठकौं ॥ मन हरसत हुलरात ॥ ३ ॥ पलनैं झूलत देखिकैं ॥ भूल्यो तन सुधि काम ॥ पल नहिं लागत दृगनिकी ॥ निरखत नगधर स्याम ॥ ४ ॥

अथ बधाई ॥ राग काफी ॥ ताल धमार ॥

राधा जनमी रावत आई हैं ॥ छबि चंद मरीचि सुहाई हैं ॥ ब्रज त्रिभुवनकी निधि आई हैं ॥ हेली बडभागन उमंगी गावत गीत बधाई हैं ॥ धन दिन धन यह मंगल आली सब जग आस पुराई हैं ॥ भान भवन मैं मंगल साजैं मनौं संपति नौति बुलाई हैं ॥ नगधर प्रभु की जोरी यह सुंदर हम राधे सी निधि पाई हैं ॥ ७ ॥

अथ दान ॥ राग धनासरी ॥ तथा गरवीकी चाल ॥ तथा गोरी ॥ तिताल ॥
गिरि गोवर्धनकी ओर गोरस लैं चली ॥ चलत डगन भर भांवती ॥ हो ॥ कटि लचकत स्तन भार ॥ ऊबट बाट चली कहूं ॥ हो ॥ सँग मोहन रिझवार ॥ १ ॥ गोरस मांगत गो रसिक ॥ हो ॥ चल न देत मग रोक ॥ झगरत हैं मिस दान कैं ॥ हो ॥ पी रस नैनन ओक ॥ २ ॥ वदत जु नांही ग्वालनी ॥ हो ॥ अँग जोवन उफनात ॥ मुसकन महर मजे ज सूं ॥ हो ॥ शोभित सुंदर गात ॥ ३ ॥ जोवन माती फिरत हैं ॥ हो ॥ दान हमारो मार ॥ गरब गहेली ग्वालनी ॥ हो ॥ बोलत वचन सम्हार ॥ ४ ॥ रूप लालची लाल हो ॥ हो ॥ मांगत नांहिन दान ॥ चलत कछू तुम ओर हो ॥ हो ॥ मांनत नांहिन आन ॥ ५ ॥ जोवन गर्ब गहेलडी ॥ हो ॥ मानहु मेरी बात ॥ गोरस मोहि चखाईयैं ॥ हो ॥ सैंनन हाहा खात ॥ ६ ॥ लालजु मांनत नाहिं हो ॥ हो ॥ मोहि हटकी मग मांह ॥ लोक चतुर लखि पाइगे ॥ हो ॥ छाडो मेरी बांह ॥ ७ ॥ प्रेम छके दोउ विपन मधि ॥ हो ॥ झगरो दान निवार ॥ नगधर प्यारी कुंज मधि ॥ हो ॥ प्रीत छके सुकुंवार ॥ ८ ॥

राग जिलो ॥ ताल दीपचंदी ॥

निहारौं कंवल नैंन ननदी मोहि दधि बेचन जावन दैं ॥ स्याम सुंदर मग रोकि रह्यो हैं मोहि हटक हटांवन दैं ॥ पीर बुरी हिय लाग हिलगदी मोहि हित दरसांवन दैं ॥ लाज सकुच गृह लोग जंजालन मोहि नेह लगांवन दैं ॥ नगधर नेह निवाहक प्यारो मोहि हित सरसांवन दैं ॥ ९ ॥

कबित्त ॥ राग गोरी ॥ चौतालो ॥

वेर गोधूरिक भई रोकी लैं मग मांझ छाड देहो अचरा गृह सासु सुनपाय हो ॥ नगधर रसिक लाल प्रेम मतवारे प्यारे रूपरस भीजे ओ दान हटलाय हो ॥ सांचहूं कहूंहूं स्याम मेरी यह मानौं बात आगैं दधि चोरवे मैं ऊखल बंधाय हो ॥ बलहू पैं मांग दान बामन भये हो देखो हमहू पैं दान लैं कैं कौंन छबि पायहो ॥ १० ॥

## अथ सांझी ॥ राग झिंझोटी ॥

लली की सांझी पुजावन आई ॥ स्याम सखी लियैं संग सोहनी सबैं माहनी भाई ॥ कीरति कह्यो सबनि मिलि नीकैं सांझं पुजाय सुहाई ॥ राधा स्यामा मिलि मिलि पूजत अरचन कर शिर नाई ॥ बाजे बाजत सरस सुरनसौं सुंदर सरस सुर गाई ॥ मन वंछित फल पूरन कीजे नगधर तव प्यारी निधि पाई ॥ ११ ॥

अथ बंसी ॥ राग काफी ॥ तिताल ॥

मुरलिया भार भरीरी तैं मोहे नंदलाल ॥ पिय रस अधर लगी निसदिन तू सोति सुहागल हाय ॥ विहरत अधर पल्लव शय्या पर पियमुख लगी सुहाय ॥ धुनि सुनि विकल भई हम तलफत लाग्यो विरह दहाय ॥ नगधर पिय मुख लाग लागकैं तू वैरनि मति खाय ॥ १२ ॥ दोहा ॥ लोक लाज सुधि बिसरिकैं ॥ भवन नांहि ठहराय ॥ भली चढाई वरत पर पियमुख लगी हँसाय ॥ १ ॥ मुरली रली सुहावनी हरलीनी सव वाम ॥ सुध बुध



लीनी सवनिकी लीन- तन स्याम ॥ २ ॥ अरी बजावत सांवरो तो सुर कीने साल ॥ जाल बिछायो सबनि पैं तलफत मीन सुहाल ॥ ३ ॥ नगधर करी सुहागिनी सुरगहैं मति बोल ॥ तांन विसारैं गृह कथा करी विरह की रोल ॥ ४ ॥

अथ राग ॥ इमन ॥ चौतालो ॥

थौंग थौंग तत तत थेई थेई थेई नृत्यत सुघर स्याम ताल मन भाई ॥ धुमकट धुमकट धिलांन रंग रही पीय संग नृत्यत नवेली सब ही सुहाई ॥ तता थेई तता थेई थौंग गतैं लेत प्रीतम संग गत अलात मिली राग केदारो गाई ॥ उघट उघट उघट रीझ नगधर संग रंग लेत चपल नैंन बंक भौंह त्रिभुवन छबि छाई ॥ १२ ॥

अथ अस्थाई ॥ राग विहागरो ॥ ताल धमार ॥

अति रस भरी ब्रज सुंदरी नृत्यत रास सुधंगा हो ॥

## ॥ या रास मैं अस्थाई तो नवीन हैं ॥ अरु दोहा महाराज श्री नागरी दासजी कृत रास रसलता ॥

॥ दोहा ॥ निस सर्दोत्फुल मल्लिका ककुभकांत राकेसा हो ॥ गही बेणु हरि निरखि बन रासरमण आवेसा हो ॥ १ ॥ पूरन ससि निस सरदकी चलि बन मलय समीरा हो ॥ होत बैणख रास हित तरनि तनै या तीरा हो ॥ २ ॥ बंसीधुनि दूती पठैं बोली हैं ब्रजबाला हो ॥ समर विजैं आरंभ रस ॥ रास करन नंदलाला हो ॥ ३ ॥ परम प्रेम आरूढ रथ ॥ बिषम पंथ धुनि बैना हो । रास केलि संग्राम हित ॥ चली मदनगढ लैना हो ॥ ४ ॥ बिमल जुन्हैया जगमगी ॥ रही बैंन धुनि छाया हो ॥ प्रेम नदी तिय रगमगी ॥ वृंदाकांनन आया हो ॥ ५ ॥ रुकी न कापैं तिय गई ॥ छाडि काज गृह चाहा हो ॥ मिल्यो स्यामरस सिंधु मन ॥ सलिता प्रेम प्रवाहा हो ॥ ६ ॥ जुरैं करनि कर कँवल बिच ॥ अमल जुन्हैया जोती हो ॥ हाव भाव बहो गान गति ॥ रासरंग अति

होती हो ॥ ७ ॥ नूपुर कंकन किंकिनी ॥ मिल्यो झमकि झंकारा हो ॥ कोटि काम दल दलमलति ॥ पायन गति बिस तारा हो ॥ ८ ॥ अति दरसी सरसी जु छबि ॥ द्वै तिय मधि नंदलाला हो ॥ कंचन मणि बिच स्याम मणि ॥ मनौं मैन की माला हो ॥ ९ ॥ पदंन्यास उठि रासमैं ॥ कुसम सुगंधित धूरा हो ॥ रह्यो नूपुर निनाद सौं ॥ नव बृंदाबन पूरा हो ॥ १० ॥ लगे हौंन रस रास मैं ॥ बहो संगीत प्रकारा हो ॥ गांन तांन अति गतिन के ॥ कहि न सकत बिस्तारा हो ॥ ११ ॥ रास करत नंदलाल तिय ॥ संग सरदकी राता हो ॥ लाघवता तन फिरन की ॥ मनौं मैंन आलाता हो ॥ १२ ॥ फुरत हरवई पगनि की ॥ नचत मांझ दरसाया हो ॥ बाला लालां फूल पर ॥ उरप तिरप लै जाया हो ॥ १३ ॥ लखि उपजत चपलानि चित ॥ सीखन की ललचाना हो ॥ लगे लंक ललनानि की ॥ अलग लागलै जाना हों ॥ १४ ॥ निकसि निकसि मंडलनि तैं ॥ लेत ललित गति लाला हो ॥ देखि देखि अंकनि भरत ॥ रीझि रीझि बस बाला हो ॥ १५ ॥ मुकट लटक पट फरहरनि ॥ भृंग भरहरनि संगा हो ॥ मुख मुरली धुनि घरहरनि ॥ नृत्यत श्याम सुधंगा हो ॥ १६ ॥ ग्रीव ढौरि गति लै चलनि ॥ हलनि अलक उरहारा हो ॥ पायनि मनमथ दलमलनि नचत ललनि छबि सारा हो ॥ १७ ॥ कबहू प्रिय मंडल कढत ॥ अति गति बढत सुधंगा हो ॥ हरि के मन लोचन फिरत ॥ उरझे पायनि संगा हो ॥ १८ ॥ बैनी चला निवंत पर ॥ छनक छला अंगुरीना हो ॥ नचैं चंचला सी कला ॥ कोबिद प्रिया प्रबीना हो ॥ १९ ॥ लाल लई उरलाइ लखि ॥ रीझे गति सरसानी हो ॥ मंडल मैं सुरझैं नही ॥ अंकमाल उरझांनी हो ॥ २० ॥ उत अरुझी कुंडल अलक इत बेसर बनमाला हो ॥ गउरस्याम अरुझे दोऊ ॥ मंडल रास रसाला हो ॥ २१ ॥ गरबहियां गति लेत मिलि ॥ श्रम वस सिथलत पाया हो ॥ डारे मन लै सबनि के ॥ डगमग डगनि डुलाया



हो ॥ २२ ॥ लेत बलैया रीझ दोऊ ॥ दोऊ पौंछत श्रमबारी हो ॥ नचत सनी अति रंग सौं ॥ बनी मदन मनुहारी हो ॥ २३ ॥ उतैं झुकौं हौं नवमुकट ॥ इतैं चंद्रिका चारा हो ॥ भये रासरस मगन तन ॥ सर के सकल सिंगारा हो ॥ २४ ॥ खूटि खूटि अंचर गये ॥ छूटि छूटि गये बारा हो ॥ श्रमित रास रस रंग मैं टूटि टूटि गये हारा हो ॥ २५ ॥ कहत कहत कहां लगि कहैं ॥ कवि मतिमंद प्रकासा हो ॥ तिनके भौंह बिलास मैं ॥ कोरि कोरि व्हैं रासा हो ॥ २६ ॥ नागरिया दये रासं मैं ॥ अगनित कलप बिताया हो ॥ मनमथहू को मनमथ्यो ॥ कथ्यो कौंन पैं जाया हो ॥ २७ ॥

इति श्री नागरीदासजी कृत रासरसलता संपूर्णम् ॥

## राग माड ॥ तितालो ॥ रास मैं रसीली राधे स्याम संग नाचैं ॥

॥ दोहा ॥ तारी सारी लसैं ॥ झीनी झिलमिल गात ॥नचत स्याम सँग भांवती मलैं दामिनी हात ॥ १ ॥ कुसुमित भूमि सुहावनी सुर वरषत हैं फूल ॥ स्याम संग तिय फिरत मनु मेघ चंचला भूल ॥ २ ॥ नटवर भेष सुहावनैं ॥ छवि रतिपति की भंग ॥ जूथ चकोरिनि रट रही गोकुलचंद अभंग ॥ ३ ॥ सरद सुहाई मल्लिका सोभा बढी अपार ॥ नगधर रास विलासको पायो ब्रजजन पार ॥ ४ ॥

## अथ दिवारी को ॥ राग कांनरो ॥ ताल धमार ॥

आज दिवारी रात सुहाई नीके दीपक धरे हैं सँवार ॥ अद्भुत जोति वनी अति छबि सौं भूषन भवन कियो सिंगार ॥ कुंज लतनितर दीपक जोती पंक्तिन पांति धरे सुकुंमार ॥ जमुना नीर दीप झिलमिल जनु पहन्यो नोसर हार ॥ हरखि स्याम देखत छबि कौं अति सँग स्यामा रिझवार ॥ चहूं दिसि दीप मंडल मधि सोहत दीपक सी दुति नार ॥ पवन लगैं डिगुलावत छवि सौं होत पीय उरहार ॥ मनु यह विज्जुलता सी भामिनि घन मधि करत विहार ॥ दंपति संपति सोभा निरखत तन नहिं रहत सम्हार ॥ नवल दीपिका

देखत नगधर नव दुलहनि सुकुंवारि॥ १॥

## अथ गोवर्द्धनपूजा को। राग सारंग॥ ताल धमार॥

गोवर्द्धन पूज कैं सब हरखे ग्वाल॥ हमकौं कान्ह बताई पूजा पर्वतके ढिग चाल॥ करिहो ग्वाल वधाई सब मिलि अपने कृष्ण सहाय॥ पर्वत आगैं सब मिलि बैठे नंद गुपाल सुहाय॥ पहिरावत ग्वालन कौं नीकैं तिलक कियो सब भाल॥ कुमकुम छापा पीठ हृदय पर निज कर देत गुपाल॥ छवि पावत पहिरत सवनी कैं मनु फूल्यो फुलवार॥ गांन करत ब्रजनारी सब मिलि हरखत हृदय अपार॥ नंदराय सबहिन आदर दैं बड़े गोप सिरताज॥ गाय खिलावन लावत नगधर गोधन घोष सुकाज॥ १॥

## अथ बनां ॥ राग माढ॥ ताल गवाली॥

लाडलो बनोजी म्हारो नवलपनो॥ हे नोखीलो बनोजी म्हारो नवलपनो॥ नखरालो बनोजी म्हारो नवलपनो॥ रूपालो बनोजी म्हारो नवलपनो॥ टेक॥ दृग अनियारो अंजन सौंहैं॥ लटकी अलक फनांह॥ कुमकुम खोर सँवार सजीली मोहैं नवल वनांह॥ १॥ रूप उमंग सन्यौं रहैं॥ मोहन प्रीत घनांह॥ कवि उपमां भटकत फिरैं॥ लोभी नवल वनांह॥ २॥ हार हमेल वसन तन सौहैं भूषन रतन घनांह॥ अँग अँग सोभा कही न जावैं॥ मोहैं नवल बनांह॥ ३॥ बंक बिलोकन दृष्टसौं दीखत मदन सनांह॥ संग खरे रस रंगसौं॥ देखैं बनी बनांह॥ ४॥ सौंधौं सरस सँवार छबीलो॥ मुख छवि सौं लौंनांह॥ सरस रसीली बंक विलोकनि॥ तन घन स्याम वनांह॥ ५॥ केसर रंग रंगे बसन॥ अँग उपमान घनांह। नवल बनी के रूप पर॥ लोभित स्याम बनांह॥ ६॥ मसिभीनां साइनां की छबि॥ लखि मनमथ लई पनांह॥ लखि उनिहारी नैंन सिहावैं॥ मन वस कियो वनांह॥ ७॥ हरख निरखि कैं मगन भई हैं पढ्यो कछू टौंनांह॥ रँग भरि दुलहनि रूप निहारत॥ आतुर नवल बनांह॥ ८॥ सिर सेहरिये लटकत



लूमैं॥ लागो उमग मनांह॥ लाल बाल जोरी चिरजीवो॥ नगधर नवल बनांह॥ ९॥

## राग सोरठ मलार॥ ताल झूमरो॥

बनडाजी हो राज नवल बनी रै रंग राता॥ मुख पंकज की सोभा निरखत निरख निरख निरखाता॥ प्रीत छके देखत प्यारीकूं फिर दृग वही दिस जाता॥ देख छक्या दृग खंजन इकटक नगधर पिय मदमाता॥

राग सोरठ॥ ताल दीपचंदी॥

बनौंजी रूडो लागैं छैं सेहरिया वालो॥ यो तो वण रह्यो छै छिंदगालो॥ यो तो बण रह्यो छैं नखरालो॥ जाहि निरखत आवैं मैंन तँवारो॥ १॥ बंक छबीली भौहैं अलकन दृग अंजन अनियारो॥ २॥ वसन जरकसी वदन सिहानैं मोतिन हार ढरारो॥ ३॥ प्रीत प्रगट सब अंग मनोहर नगधर प्रान अधारों॥ ४॥

## राग माढ॥ ताल गवाली॥

बनडा नैं देख्यो हे॥ लाडला नैं देख्यो हे देखो हे सुंदर जाय॥ मनमथ मन मोहैं हे बनौं बाग मैं॥ १॥ टेक॥ देखत मन मोहैं हे॥ वारूं मोतिन माल॥ १॥ मनमथ मन मोहैं हे बनो बाग मैं॥ झुकतैं तुरैं हे॥ झिलमिलि जोति सुजाल॥ ३॥ मनमथ०॥ सेहरा बिराजैं हे॥ कुमकुम तिलक सु भाल॥ भूषन सोहैं हे॥ नगणि जोति सु भाल॥ ४॥ मनमथ मन०॥ झीनें तनवागैं हे॥ सुदरताको धाम॥ सुंदरता सोहैं हे॥ मोहैं हे मन काम॥ ५॥ मनमथ मन०॥ अँग अँग रूप अनूपैं हे॥ देखत ही मन ललचाय॥ अति मन भावैं हे॥ नगधर रूप लुभाय॥ ६॥

राग खंभायची॥ तिताल॥ ए अतिरस झोखैं हे॥ बनडो अनोखैं हे भांवतो॥ मनसिज धोखैं हे॥ मोहैं मननोखैं हे॥ भांवतो॥ दोहा॥ झुकतैं तुरैं सोहनौं॥ प्रेम उमंग सुहात॥ गुण गरवीलो भांवतो॥ मनसिज देख

लुभात॥ १॥ तिरछी भौंह कटाछ सौं॥ चितवत प्यारी गात॥ रूप लुभायो भांवतो॥ नव जोबन उफनात॥ २॥ कुमकुम तिलक सुहावनौं॥ भूषन रतन सुदेश॥ नवल बनांनू देखकर॥ वारौं कोटि सुरेश॥ ३॥ नगधर रूप लुभावनौं॥ अँग जोवन सुकुंमार॥ वारत तन मन वदन पर॥ नवल बनौं रिझवार॥ ४॥

## राग सोरठ॥ तितालो॥

लाडली बनी सूं बनांजी नेह निभाज्यो॥ लाड गहेली भानपुरा की अति हित सरसाज्यो॥ १॥ चंपाबरनी अति हितकरनी छिन न्यारी मति करज्यो॥ नगधर प्रीत निभाज्यो प्यारे छिन मन इत उत न डुलाज्यो॥ २॥ दोहा॥ दुलहन लोचन बिकल हैं॥ मोहन मुख छबि लीन॥ घूंघट मैं अकुलात मनु मदनकेत के मीन॥ १॥ दुलहन वदन दुरात हो॥ क्यौं सकुचत सुकुंवार॥ सब देखन आतुर भई॥ चातुर पट निरवार॥ २॥ घूंघट पट खोल्यो सखी॥ मोरी दृग लटकाय॥ मनौं मदन ससि मीन कौं॥ डारी जार सुलाय॥ ३॥ नब दुलहा नव दुलहनी नूतन नेह सुहाग॥ नयो महल नव सेझ पर॥ नव नव उलह्यो भाग॥ ४॥

## राग झिंझोटी॥ ताल तिताल ॥

लाडला जी हो बनडाजी हो॥ थारां बानिक की बलिहारी॥ नवल बनी की बातां चितधर सरस प्रीत सुखकारी॥ सेझ सुरंगी कुंज महल मैं सारी निसा रंग भारी॥ नगधर प्रीत रीत मैं उरझ्या महा मदन मनुहारी॥ १॥

## राग जिला॥ तिताल॥

दूलह आज बनेरी चल चल देखन कौं जाय॥ रतन सेहरैं लटकत लूंमांजीवन बनां सुहाय॥ भूषन द्रष्ट पाय पूंजन कौं धरे सु तन मधि लाय॥ केसरियां बागो तन झीनौं लीनौं हैं चित्त चुराय॥ मदन पन्यो पायन नहिं सोहैं उपमा चित विलखाय॥ नगधर दास आस पूरन करी दुलहन के मनभाय॥ १॥



## अथ चीरहरन॥ राग कालंगडो॥ तिताल॥

ब्रजजन गावत जमुनां चली हैं॥ लैं उपहार थार हाथन मैं कात्यायनी अरचत सु भली हैं॥ वसन उतार धसी जमुना मैं न्हावत यह मिल सबहि अली हैं॥ स्याम नीर मधि यौं शोभित तन घन प्रति मनौं वीजसली हैं॥ चीर चोर हरि चढे कदम पर यह तुम कहा अनीत करी हैं॥ सुलक दासिका चेरी तिहारी॥ वसनहीन जलमधि जु खरी हैं॥ दे ब्रजनाथ वसन हमारे॥ ब्रजजन जलमधि विकल भई हैं॥ नगधर वसन मुसिकाय दये जब॥ ब्रजजन मन सब हरख भई हैं॥ १॥

## अथ श्रीगुसांईजीकी बधाई
## ॥ राग कान्हरो॥ ताल धमार॥

प्रगटे श्री विठ्ठलनाथ गुसाई॥ दैवी जीव उधारन कारन प्रगट भये सुखदाई॥ गोकुल हरख हरख ब्रजवासी सब जग आस पुराई॥ माया तिमर नसायो छिन मैं प्रगट करी प्रभुताई॥ भक्त चकोर हेत करुणानिधि गोकुलचंद भये जग आई। नगधरदास आस हित प्रगटे श्रीगोकुल छबि छाई॥ १॥

श्री गोपीनाथजी दीक्षित श्री गिरधरजीका तृतीय लालजीकी बधाई

## ॥ राग धनाश्री॥ तितालो॥

भयो सब जन मन भायो आज बधायो॥ श्रीगिरधर घर प्रगट भयो हैं सुंदर रूप सुहायो॥ महा बदि षष्ठी को यह शुभ दिन भयो सकल हुल्लास॥ सोमयज्ञ करि दीक्षित पद लीयो कियो जगत तम नास॥ भक्त हेत अवतरे गुसाई भाग्य हमारे हेत॥ परमानंद बढ्यो गोकुल मैं गोपीनाथ सुनेत॥ द्विज वपु धारी हैं पुरषोत्तम वदन जल्प कियो अनाथ॥ रूप वंश कौं कियो सनाथैं नगधर दे गोपीनाथ॥ २॥

## रागबहार ॥ तिताल ॥ बसंत ॥

फूलन सौं सब वन छायो री ॥ नई रितु आगम आयो सुहायो मानिनि मंगल गायो री ॥ अति दुख दाई काहु न सुहाई रितु हेमंत नसायो री ॥ नगधर पिय के अंगसंग को दिन दिन दाव दरसायो री ॥ १ ॥ राग बसंत ॥ तितालो ॥ मदन मूरति गिरधर कौं देखो ॥ चलोरी चलोरी तुम भामिनि जामनि कहा करत मन आगो पाछो लेखो ॥ मदन महीपति राज साज कैं कियो सबन के हियको ॥ गगन अबीर धुंध मैं निकस न नगधरपिय को करैं किन जिय को ॥ २ ॥ राग बसंत ॥ हिंडोल चौतालो ॥ देखो रितुराज आज सुंदर सिंगार कियो फूलनके भूषन सौ बन छबि छायो हैं ॥ मुकुलित तमालन मैं गुंजैं मधुप माते लपटत बेल देख मन हुलसायो हैं ॥ कोकिला समूह कुंज कुंजन मैं कूजैं कल मानौं मदन जन्म द्वारैं बंदी रटायो हैं ॥ मान तज रमहु कंत प्यारे के रंग आज नगधर रसीलो यो काम दरसायोहैं ॥ ३ ॥ राग बसंत ॥ तिताल ॥ तजो री तजो री मान सब मन भाई रितु वसंत आई ॥ भजो री भजो री प्रान प्रीतम के संग रंग रूखी रितु हेमंत बिलाई ॥ सजो री सजो री साज भूषन अनेक रंग काम पथ भाम चल रंग बढाई ॥ मजो री मजो री आज प्रीतम के संग देख नगधर पर काम कीनी चढाई ॥ ४ ॥

राग बसंत ॥ ताल धमार ॥ गिरधर कज्जल पंक मथि निकस्यो मानौं मदन मत्त वाराह ॥ सघन मानलता मूल खनन कौं चल्यो सु जित तित जाह ॥ मानत नाह निहोरे भामिनि फिर पीछैं पछताय ॥ कनक कलस लैं कठिन कुचन पर वसंत वधावो पिय पै जाय ॥ वनमधि देख कुंद वर फूले मानौं करत माननी हास ॥ समय वसंत सघन वन फूल्यो लैं चलुंरी तुव नगधर पास ॥ ५ ॥

## अथ होरी धमार ॥ राग गोरी ॥ तिताल ॥

एरी ग्वाल सोहनी मोहनी सांवरे ग्वार ॥ दोहा ॥ लालन मोहे मोहिनी ॥ कीनौं विविध सिंगार ॥ मृगमद आड लिलाट दैं छल्यो अज्ब खिलवार ॥ १ ॥ खंजन नैंन चलाय कैं ॥ जकरे जुल्फ जंजीर ॥ यह मोहन दिलदार कौं ॥ मारत सैंननि तीर ॥ २ ॥ फाग भरी अनुराग सौं ॥ निकसी गृह के द्वार ॥ पिचकारी मुर सैंन की ॥ लियैं अज्ब सुकुमार ॥ ३ ॥ सुंदर बिमल सुढार तन ॥ ओढैं झीनौं चीर ॥ मोहे नगधर यार तू ॥ अरी धरैं नहिं धीर ॥ ५ ॥



॥ राग काफी ॥ ताल दीपचंदी ॥ ब्रज बिथिनि डोलत आज री वै छैल रंगीलो ॥ कैफभरी अंखियन सूं हेली भारत छिन छिन गर्व गहेलो ॥ १ ॥ लटपटी पाग झुकी सिर कलँगी अंग अनंग सजीलो ॥ हटक्न मानत आवत हट कर नगधर नट हटकीलो ॥ छबीलो ॥ २ ॥

राग सारंग ॥ ताल धमार ॥ मानंकी ॥ छबीली री ॥ यह रितु ओसर फाग के ॥ यह ठान्यौं कहा अयान री ॥ रंगीली री ॥ तो विन व्याकुल स्याम हैं ॥ वह धरत नहीं छिन धीर री ॥ छवीली री ॥ तुव मुखचंद चकोर वह ॥ यह देखैं बिन अकुलाय री ॥ रंगीली री ॥ देखैं विन मुख सांवरो ॥ यह धरत नहीं उर धीर री ॥ छवीली री ॥ मुकुलित वन अरु मालती ॥ सो फूले सबैं तमाल री ॥ रंगीली री ॥ जुही निवारी केतकी ॥ जहां भ्रमरन की अति गुंजरी ॥ छबीली री ॥ सोंन जुही अरु मल्लिका ॥ तहां पिक मोरन को सोर री ॥ रंगीली री ॥ कदली अवं कदंब हू ॥ यह झुकि परसैं जलनीर री ॥ छबीली री ॥ फूले कमल तरुनजा ॥ जहां कुमुद भये वृजचंद री ॥ रंगीली री ॥ मांन तजो हरि भेटियैं ॥ वह तव पथ रहे निहार री ॥ छबीली री ॥ गिरधर मेघवरन से ॥ तू दामनि उनिहार री ॥ रंगीली री ॥ वह तन स्यामतमाल हैं ॥ यह लपटति किन छवि बेल री ॥ छबीली री ॥ कुंजमहल चलि भेटियैं ॥ जहां नागर नँदनँद री ॥ रंगीली री ॥ रंग भरे किन भेटिहो ॥ यह फागन समय विचार री ॥ छबीली री ॥ यह सुनि उठि चलि भांवती ॥ जहां प्रीतम नवल किसोर री ॥ रंगीली री ॥ कुं जद्वार हंसि भेटि कैं ॥ यह गहि लीनी भुज पास

री ॥ छबीली री ॥ नगधर के अनुराग सौं ॥ यह मिलि हैं आय अकुलाय री ॥ ३ ॥

धमार ॥ राग काफी ॥ ताल.दीपचंदी ॥ सरस सुहाइयां वे रितु छवि देत हैं रितुराज ॥ सुंदर सरस सोभा वे गोभा काम जन्म सुराज ॥ अति मन भाइयां वे समधी मिलन हेत सकाज ॥ उनयो भान मंदिर वे सुंदर सुघर प्रेम समाज ॥ सुंदर समधन आई ॥ बाहवा ॥ संग दोउ घोटालाई ॥ वाहवा ॥ सब जन हरख वधाई ॥ वाहवा समधी नौंत बुलाई ॥ वाहवा ॥ कीरत सनमुख आई ॥ वाहवा ॥ मंग्ल कलस बंधाई ॥ वाहवा ॥ भीतर लिवाई ॥ वाहवा ॥ अद्‌भुत गारि सुनाई ॥ वाहवा ॥ सुनाई गारि अद्‌भुत वे श्रीनँदराय कौं ब्रजनार ॥ संग बलराम मोहन वे मनदा भांवदा दिलदार ॥ आगम सरस सोभा वे श्री वृषभान के दरबार ॥ सरसौं सी फूल रहियां वे झुंमन झूंमती सुकुमार ॥ झुंमन घूंमत आवैं ॥ वाहवा ॥ फागुन रंग बढावैं ॥ वाहवा ॥ हो हो शब्द सुनावैं ॥ वाहवा ॥ अबिर गुलाल उडावैं ॥ वाहवा ॥ मोहन सनमुख धावैं ॥ वाहवा ॥ गहि तन स्यामहि ल्यावैं ॥ वाहवा ॥ राधे चरन नवावैं ॥ वाहवा ॥ संग मिल प्रेम बढावैं ॥ वाहवा ॥२ ॥२ ॥ बढावैं प्रेम सुंदर वे मंदिर भान सरस सुहाय ॥ गावैं ब्याह मंगल वे ललिता प्रीत गांठ जुराय ॥ मोरी मोर सोहैं वे सुंदर पीतपट फहराय ॥ भांवर सरस सोभा वे सोहत अधिक रूप लुभाय ॥ सोहत अद्भुत जोरी ॥ वाहवा ॥ बोलत हो हो होरी ॥ वाहवा ॥ गुरुजन कानहिं तोरी ॥ वाहवा ॥ गहि कर रंग कमोरी ॥ वाहवा ॥ ढोरत स्याम पैं गोरी ॥ वाहवा ॥ कुमकुम सौंधें वोरी ॥ वाहवा ॥ फाग खेल झकझोरी ॥ वाहवा ॥ दोउ मुख मींडत रोरी ॥ वाहवा ॥ ३ ॥ रोरी रंग बोरी वे गहवर विपुनमैं तिय आंन ॥ कदली कुंज खोरी वे घूंमत लतनि मैं दरसांन ॥ प्रीतम परस को वे अद्भुत सरस आनंद मांन ॥ फागुन हरष को वे



अँग अँग प्रीत की हुलसांन ॥ अंग अनंगन जाची ॥ वाहवा ॥ केसर कादो माची ॥ वाहवा ॥ प्रीतम प्रीतहि पाची ॥ वाहवा ॥ गहिकर स्यांमहिं नाची ॥ वाहवा ॥ मोहन मांगत याची ॥ वाहवा ॥ देखी प्रीतजु साची ॥ वाहवा ॥ वेद पुरान वाची ॥ वाहवा ॥ नगधर पिय रँग राची ॥ वाहवा ॥ ४ ॥

॥ कबित्त ॥ राग खमाइच ॥ चौताल ॥

होरी के खेल मैं अलेल भरी डोलैं आज प्रीतम चित चाह की उमंग चित भारी हैं ॥ कुंकुम गुलाब सौंधें घोर कैं चली हैं मानौं स्याम घन मिलिबे कौं विज्जु छटा भारी हैं ॥ निरखि गुपालजू कौं कुंजन मैं चंदमुखी बंदन मुख डारि कैं छीनी पिचकारी हैं ॥ हो हो कहि बोलत नगधर गहे हैं देखि कीनौं भेष छलवे कौं नारीको मुरारी हैं ॥ ५ ॥ धमार ॥ राग गौरी ॥ तिताल ॥ अरी यह छैल रंगीलो छबीलो नागर खेलत सरस सुहाय ॥ अरी यह रंजित सुभग सांवरो ॥ हेली ॥ मो तन निरखि लुभाय ॥ १ ॥ अरी यह अलक छबीली सौंधें वोरी ॥ आली ॥ ली ॥ अरी यह अलक छबीली सौंधें वोरी ॥ आली ॥ ली ॥ अरी यह अलक छबीली सौंधें वोरी ॥ प्यारी ॥ मनहु चंवर फहराय ॥ अरी यह भृकुटी बंक रसीली की सोभा ॥ आली ॥ प्यारी ॥ दरसत हैं इंहिं भाय ॥ २ ॥ अरी यह बसीकरन कौं मनहु बिरंचहि ॥ आली ॥ प्यारी ॥ भाल अंक किये आय ॥ अरी यह नैंन कुरंगन से रसमात ॥ आली ॥ प्यारी ॥ छबि सौं चलत सुहाय ॥ ३ ॥ अरी यह खंजर मीन बिलोकन ॥ आली ॥ प्यारी ॥ मन लैं गयो हैं चुराय ॥ अरी यह विमल कपोलन सुंदर ॥ आली ॥ प्यारी ॥ मो मन रह्यो ललचाय ॥ ४ ॥ अरी यह चिबुक रूप के कूपहि ॥ आली ॥ प्यारी ॥ मो दृग मीन लुभाय ॥ अरी यह कठ दुलरी की उपमा सुखमां ॥ आली ॥ प्यारी ॥ नीकी सरस

सुहाय॥ ५॥ अरी यह पदिक सोंहनैं पन्नन॥ आली॥ प्यारी॥ मोतिन हार रुराय॥ अरी यह किंकिनि मदन वधाई की॥ आली॥ प्यारी॥ सो बंदनवार बंधाय॥ ६॥ अरी यह नूपुर पैंजनि नीलम॥ आली॥ प्यारी॥ जटित जराव बनाय॥ अरी यह मनहु मनोभव मरपि शंभु सौं॥ आली॥ प्यारी॥ चरन रह्यो लपटाय॥ ७॥ अरी यह निकसत कुंजभवन तैं॥ आली॥ प्यारी॥ मनहु मत्त गजराय॥ अरी यह लियैं अबीर गुलालन झोरी॥ आली॥ प्यारी॥ मो मुख मींडत आय॥ ८॥ अरी यह साखि जवादि कुसम जल॥ आली॥ प्यारी॥ मो तन विविधि लगाय॥ अरी यह वूका वंदन चोवा चंदन॥ आली॥ प्यारी मो तन छिरकत लाय॥ ९॥ अरी यह सरस सुगंधन बोरी कोरी॥ आली॥ प्यारी॥ होरी के रंग लगाय॥ अरी यह तकि पिचकारी मारत॥ आली॥ प्यारी॥ मो मन रह्यो हैं लुभाय॥ १०॥ अरी यह अंचर गहि तन बोरत॥ आली॥ प्यारी॥ मैंन रंग उपजाय॥ अरी यह चलत मगनि भरि पायनि॥ आली॥ प्यारी॥ नैंननि नैंन जुराय॥ ११॥ अरी यह हौं सकुचत गुरु लाजन॥ आली॥ प्यारी॥ वह मंद मंद मुसिकाय॥ अरी यह ता छिनतैं मिलिवे की॥ आली॥ प्यारी॥ लगन लगीहैं आय॥ १२॥ अरी यह रंगीलो प्रीतम विन देखैं॥ आली॥ प्यारी॥ भवन रह्यो नहिं जाय॥ अरी हौं विलपत सदन अकेली॥ आली॥ प्यारी॥ मनमथ सर समुहाय॥ १३॥ अरी यह ए ललनां कलनां मोहि॥ आली॥ प्यारी॥ रंग भर्यो लैं आय॥ अरी यह मन वरजत तरजत हौं॥ आली प्यारी॥ राख्यो नांहि रहाय॥ १४॥ अरी यह कोटिक जतन सु कीजैं॥ आली॥ प्यारी॥ प्रीतम सँग लैं जाय॥ अरी यह स्वेद सिथल सीरो तन॥ आली॥ प्यारी॥ प्रीतम रट रहि लाय॥१५॥ अरी मन किहुंन रहै घर भीतर॥ आली॥ प्यारी॥ प्रेम छकन चढि आय॥ अरी यह नगधर पिय देखैं बिन॥ आली॥ प्यारी॥ पलक कलप समजाय॥ १६॥



## राग विलावल॥ ताल धमार॥

अस्थाई॥ अहो छबि देखियैं हो चलो सुंदर स्याम सुजान॥ १॥ या धमारि की अस्थाई तो नवीनहैं॥ अरु दोहा महाराज नागरीदासजीकृत॥ ॥ दोहा॥ सकैं न द्दगभरि देखिकैं तिनको बदन मयंक॥ जिनकौं होरी खेल मिस॥ अंकनि भरत निसंक॥ २॥ द्दग नहिं चहत गुलाल कौं॥ तन चहैं उड्यो गुलाल॥ धूंधरि मैं दुर ओचकां भुज भरि लीजैं बाल॥ ३॥ अद्भुत गति कहित न बनैं भई जु मो मति बांझ॥ चितये तो मुख चंद मैं घटा दामिनी सांझ॥ ४॥ गोरे तन करे चिकुर छुटे पीठ छवि देत॥ सीराजी राजी मनूं न्हाइ फुरहरी लेत॥ ५॥ चलत नचतसी हंसतसी पलटत सी लै तान॥ चातुर पातुर सी भई तेरी भौंह सुजान॥ ६॥ प्रेम गली विच रूप की खँवांखसी व्हैं पूर॥ लोचन दुर्बल वापुरे भये जात हैं चूर॥ ७॥ लगैं सु फिर निकसैं नही करी न भावत ओट॥ होरी मैं अखियांनकी आँखिन हीं पैं चोट॥ ८॥ अच्छी अँखियां दच्छिनी कच्छी मनमथ स्वार॥ नेजा फेर कटाछ के गई करेजा फार॥ ९॥ मुख मूंदैं ही हसत अति करैं दसन उद्योत॥ बाहिर जाहिर होय तो दबै जवाहर जोत॥ १०॥ मधुर मृदुल अधरानि बिच वातनि मंद प्रकास॥ थोरी अरु सुकमार अति ज्यौं हवास की वास॥ ११॥ भीनें बिमल कपोल पर लगी छूटि लटसाफ॥ खुसनवीस मुनसी मदन लिख्यो काच पर काफ॥ १२॥ गई ताब महताब की मुखदुति उदित मनोज॥ तन सुगंध उठि कैं दबैं किस्तसौंज की ओज॥ १३॥ तनक हँसौ हीं होत हैं नवल नेह द्दग कोर॥ घूंघट ही मैं रँग भरी मुसकति लजति लजोर॥ १४॥ उडि न जाय नाजक निपट उरज उठौ हैं पीन॥ वनक वने मनौं कनक के मीर फरस धरि दीन॥१५॥ तन ऊंचे अंगियां तनी सुंदर साफ तरास॥ पिय द्दग बिहरन कौं करी मनमथ फरस फिरास॥ १६॥ अँगनां अँग आँगी तनी ओपी लाल सुरंग॥ मनौं मैंन पतिशाह के खेमा खरे उतंग॥ १७॥ कुचकुरसी

विच उरवसी ऊंची लसी सुतोर ॥ पियमन पतिशाही करन रची अदालत ठोर ॥ १८ ॥ पिय देखत तिय हार को फूल गिर्‌यो कहा भेव ॥ छाती छाती मिलन की देत हैं पाती देव ॥ १९ ॥ गौर सरीरा देखि छबि भए अधीरा लाल ॥ बीरा सी कटि लपटि रहि हीरा बंदनमाल ॥ २० ॥ आनन भूषन आंन कैं ऐसी सोभा दूर ॥ आइ जेव जैसी जगी पायजेव पय पूर ॥ २१ ॥ पायन फूली सांझ सी चित्रत जावक कीन ॥ मलिन भये लखि नलिन मुख सोतिन के छवि दीन ॥ २२ ॥ चरन हरन मनि नहिन मैं दी महदी सुखदान ॥ बैठे पंकज दलनि मनौं मंगल मंगलमान ॥ २३ ॥ रुचिर रूप कोमल बिमल सहज अरुनई पाइ ॥ मनु अनुरागी द्दगनिको रंग रह्यो लपटाइ ॥ २४ ॥ अँधियारी घूंघट किये नव जोबन छक पूर ॥ गजगौनी चलिकैं करत गज गरूर को चूर ॥ २५ ॥ मसनंद क्यारी काम की प्यारी गुल रंगीन ॥ सँक मानत सुख लेत मैं प्रीतम भँवर प्रवीन ॥ २६ ॥ जो शुक तैं न कही गई ब्रज होरी की बात ॥ सो मो पैं न दबी रही ओछे घट उफनात ॥ २७ ॥ कह्यो धमारनि मैं कछू रसिकनि जो रस सार ॥ सिलो कियो उनको जु यह मो मति कैं अनुसार ॥ २८ ॥ कृष्ण केलि सिंगार रस ताकी कथा अनेक ॥ पैं प्राचीन धमारि के होत न सम कोउ एक ॥ २९ ॥ धन ब्रज धन ब्रजबासिया धन ब्रज परम उपास ॥ धन्य फाग रस रीत ब्रज नागर हिये निवास ॥ ३० ॥ नैंन कथक बांचत कथा मोहन सैंन सिलोक ॥ पीवत श्रोता नागरी इंहिं रस इकटक ओक ॥ ३१ ॥

## राग सोरठ ॥ तितालो ॥

गोहन स्याम लग्यो री मेरैं दयो होरी को रंग लगाय ॥ प्रीत लगाई बेपरवाई मोहन स्याम जगाय ॥ गृह न सुहाई आतुरताई चातुर प्रीत पगाय ॥ सुरंग गुलालहि रंग सुलालहि मींडत हाथ लगाय ॥ हौं अति गरजी प्रीतम मरजी गइ नगधरपास ठगाय ॥ १ ॥ राग धनाश्री ॥ तिताल ॥ अनियारे लोचन



बंक प्यारे जुलम करैं ॥ घायलमन रिझवार प्यारे जुलम करैं ॥ यह दरश अजूरा लैंन प्यारे जुलम करैं ॥ यह घूंमत रणज्यौं सूर प्यारे जुलम करैं ॥ टेक ॥ गोरी गोरी गुजरिया हो ॥ झोरी लियैं अबीर ॥ भोरी बोरी फाग की हो ॥ गोरी फिरत अधीर ॥ १ ॥ लालच लागी ग्वालनी हो ॥ हो मोहन चितवत नैंन ॥ फिरी दुहाई मदन की हो ॥ लुटी जु मारग मैंन ॥ २ ॥ प्रीत पगी नागर रंगी हो ॥ छबि सागर कौं हेर ॥ आतुर रूप उजागरी हो ॥ सुनि डफ मुरली भेर ॥ ३ ॥ नगधरकी यह प्रीत सूं हो ॥ रँगी रहैं रिझवारि ॥ छिन बिन देखैं भांवतो हो ॥ तजत प्रान सुकुंवारि ॥ ४ ॥

## अथ दंडक ॥ राग मारू ॥ तिताल ॥

आज रसखेत मैं बाज रहि दुंदुभी सूर दुहुं ओर रस फाग भीनैं ॥ सिमटि इकओर मग रोकती गैलमधि गवर तन स्यामकी चाह लीनैं ॥ प्रीत तन भांवती सघन घन चांवती सबहि गहि स्याम भुज पास लीनौं ॥ कुसुम सौं कलित बर काहुं बैंनी गुही ललित सिंदूर को बिंदु दीनौं ॥ चपल द्दग रंजनसु काहु अंजन दियो मांन खंजन तबहि भंग कीनैं ॥ मांडि मरवट सु कोउ अंग बैंदी दई रंग महदी सुवक चर्न दीनैं ॥ काहु अलिभेष मुख देख हो हो कहैं स्याम गोहन लगी मत्त डोलैं ॥ फाग रस रीतिकी अतिहि हित मीत की रीतको भेद यह कौंन खोलैं ॥ काहु पिचकारि गहि हात सूं झटकि कैं मांडि मुख आड मृगमद कि कीनी ॥ काहु लैं कंचुकी अतिहि सौंधैं सनी स्याम के सुभग तन वांधि दीनी ॥ काहु भरि मांग सिंदूर सौं देख मुख लेत हैं प्रगटि पुनि पुनि वलाई ॥ कहा छबि मोहिनी अतिहि अद्भुत वनी नीलमणि वेलि सी सवनि भाई ॥ गगन गुल्लाल की स्याम घन लाल की निरखि छवि नीलगिरि सांझ फूली ॥ सबहि हर्षित भई फाग रँग रँग रही सबहि हरि लीन मन मीन तूली ॥ सवहि इक ओर व्हैं शब्द हो हो कहत कहत गहि कोउ वलदाउ लावो ॥ सबनि मिलि गहि लये वांधि कैं नीलपट

कोउ कहैं याहि अव तुम नचावो ॥ कोउ कहैं याहि को मांडि मुख चुवे सौं वदन सिंदूर बिंदा बनावो ॥ कोउ कहै याहि कौं करहु अलिभेष किन अनुज सम याहि सोभा जनावो ॥ खरे तहां दोऊ सब निकट हा हा करैं वढ्यो कोतिक सबैं अँगफूली ॥ दास नगधर निरखि रस रीत कौं सबैं जन मन देह की सुधिहि भूली ॥ १ ॥

## अथ श्रीरघुनाथजीकी बधाई ॥ राग सारंग ॥ तितालो ॥

अवधपुर त्रिभुवन की निधि आई ॥

प्रगट भये दशरथ घर सुंदर स्वायंभूवर को फल पाई ॥ घर घर मंगल वढ्यो नगर मैं द्वारैं वंदनवार सुहाई ॥ ध्वजा पताका कलसनि अद्भुत आज अवधपुर छाई ॥ भाग्य देवगन प्रगटे पुरषोत्तम सब जन हरख बधाई ॥ नगधरदास आस हित प्रगटे रावन कुलहि नसाई ॥ १ ॥

## अथ श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई ॥

राग सारंग ॥ तिताल ॥ जनम बधाई आज सुहाई ॥ प्रगटे लक्ष्मणगृह पुरषोत्तम भए सकल सुखदाई ॥ गृह गृहतैं उपहार साज लैं श्रीलक्ष्मणगृह आई ॥ तिलक कियो श्रीवल्लभ प्रभु कैं सुमन माल पहिराई ॥ बैठे दान देत लक्ष्मणभट सबकी आस पुराई ॥ घर घर मंगल बजत वधाई आनंद उर न समाई ॥ उदयो भान प्रकाश जगत हित माया तिमिर नसाई ॥ भक्त चकोरन हेत उदित शसि नगधर अधर सुधारस पाई ॥ १ ॥

## राग सारंग ॥ ताल चर्चरी ॥

जयति श्रीवल्लभाधीस चरणे ॥ धन्य जिन भाग कलि मांहि जे विस्तरे जीव दैवी सु हित अचल शरणे ॥ घोर मायावाद तिमिर कौं फारकैं भक्ति रस सुधा कौं प्रगट करणे ॥ कृष्ण यह आस्य रस रास्य लीला हेत भागवत भाष्य कियो प्रगट धरणे ॥ दीनबंधु भक्त वत्सल करुणानिधि भक्त की त्रिविधि यह ताप हरणे ॥ यही निजचरण की शरण नगधरदास भयो भय



रहित भव सिंधु तरणे ॥ २ ॥

## अथ बरखा ॥ राग मलार ॥ तिताल ॥

काम के आये मेघ नकीब ॥ गरज गरज कैं कहत बाम सौं उदयो तोहि नसीब ॥ दामिनि दीप दिखावत भामिनि चलहु बेग करि पीर ॥ घर बूंदन मैं देख सकत नहिं तुव पिय प्रान अधीर ॥ श्याम निशा मधि श्याम मेघ सजि ॥ देखहु श्याम शरीर ॥ तुव देखैं बिन ब्याकुल नगधर अरी धरैं नहिं धीर ॥ १ ॥

## राग सोरठ ॥ ताल झूंमरो ॥

मोरवा बोलैं हे ॥ देखो नंदकुमार ॥ मोरवा बोलैं हे ॥ देखो अद्भुत रूप रसाल ॥ मोरवा बोलैं हे ॥ देखो अतिअद्भुत नटराज ॥ दोहा ॥ सुंदरता सोहैं घणी ॥ मोहैं अति सुखसाज ॥ छवि सरस्यो परस्यो जु मैं ॥ मानौं मन मथराज ॥ १ ॥ घन धाराके बीच मैं गावत आवत स्याम ॥ मनमथ को मन मोहनौं ॥ रूप सौंहनौं काम ॥ २ ॥ मनमथ सरन सुमार सैं ॥ पिंजर नहिं ठहराय ॥ दृग मोहनके वारजे ॥ आरपार व्हैं जाय ॥ ३ ॥ सघन मेघ तरु देव ज्यौं ॥ पूरे मन के काम ॥ अति हित परस्यो भांवतो ॥ नगधर कुंज सु धाम ॥ ४ ॥

## राग धूरियामलार ॥ ताल चपक ॥

नाचत मोरनि संग स्याम मुदित स्यामा हिं रिझावत ॥ कोकिला अलापत पपीहा देत सुर तैसे मेघ गरजि मृदंग बजावत ॥ तैसिय निसि स्याम घटा कारी तैसिय दामिनी कौंधि दीप दिखावत ॥ श्री हरिदास के स्वामी स्यामा कुंजविहारी रीझि राधा हसि कंठ लागवत ॥ १ ॥ यह पद तो स्वामी हरिदास जी कृत ॥ अरु अलापचारीके दोहा नये ॥ दोहा ॥ नाचत मौर सुहावनौं ॥ छबि रीझे पिय स्याम ॥ गति सँग लेत गुमान सौं ॥ सुंदरता मनुकाम ॥ १ ॥ कोकिल कुहक अलाप की ॥ चातक सुर छबि देत ॥ मेघ

मृदंग बजावहीं ॥ श्यामा रसिक सु हेत ॥ २ ॥ स्याम निसा घनस्याम हित ॥ दामिनि दीप दिखात ॥ नृत्यत मौरन संग पिय ॥ नव जोवन उफनात ॥ ३ ॥ श्री हरिदास विहार हित ॥ राग मलार सु गाय ॥ नगधर पिय अति रीझिकैं ॥ राधा कंठ लगाय ॥ ४ ॥

अथ हिंडोरा

## ॥ राग हूजाज ॥ ताल झूंमरो ॥

थानैं तो झूलण रो चाव भारी हो केसरिया छैल बिहारी ॥ घन घुंमड्यो घहराय रह्यो हैं झूलत भरि अँकवारी ॥ मनु लपटी छवि तरु तमाल सौं तिय मनोज की क्यारी ॥ निरखि छक्या निज दास रीझिकैं नगधर छवि पर वारी ॥ १ ॥

## राग लूरसारंग ॥ तिताल ॥

नवलदोउ झूलत रंग हिडोरैं हे ॥ रतन जटित पटुली पर शोभित झुकि झुकि वदन तमोलैं हे ॥ रमकत रंग रह्यो देखियत हैं मत्त मयूर कलोलैं हे अद्भुत रंग रहयो पातन मै नगघर छबि अनमोलैं हे ॥

राग हूजाझ ॥ ताल झूंमरो ॥ होजी हो रंगीली छबीली धणरा मारूजी हो झूलन आई छैं तीज सुहाई ॥ बणि ठणि साजि सिंगार नवेली अधिक अधिक अधिकाई ॥ १ ॥ रँग रँग भूषन बसन साजि तन प्रीतम प्रीति लुभाई ॥ झूलत झमक झकोरन मैं अति नगधर पिय मनभाई ॥ २ ॥

## राग विहाग ॥ ताल धमार ॥

झूलत रंग उमंग सूं ॥ नवजोवन सुकुमारी हो ॥ झूलन आई सवैं जुरी कुंजभवन सुखकारी हो ॥ टेक ॥ झूलत सुरँग हिंडोरनां प्यारी नवल दुलारी हो ॥ दूलह श्याम सुजान संग रस रंग भरी अँकवारी हो ॥ प्रमुदित मन आनंद सौं गान करैं ब्रजनारी हो ॥ रमकत पिया सुहावनी मनौं घनश्याम छटारी हो ॥ १ ॥ मृदु मुसकनि पिय भांवती मुख सोभा सरसाती हो ॥ रंग रँगी पिय श्याम कै



नवल नेह हुलसाती हो ॥ सौंधैं लपट मधुप गन आवत अंग सुगंध सुहाती हो ।नव नवला सी भाँवती स्याम संग रसमाती हो ॥ २ ॥ नव नव रूप उजागरी सुंदर सोभित भेसा हो ॥ झूलत विविधि विनोद सूं छूट छूट गये केसा हो ॥ स्वेद खेद तन झलक ही स्याम सु मदन नरेसा हो ॥ अंग लगी पिय स्याम कैं गावत राग जु देसा हो ॥ ३ ॥ गुन गरबीली भांवती अति सोभा सरसाई हो ॥ ललित हिंडोरैं छबि लसी प्रीतम कैं मनभाई हो ॥ विज्जुलता तिय दमकिकैं मिली स्याम घन आई हो ॥ नगधर स्याम तमाल कैं मनु लपटी हैं बेल सुहाई हो ॥ ४ ॥

## राग सोरठ बिलावल ॥ ताल धमार ॥

घन गहरी गरज मन भायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ १ ॥ जहां चिमकि बीज छबि पायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ २ ॥ अरी जहां घन बूंदन झर लायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ ३ ॥ हे री जहां नेह मेह सरसायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ ४ ॥ अरी जहां माननी मंगल गायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ ५ ॥ अरी जहां रमकत रंग बढायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ ६ ॥ अरी जहां रागमलारही गायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ ७ ॥ अरी जहा सुंदरता उफनायो ॥ सांवन लूंमही झूंम सुहायो ॥ ८ ॥ या पद मैं आठ तुक को समग्र अस्थाई तो नवीन ॥

## अरु दोहा महाराज श्रीनागरीदासजी कृत ॥

दोहा ॥ घुमडि मेह चुंवति धरनि ॥ अंधकार बढि गैंन ॥ बिछुरि गये चकवा चमकि ॥ समझि द्यौस कौं रैंन ॥ १ ॥ कनक माल दामनि हलैं ॥ श्रमज लकन बरखान ॥ काम मेघ रति भूमि कौं ॥ देत मनौं रतिदान ॥ २ ॥ घन धारा झरहरि करत ॥ अवनी फारि प्रवेस ॥ चले बहोसर समर मनौं ॥ करन मूर्छित सेस ॥ ३ ॥ उत झरलाग्यो मेहको ॥ इत सैंननि झर मेह ॥ गउर स्याम चढि चढि अटा ॥ भीजत रीझि बिदेह ॥ ४ ॥ घटा बतावैं भाँवती ॥ छटा

...वें स्याम ॥ रसभीजे सैंननि करैं ॥ जलभीजे चढि धाम ॥ ५ ॥ भुवधनु ...व धुरवा छुटे ॥ दसन दामिनी बृंद ॥ रूप घटा राधे अटा गान गरजि ...ति मंद ॥ ६ ॥ उतरि झमकि झूलैं चढैं ॥ रँग रँग पहरि निचोल ॥ लाल ...ीयन के मनौं ॥ झुंडनि मची कलोल ॥ ७ ॥ झूलत झोटा चढि गगन ॥ बैंन ...ज सम तूल ॥ गउर घटा अरु सांवरी ॥ बरषत हारनि फूल ॥ ८ ॥ झूलत ...म उमंग बहु ॥ रँग रँग पहर दुकूल ॥ बाला लालाको मनौं ॥ रह्यो बगीचा ...ल ॥ ९ ॥

## राग धूरिया मल्हार ॥ ताल झूंमरो ॥

...िया रस रूप लुभायो ॥ सुंदर सरस सुहायो ॥ टेक ॥ झूलत हिंडोरैं सघन ...ज मैं अति आतुर दरसायो ॥ अलक माल अरुझी वेसर मैं पीताम्बर ...हरन मन भायो ॥ राग मलारहि गावत सुंदर सरस रसीली तांन ...ायो ॥ नगधर प्रीतम अरुझे प्यारी सौं क्यों सुरझैं सुरझायो ...१ ॥ कवित्त ॥ राग गोधनी गोरी ॥ तिताल ॥ प्रीतम निकुंज मंजु कालिंदी ...कुंज जहां झूलत हिंडोरैं पिय प्यारी छबि पावै हैं ॥ लहकि लहकि लता ...मन सु भार रही महकि सुगंध अंग रंग उपजावैं ॥ सुंदर सरस अंग रंग सौं ...ीली श्यामा श्याम संग झूलन मैं सबैं मन भावैं हैं ॥ मचक रंगीली मैं ...मिनी तरस रही नगधर पैं कोटिकाम मूरति लजावैं हैं ॥ १ ॥

## कबित्त ॥ राग मालकोस ॥ चोताल ॥

...लत नवेली अलबेली कुंज कुंजन मैं रंग सरसानैं बरसानैं छबि पाई हैं ...गावत मलार राग आई ब्रजवाला मानौं लाला गुल क्यारी वाला अति ...भाई हैं ॥ नगधर रसिक लाल देखैं लतनि ओट वारैं तृन तोर तोर मति ...सराई हैं ॥ झूलत रंगीली की तरंगन बढी हैं यौं घटा ओर चंद मानों ...घट दरसाई हैं ॥ २ ॥



## राग माढ ॥ तिताल ॥

झूलत तृभंगी प्यारो नटवर भेष ॥ या हिंडोरा मैं अस्थाई तो नवीन हैं ॥ अरु दोहा महाराज श्रीनागरीदासजी कृत ॥ दोहा ॥ घन तन दामिनि पीत पट ॥ बग मुक्ता अभिराम ॥ मुरली गजरनि रंगझर ॥ बरषत हैं घनश्याम ॥ १ ॥ हरि मलार पूरित अटा ॥ घुमडी घटा अछेह ॥ ज्यौं ज्यौं बाजैं मुरलिया ॥ त्यौं त्यौं बरषैं मेह ॥ २ ॥ नील बसन गौरे बदन ॥ झूलत तिय रस कंद ॥ आवत जात बिमान ज्यों घटा लपेटैं चंद ॥ ३ ॥ रमकत प्रिया हिंडोरनैं ॥ छबि दुरि देखत पीय ॥ वे झूलत बे श्रमित कटि ॥ लचकनि लचकत जीय ॥ ४ ॥ झूलत ठाढी प्रियहिं लखि ॥ रहे लाल सुधि भूल ॥ फहरत अंचल चंद्रिका ॥ बैंनी बरषत फूल ॥ ५ ॥ झूलत छबि उमची अधिक ॥ मचकत दुंमची बांम ॥ उचटैं चोटी पीठ मनौं ॥ लगैं चमोठी काम ॥ ६ ॥ दांवन लांवनि दुहुंनि के ॥ बाजत आवत जोर ॥ बैंनी हार हिलोरही ॥ बढि झोटा झकझोर ॥ ७ ॥ बरजैं दूनी हठि चढ़ैं नां सकुचैं न सँकाय ॥ तूटत कटि दुमची मचकि ॥ लचकि लचकि बचि जाय ॥ ८ ॥ भान भवन भइ भीर मिलि झुंडन झूलत बाल ॥ सखी भेष तहां देखही ॥ रूप लालची लाल ॥ ९ ॥

## राग मालव ॥ तिताल ॥

नव कदंब नव अंब ललित जहां झुलवत सघन द्रुमन तर प्यारी ॥ सघन बृच्छ तर भीर जहां अति रमकत प्रान पिया संग प्यारी ॥ जुही केतकी चंपावलि छबि तरु तमाल अति छबि उनिहारी ॥ झुंडन झुंडन गावत सुंदर रँग रँग लाला बनी सुक्यारी ॥ प्रीतम लखि अपने मनवारैं नगधर प्रान जीवन बलिहारी ॥ १ ॥

## ॥ राग कानरो ॥ ताल धमार ॥

हरियाली अमावस प्रसन्न हैं सखी गनादि ॥

हरित कदंब भूमि हरियारी हरी अमावस हर्‌यो समाज॥
हरी सवारी साज चल्यो हैं हरी गाज सब हिन मनराज॥
हरि तनया प्रफुलित हरि गुंजत हरि सोभा सुख धाम॥
हरित लतनि मैं हरित हिंडोरा हरि सँग झूलत हरि मुख वाम॥
हरी कुंज गहवर हरियारी हरि सोभा बरनी नहिं जात॥
हरे रतन तन वसन हरे रंग हरी पहुप माला सरसात॥
हरी हरी पर सोभित अद्भुत हरि बरसत हरि लायो॥
हरी राग गावत मुरली मैं मधुरैं मन हरि भायो॥
हरि वरनी हरि गमनी री तू हरि लोचनि मदमाती॥
हरि कटि लचकत संग झूलन मैं हरि बैनि उछराती॥
हरखि हरखि गावत मधुरै सुर॥ भई हरी रंग राती॥
नगधर हरी हरख हरियारैं हरी हरी सबहिन मन भाती॥ १॥

॥ १॥ अथ टीका॥ राग कानरो॥ हरित कदंब इति॥ कवि पूर्ण श्रृंगार रस वर्णन करत हैं॥ तहां सखी को वचन प्रियाजी सौं॥ हरित कदंब भूमि हरियारी॥ याके दोय अर्थ॥ सघन कदंब के नीचैं की भूमि॥ तापर॥ हरियारी॥ कहिये सबजी॥ हैं॥ अथवा हरे कदंब की॥ यह भूमि हैं स्थान हैं॥ तामैं हरि की यारी प्रीत हो रही हैं॥ हरी अमावस कहियैं॥ हरियाली अमावस को दिवस हैं॥ काम हू को रंग स्याम हैं॥ अमावस की रात्रि भी स्याम हैं॥ यासौं पूर्णकाम अथवा अभिसार मैं अविघ्नता यह ध्वनि॥ हरयो समाज कहियैं॥ सखीनादिक को समाज सो हरयो हो रह्यो हैं॥ प्रसन्न हो रह्यो हैं॥ या समय मैं हरी जो कामदेव सो सवारी साज कैं चल्यो हैं॥ माननी के हेत॥ अरु हरि जो इंद्र ताकी॥ गाज गर्जना सबहिन के मन मैं राज राजैं॥ मान काहूके नहीं रहतहैं॥ हरि तनया हरि जो सूर्य ताकी पुत्री॥ श्री यमुनाजी॥ ता मैं प्रफुल्लित हरि॥ हरि जो कमल सो प्रफुल्लित हैं॥ तापैं हरि



गुंजत॥ हरि जो भ्रमर सो गुंजार करैं हैं॥ या समय की सोभा सुख को धाम हैं॥ हरित लतनि मैं यह जो हरीलता हैं॥ तिन मैं हरित हिंडोरा॥ हरीलता को हिंडोरा तामैं॥ हे हरि मुखवाम हरि जो चंद्रमा जैसो हैं मुख ऐसी जो तू वाम॥ सो हरि जो प्रभू तिनके संग मैं झूलत हैं॥ यहां वामपद हैं सो॥ पहिलें मान कीनौं हो॥ ताको सूचक हैं॥ वाम नाम दुष्ट को भी हैं यातैं तूं मान रखती तो कैसैं यह आनंद कौं प्राप्त होती यह ध्वनि॥ हरिकुंज॥ कुंज हरी हो रही है॥ अरु गहवर हैं॥ सघन हैं॥ हरियारी हरि॥ हरि नाम॥ बन ताकी हरियारी की सोभा वरनी नहीं जात हैं॥ हरे रतन जो पन्ना तिनके आभूषन हैं॥ तन जो शरीर॥ अरु वसन जो॥ वस्त्र सो हरे हैं॥ शरीर तो दोऊनको आनंद सौं॥ महमह्यो॥ हो रह्योहें॥ अरु वस्त्र हरे रंगके हैं॥ अरु हरि जो कमल तिनके पुहप की माला हैं सो सरसात हैं॥ आछी लागत हैं॥ हरे मैं आरक्त की सोभा अधिक होत हैं॥ हरी हरी मैं सोभित॥ हरी जो इंद्रधनुष सो हरी मैं आकास मैं सोभायमान हैं॥ अरु अद्भुत हरि वरषत है॥ हरि जो जल सो अद्‌भुत वरषै है॥ या समै॥ उतको मेह वरषै हैं॥ वरषैं हैं॥ इते रूप जल यह अद्भुतता ताकौं हरि जो पवन सो लायो हैं॥ वह पवन प्रेरित हैं॥ यह पवन की उद्दीपन शक्ति तैं स्वेद सात्विक हैं॥ हरी जो प्रभु सो मुरल मैं मधुरैं मधुरता सौं राग गावत हैं॥ राग मल्लारादि॥ अथवा॥ राग तिहारो ही अनुराग ताकौं गावैं हैं॥ सो मन हरि हैं॥ मन कौं हरैं हैं॥ भायो हैं॥ आछो लागैं हैं॥ री राधे तू हरिवनरनी हैं॥ हरि जो स्वर्ण जैसो तेरो रंगहैं॥ फेर हरि जो गज ताके गमन सो मंद गमन हैं॥ अरु हरि जो मृग ताके नेत्र से॥ चंचल लोचन नेत्र हैं॥ फेर मदमाती हैं॥ जोवन के मद सौं॥ अथवा रूप के मद सौं॥ अथवा मान करि कैं पति कौं स्वाधीन करि लियो॥ यही मद॥ हरि जो सिंह ताकी कटि जैसी क्षीण कटि हैं सो प्रीतमके संग झूलन मैं लचकै हैं सो सोभा बढावैं हैं॥ ता समैं॥ हरि सर्प जैसी स्याम सचिक्कन जो वैनी सो

उछरैंहैं सो अति सुंदर हैं ॥ फेर हरखि प्रसन्न हो हो कैं आप भी मधुरैं सुर सौं गावत हैं ॥ भई हरी रंगराती याके दोय अर्थ ॥ हरी भई हैं ॥ प्रसन्न भई हैं ॥ अर रंग मैं राती हैं ॥ दूजो यह अर्थ ॥ हरी जो प्रीतम तिनके रंग मैं राती भई हैं। हरि सिवाय कछु नहीं दीसै तन्मय हो रही हैं ॥ यह ध्वनि ॥ नगधर कवि को नाम हरी राजा ॥ नगधर राजा हैं सो ॥ हरखि कैं चाह करि कैं ॥ हरियारैं हरि की प्रीत को ॥ अथवा हरियारी अमावस को वर्नन हैं ॥ तासौं ॥ या हरियारी बर्नन मैं ॥ हरी हरी पदके जमक की उक्ति सबहीके मनमैं भावती है ॥ आछी लागै हैं ॥ या मैं सखीकी उक्ति जमकालंकार असंलच्छ क्रम सौ पूर्ण श्रृंगार रस ध्वनि ॥ जमकालंकार को लच्छन भाषा भूषन ॥ दोहा ॥ जमक शब्द वह ही रहैं ॥ अर्थ जुदो व्हैं जाय ॥ जलद जलद आयो सखी ॥ हंसन हंस लखाय ॥ १ ॥ यामें हरि कटि ॥ हरि लोचनि ॥ हरि गमनी ॥ यहां वाचक धर्म उपमान लुप्ता भी हैं ॥ हरि वैंनी यहां ॥ वाचक धर्म लुप्ता ॥ हरि मुख वाम ॥ यहां परिकरांकुर ॥ ऐसैं अलंकार ओर हू हैं ॥ ग्रंथ विस्तार सौं नहीं लिखत हैं ॥ परंतु कवि बचन को चमत्कार जमक ही सौं हैं ॥ अंस लच्छ क्रम लच्छन सभा प्रकाश को दोहा ॥ अंस लच्छ क्रम होत हैं रस भाव ध्वनि मांहि ॥ जानत है सब सुकवि वर या मैं संशय नांहि ॥ १ ॥ रस के उदाहरन सो रस ध्वनि ॥ दोऊन की प्रीति स्थाई भाव हैं ॥ नायक नायिका आलंबन विभाव ॥ गान वर्ष सखी हरियारी अमावस इत्यादि उद्दीपन विभाव ॥ हर्ष लज्जा मदादिक संचारी ॥ चितवनादि अनुभाव ॥ अद्भुत हरि वरसत यहां स्वेदसात्विक भाव ॥ ऐसैं पूर्ण रस ॥ अनेकार्थ मंजरी कोस के ॥ दोहा ॥ इंद्र चंद्र अरविंद अलि कपि केहरी के कान ॥ कंचन काम कुंरग वन घन को दंभ नभ भान ॥ १ ॥ पानी पावक पवन पय गिरि गज नाग नरिंद ॥ ए हरि इनके मुकट मनि हरि ईश्वर गोविंद ॥ २ ॥ इति ॥ पिंगलको ॥ लघु गुरु गुरु लघु होत हैं ॥ निज इच्छा



अनुसार ॥ इति ॥ राग कानरा ताको लच्छन ॥ कृपाणपाणिर्गजदंत्यपत्रमेकं वहन् दक्षिणहस्तके न ॥ संस्तूयमानः सुरचारणौघेः कर्णाटरागः शिखिनीलकंठः ॥ १ ॥ दोहा ॥ जमक हिंडोरा यह रच्यो ॥ नृपति जवान प्रवीन ॥ आसय सुनि तिंहिं निज सुमुख ॥ जय कबि टीका कीन ॥ १ ॥

अथ श्रीगुसांईजी विठ्ठलनाथजी कोटा मैं विराजै श्रीमथुरेशजी के टीकैत तिनकी भेट कियो सो पद

## ॥ सारंग रागे ॥ ताल यात्रा ॥

जयति गुरुदेव विठ्ठल सुचरणे ॥ सहस्राक्ष मायावाद खंड खंडन कियो भक्तिमंडन हेत प्राभंजन सुकरणे ॥ भक्त अंबुज हेत दिनकरसु वल्लभ सुवन जक्त मैं भक्त के येहि शरणे ॥ तजहु दुखदंद भव भज हु विठ्ठल चरन येही जगईश जगदीश धरणे ॥ भक्ति करुणानिधि सु जक्त आशक्तहू कृपा निज दृष्टि भव सिंधु तरणे ॥ पतित सूं पतित मो दीनकूं जानिकै दास नगधर सु सीस चरण धरणे ॥ १ ॥

अथ फुटकर ॥ राग परज ॥ तिताल ॥ देखीजी हो थांरी महर नजर ॥ जहर जुदाई प्याला पाया पूछी नहीं खैर खबर ॥ बिन देखैं अकुलावत लोचन अद्भुत रूप लहर ॥ नगधर प्यारे करहु न न्यारे सुंदर मंदिर महर ॥ १ ॥ राग माढ ॥ ताल गवाली ॥ थे तो मन भांवदा सुजाण ॥ दिलडारी पडी बुरी बांण ॥ टेक ॥ रैणदिहां समझाय रही हां ॥ अब तो टुक दिल आंण ॥ पल नहिं लागैं जिंद असाढे घायलकी सी बांण ॥ रंग रंगीला छैल छबीला नगधर प्रीत पिछांण ॥ २ ॥

दोहा ॥ चोपरि को ॥ हरित सार गहि रंग सूं जावक नखहि लगाय ॥
हरित भूमि पर चलत मनु बूढनि अति छबि पाय ॥ १ ॥

## सबैया ॥ राग जिलो ॥ ताल गवाली ॥

बोलत कीर सु कोकिल वानी हर्‌यारी लता नितही सुख साजैं ॥ नित्त वसंत रहैं छबि सौं सुनि रंगहि अंग धर्‌यो रति राजैं ॥ शोभित स्फाटिक श्रृंग शिला नग रूप धर्‌यो श्रीनगधर काजैं ॥ नीलम को रचि हार मनौं गिरराज तरैं जमुना छबि छाजैं ॥ १ ॥

रेखतो ॥ राग सोरठ ॥ ताल पिस्तुः ॥

शादिये मर्ग हुवा जो यार का ( दिलदारका ) मुखड़ा देखा ॥
जाफराखार को हँस हँस के यह मरता देखा ॥
हुवा दिल बेखबर मुजदा शदीदे जरब ज्यो आई ॥
जुदाई यार सैं गाफिल खुदाई कहर सरमाई ॥
फिराके यार सैं हरदम तसव्वर उसका रहता हैं ॥
देखैं बिन सांवला दिलवर वो नगधर याद आता है ॥ १ ॥

राग विहाग ॥

राधे तेरो आनन आनंद कंद ॥
दूजो ऐसो चहत विधाता निज कर रचौं सु चंद ॥
मुख मोरत देखैं मुख तेरो सम नहिं होत सुछंद ॥
फेरत हैं असमांन सांन पैं उद्यम करत अमंद ॥
पुन गहि टूक टूक कर जोरत जानत नहिं मति मंद ॥
सुंदरता आवैं नहीं सम तुव मुख कमल सुगंद ॥
नगधर कहैं देख मुख तेरो अद्भुत ओप विलंद ॥ १ ॥

राग सोरठ ॥ तितालो ॥

तैं तो चितवनि मैं मनमोह्यो हे रंगीली छैल भँवर रिझवार ॥
तूं तो महा मदन मनुहारी हे छबीली नवजोबन सुकुंवार ॥
टेक ॥ दोहा ॥ व्हैं अधीर चितवत फिरैं ॥ मृदु बोलनिकी आस ॥
तो देखैं बिन भांवतो ॥ आतुर तुव मुख प्यास ॥ १ ॥



लीनौं मानौं मानगढ हट लागी सुखरास ॥
प्रानपिया संग विलस सुख ॥ नटनां चलि पियपास ॥ २ ॥
रट लागी नंदलाल कैं । तू हठ ठान्यौं आज ॥
नटा नटी क्यौं करत हैं ॥ चलियैं नट सुखकाज ॥ ३ ॥
नगधर नटहि सुहांवनौं ॥ तुव नट लीनी वान ॥
हट तजि तुव किन नट भजो ॥ यह कहा लीनौं मान ॥ ४ ॥

राग सोरठ ॥ तिताल ॥

देख्या हे बिहारीजी सूं अब कुण बोलैं ॥
मनरी बात नही हैं छानैं अंतरदी द्दग खोलैं ॥
नेह लगायो कपटी हू सूं जन जनके गृह डोलैं ॥
देख्यो नगधर छैल अनोखो जण जणको मन तोलैं ॥ १ ॥

दोहा ॥ चमकत टीकी सौंहनी ॥ तर जरतारी ऐंन ॥
विधुतर शुक्र उदै भयो ॥ मनु छबि पियचित लैंन ॥ १ ॥
तुव मुखचंद उजास पैं गई ताब महताब ॥
छबि दूनी दरसी सुदुति पावत भूषन आब ॥ २ ॥

बरवैं ॥ सुंदरता अति सौहैं मोहैं काम ॥
लोयन रूप निहारो इन द्दग स्याम ॥ १ ॥
दोहा ॥ सालग्राम स्वरूप पैं ॥ चंदन विंदु सुहात ॥
मनौं मधुप के पीठ पैं ॥ पीत बिंदु दरसात ॥ १ ॥

दोहा ॥ प्रस्तावीक ॥

जिनहू के ढिग बैठिये जैसी कीजे वात ॥
मजनूं कौं लहलली बिना और न कछू सुहात ॥ २ ॥

काहू के दिल भात हैं काहू कौं न सुहात॥
मजनू कौं पूछो सला कहगा लहली बात॥ ३॥
वेद पुरान रु उपनिषद॥ पर शिक्षाके हेत॥
निज मन हि समझावनैं॥ इक पद पढि कर चेत॥ ४॥
जैसें तोप बंदूक सब॥ परमारनके हेत॥
निज मरिवे हित बहुत हैं॥ लघु चाकू जिय लेत॥ ५॥

## श्रीनृत्यगोपालो जयतितराम्

॥ अथ जलवा ए शहनशाह इश्क लिख्यते॥

अस्थाई॥ हुवा है अमल इश्क का दिल यार की जुदाई॥
हैरत है मुझकौ ऐ ज्यांन यह क्या कहर है खुदाई॥

## मंगलाचरनं॥ सोरठा॥

व्रज जन जीवन प्रान॥ है इलाहि महबूब नित॥
कृष्ण करैं जिंहिं ध्यान॥ है अधीन जिनके सदा॥ १॥
दोहा॥ हरि राधा हित रीत मैं॥ विप्रयोग रस सार॥
तहां प्रीत सो प्रेम हैं॥ सोइ इश्क निर्धार॥ २॥

॥ इश्क परमानंद वर्ननं॥

या मैं भेद न जानियैं॥ इश्क खुदाईरूप॥
विप्रयोग मैं प्रगट हैं॥ परमानंद स्वरूप॥ ३॥
ताही कौं शिर नाय कैं॥ ताही को जस गांउं॥
ताही की रजधांनि के॥ वरनन हित वर पांउं॥ ४॥

## ॥ इश्क शहनशाह वर्ननं॥

इश्क कौं राजा कहत हैं॥ या बिन फीकी बात॥
लौकिक लोक अलौकिकी॥ याही सौं छवि पात॥ ५॥



## ॥ रानी वर्ननं॥

लगन सु रानी इश्क की॥ या बिन प्रीत न होय॥
या बिन प्रेम जु होय तो॥ अंग हीन जग जोय॥ ६॥

## ॥ मंत्री वर्ननं॥

इश्क की कौन सला कहैं॥ कहैं सु जानैं भेद॥
मजनूं मंत्री इश्क का। जहां न पहुंचै वेद॥ ७॥

## ॥ नगर वर्ननं॥

वृंदावन यह नगर हैं॥ जहां इश्क को राज॥
घर घर डौंडी फिर रही॥ नागर प्रीत सु काज॥ ८॥

## ॥ गढ वर्ननं॥

आशिक का दिल दुर्ग हैं॥ इश्क पनाह की ठोर॥
ढव कैं धावा देत हैं॥ दिलदारौं की ओर॥ ९॥

॥सिंहासन ओ अदालत ओ अदालत का अध्यक्ष का वर्ननं॥

आशिक के शिर तख्त पैं॥ बैंठ इश्क सरताज॥
जुल्म अदालत का दिया॥ महबूबौं कौं राज॥ १०॥

॥ जल्लाद वर्नन॥

कहर नजर महबूब की॥ लियैं तेग जल्लाद॥
इश्क राह चलते जिन्हें॥ मारैं करि आल्हाद॥ ११॥

## ॥ छत्र वर्ननं॥

रस सिंगार सो छत्र हैं॥ इश्क नृपति के सीस॥
ताकी छांह सु जगत पर॥ सब कौं सुखद वरीस॥ १२॥

## ॥ चंवर वर्ननं॥

चंवर हास्य रस सौं हुवैं॥ इश्कराज को बोध॥

प्रीत रंग उज्जल लसैं ॥ चित सात्विक कौं शोध ॥ १३ ॥

॥ अगरधूंम वर्ननं ॥

आशिक स्वास उसास यह ॥ मनहु अगर की धूंम ॥
इश्क राज दरबार मैं ॥ खूब रगमगी घूंम ॥ १४ ॥

॥ धनुष वान वर्ननं ॥

भौंह धनुष महबूब की ॥ वरुनी नावक तीर ॥
इश्क हाथ सौं चलत हैं ॥ व्हैं आशिक चित पीर ॥ १५ ॥

॥ ध्वजा वर्ननं ॥

अलक ध्वजा महबूब की इश्कद्वार फहरान ॥
मानौं आशिक जीत हित ॥ वैरख खुली निसान ॥ १६ ॥

॥ सदियाने वर्ननं ॥

निंदा सदियाने घुरत ॥ इश्क नृपति के द्वार ॥
कितेक जन डर भजत हैं ॥ सुनि घूंमैं रिझवार ॥ १७ ॥

॥ मुसद्दीवर्ननं ॥

इश्क दिली हैं दिलरुवा ॥ सदा सुघर सुख दैंन ॥
यार जुदाई मेटता ॥ हैं जु मुसद्दी मैंन ॥ १८ ॥

॥ कोतवाल वर्ननं ॥

दिल कौं जकड कैं वस किया ॥ महबूबौं के बैंन ॥
यह कुतवाली कर रहे ॥ इश्क सैंन के अैंन। १९ ॥

॥ दूत बर्ननं ॥

चितवन टेढी वंक हैं ॥ यह कुतवाली दूत ॥
आशिक मन कौं गहत हैं ॥ हुक्मरवां मजबूत ॥ २० ॥

॥ भाट वर्ननं ॥



भाट नागरीदास नृप ॥ इश्क शहनशा हेत ॥
सब जग मय जाहिर किया ॥ इश्क चिमन रस केत ॥ २१ ॥

॥ हस्ती वर्ननं ॥

इश्क मदोन्नत मत्तता ॥ सोई मत्त गयंद ॥
लाज अगम सौं नहिं रुकैं ॥ तोडैं संकुल फंद ॥ २२ ॥

॥ अश्व वर्ननं ॥

मन तुरंग हैं इश्कको ॥ पहुंचैं जाय तुरंत ॥
महबूवौं के नगर मैं ॥ फिर फिर जात फिरंत ॥ २३ ॥

॥ रथ वर्ननं ॥

करैं मनोरथ मिलनका ॥ सोई आशिक रत्थ ॥
शिर के पावौं सौं चलैं ॥ जब वे पावैं पत्थ ॥ २४ ॥

॥ हरोलवर्ननं ॥

करैं हरोली इश्क की ॥ नैंन सैंन मधि खूब ॥
तीखी चितवनि झांकि कैं ॥ फते करैं महबूब ॥ २५ ॥

॥ सेना बर्ननं ॥

राग रागिणी इश्क की ॥ चतुरंगिनि सैना ह ॥
घायल सुन मन होत हैं ॥ कर सायल वैना ह ॥ २६ ॥

॥ नकीब वर्ननं ॥

आशिक तडफ के बोल यह ॥ मानौं कौल नकीब ॥
अहतमाम करि अनख सौं ॥ इश्क अदब तरकीब ॥ २७ ॥

॥ कोश वर्ननं ॥

आशिक का सर्वस्व हैं ॥ महबूबौं के चित्त ॥
तन मन कौं पोषैं सदा ॥ यह ही याके वित्त ॥ २८ ॥

## ॥ मेघ वर्ननं ॥

इश्कराज के राज मैं ॥ अंसुवनि जल को मेह ॥
वासौं सब बन हरित हैं ॥ या सौं सूकत देह ॥ २९ ॥

## ॥ पवन वर्ननं ॥

बेपरवाई पवन हैं ॥ आशिक दिल झक झोर ॥
कहर खुदाई का चला ॥ अजब हवाई तोर ॥ ३० ॥

## ॥ बाग वर्ननं ॥

हुस्न बगीचा इश्क का ॥ छवि पर भंवर लुभाय ॥
यही तजल्ली ज्यान की ॥ मेरे जिय अति भाय ॥ ३१ ॥

## ॥ कैदी वर्ननं ॥

आशिक कैदी इश्क का ॥ पडी जुल्फ जंजीर ॥
सूता मिजगां तीर पर ॥ ल्याता चित नहिं पीर ॥ ३२ ॥

## ॥ खेमा वर्ननं ॥

महबूबौं की कीरती ॥ खेमा तने उतंग ॥
इश्कराज के रहन के ॥ रंगे रंग सुरंग ॥ ३३ ॥

## ॥ फल स्तुति बर्ननं ॥

इश्क शहनशाह को जु यह ॥ जलवा कियो बनाय ॥
चहत मरातब इश्कसौं ॥ तो पढ इहिं चित लाय ॥ ३४ ॥

## ॥ कवि मन भाव वर्ननं ॥

नगधर लखि चित अटकि कैं ॥ पर्‌यो गिर्‌यो मधि फंद ॥
ज्यौं बालक लडबावरो ॥ चहत खिलौंना चंद ॥ ३५ ॥
पैंताली उगनीस सैं ॥ प्रथम चैत्र कुजवार ॥
ऋतु बसंत पून्यौं सुतिथि ॥ कीनौं ग्रंथ उचार ॥ ३६ ॥

इति श्रीमहाराज श्री जवानसिंहजी कृत जलवा ए शहनशाह इश्क संपूर्णम् ॥



॥श्रीः ॥

( बाबू राधाकृष्णदास लिखित )

श्री नागरीदास जी का जीवन चरित्रम्

पिय प्यारी अनुराग मधु, मत्त मधुप सुखरास।
गुप्त प्रेम अनुभव छके, जपति नागरीदास॥

आज हम उस महानुभाव भगवदंश महात्माके चरित्र लिखनेमें प्रवृत्त हुए हैं, जिसके गुप्त प्रेमानुभव भाव को स्मरण करतेही सहृदय रसिक मात्र को रोमांच होता है, और जिसे भाषा का जयदेव कहने पर भी हृदय को संतोष नहीं होता। आहा! हमारे प्यारे नागरीदासजी के प्रेम रंग रँगें चित्र का जो महाशय दर्शन करैंगे वे अनुरागरसमत्त झुके और डबडबाए नेत्रों में अलौकिकता की झलक से अवश्य मोहित से हो जायेगे और जैसा महानुभाव भगवदीयों के दर्शन मात्र से अपने चित्त का विलक्षण परिवर्तन होता है उसका अनुभव प्राप्त कर सकेंगे। हम यहाँ उनके हृदय के चित्रस्वरूप इस पद को अपने प्रिय पाठकों को सुनाये बिना आगे नहीं बढ़ सक्ते-

''गावनि रोवनि मौनहि में व्है मौनहिं मांझ सराहनि। रोके ऊर्द्ध उसास मौन मैं यह दुख कठिन निवाहनि॥ बरे बिजाती निकट काठ से लगे रहैं हिय दाहनि। नागर सुखसागर किन मेटौ यह अब दुख अवगाहनि॥ १॥''

नागरीदास इस नाम के चार महात्मा हुए हैं। सबसे प्रथम श्री बल्लभाचार्य महाप्रभु के

---

* मेरी इच्छा बहुत दिनों से श्रीनागरीदासजी का जीवन चरित्र लिखने की थी, परन्तु ठीक २ पता न लगने से न लिख सका, मित्रवर बाबू अमीरसिंहजी द्वारा कई ग्रन्थों के मिलने से वह इच्छा पूरी हुई और एक जीवनी लिखी थी जो कि ''नागरीप्रचारिणी सभा'' के उत्साही सभ्योंकी इच्छानुसार ता०२४ मार्च सन १८९४ ई० को सभामें पढ़ी गई थी। सभा के अनुरोध से ''खड्गविलास यंत्रालय'' के स्वामी महाराजकुमार बाबू रामदीनसिंहजी ने अपने यंत्रालय में उसको छाप कर प्रकाशित किया था। परन्तु उससे मुझे संतोष न हुआ। मैंने अपने मित्र कुंअर जोधसिंह जी मेहता की कृपा से कृष्णगढ़ के दीवान राव बहादुर श्यामसुन्दरलालजी द्वारा कृष्णगढ़ के कवीश्वर जयलालजी से नागरीदासजी के वृतांत मँगाए, उसके देखने पर मेरे हृदय में कई सन्देह हुए और उनको लिखकर उन सभों के उत्तर मँगाए और तब जीवनी लिखनी आरम्भ की, इसी बीच में पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजी ने इनकी जीवनी पर एक लेख एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल में छपवाया, जिसे देख कर और भी उत्साह बढ़ा और यह जीवनी लिख आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करता हूँ तथा उक्त महाशयों को धन्यवाद देता हूं।

इसके पहिले संस्करणमें भ्रम से महाराज सावंतसिंह के स्थानपर महाराज जसवंतसिंह छप गया था।

आगरा में रहते थे, जिनकी कथा ''चौरासी वैष्णवों की वार्त्ता'' में है और जिनके विषय में गोस्वामी श्रीहितहरिवंशजी के शिष्य श्री ध्रुवदासजी ने अपने ग्रन्थ ''भक्तनामावली'' में लिखा है :-

ध्रुवदासजी ने सम्वत १६८६ में ''श्री बृन्दाबन सतक'' और सम्वत् १७०२ में

''रहसि नेही नागरिदास अति, जानत नेह की रीति
दिन दुलराई लाड़िली, लाल रंगीली प्रीति'' ॥ २ ॥मंजरी''

बनाई थी, परंतु ''भक्त नामावली'' में सम्वत् नहीं लिखा।

इन्हीं बड़े नागरीदास जी के विषय में भारतेन्दु श्रीहरिश्चन्द्र ने अपने ''उत्तरार्द्ध भक्तमाल'' में लिखा है :-

''हिय गुप्त वियोगहि अनुभवत बड़े नागरीदास है।
बारवधू ढिग वसत सबै कछु पीयो खायो॥
पै छनहूं हिय सों नहिं सो अनुभव बिसरायो।
सुनतहिं विठ्ठल नाम भक्त मुख श्रवन मझारी॥
प्रान तज्यो कहि अहो अजौं सुधि जिन्हैं हैं हमारी।
दरसनही दै हरि भक्त अपराध कुष्ट जो दुख दहे॥''

महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य का जन्म सम्वत् १५३५ हुआ था, अतएव, उसी के लगभग इनका भी काल है।

दूसरे नागरीदास जी श्रीस्वामी हरिदासजी के शिष्य परम्परा में हुए है। मिस्टर 'भोस' साहब अपने ''मथुरा'' नामक ग्रन्थ में यह परम्परा यों लिखते हैं- श्री स्वामी हरिदास के शिष्य विठ्ठलविपुलजी ( जो कि उक्त स्वामी के चाचा थे ) उनके बिहारिनिदास और उनके नागरीदासजी। सम्वत १५३७ में श्रीस्वामीजी लीला में प्राप्त हुए ओर उनकी गद्दी पर विठ्ठल विपुलजी विराजे। यदि २० वर्षकी अवधि महंती की मानली जाय तो श्री नागरीदासजी का सम्वत १५७७ के लगभग होता है। इनके विषय में ध्रुवदासजी लिखतेहैं।

'नागरि अरु हरिदास मिलि, सेये नित हरिदास।
बृन्दावन पायो दुहूनि, पूजी मन की आस॥ १॥

तीसरे नागरीदासजी श्री गोस्वामी हितहरिवंशजी वा श्रीकृष्ण चैतन्य महाप्रभुके सम्प्रदाय में हुए हैं, इनका काल भी १५५० सम्वत् से १६०० के लगभग समझना चाहिए। इनके विषय में ध्रुवदास जी लिखते है:-

''रमन दास अद्भुत हुते, करतकबित्त सुढार।

१ ''इन नागरीदासजी का नाम चौरासी वैष्णवोंकी वार्ता में तथा दो सो बावन वैष्णवों की वार्ता में नहीं मिला, परन्तु ग्रंथकर्ता बाबूराधाकृष्ण दासजी के लिखने से लिखा।



बात प्रेमकी सुनतही, छुटत नैन जलधार॥ १॥
बौरोरस मैं फिरै सो, खोजत नेह की बात।
आछे रस के बचन सुनि, बेगि बिबस व्है जात॥ २॥
कहा कहौं मृदुल सुभाउ अति, सरस नागरीदास।
बिहारी बिहारिनि को सुजस, गायो हरषि हुलास॥ ३॥

इन दोनों नागरीदासजी के विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं।

''श्रीवृन्दावन के सूरससि, उभय नागरीदास जन।
* निज गुरु श्रीहरिवंश कृष्णचैतन्य चरनरत॥
हरि सेवा में सुदृढ़, काम क्रोधादि दोष गत।
अद्भुत पद बहु किए दीनजन है रस पोषे॥
प्रभु पद रति बिस्तारि भक्त जन मन संतोषे।
दृढ़ सखी भाव जिय मैं बसत सपनेहूं नहिं कहुं औरमन।

चौथे नागरीदासजी हमारे ग्रन्थ के नायक महाराज सावंतसिंह कृष्णगढ़ ( राजपूताना ) नरेश उपनाम श्रीनागरीदासजी हैं। ये महाप्रभु वल्लभाचार्य संप्रदाय के शिष्य थे। इनके विषय में भारतेंदुजी लिखते हैं :-

''हरि प्रेम माल रस जाल के नागरिदास सुमेर भे।
वल्लभ पथहिं दृढाइ कृष्णगढ़ राजहिं छोड्यो।
धन जन मान कुटुम्बहिं वाधक लखि मुख मोड्यो॥
केवल अनुभव सिद्ध गुप्त रस चरित बखाने।
हिय संजोग उच्छलित और सपने हुँ नहिं जाने।
करि कुटी रमण रेती बसत संपति भक्ति कुवेर भे॥''

भाषा कवि चूडामणि श्री आनन्दघनजी से इनसे बड़ा ही प्रेम था। हमारे यहा ** एक अत्यंत प्राचीन चित्र है, जिसमें नागरीदासजी और धनआनंदजी एक साथ विराजते हैं। घनआनंदजी के विषयमें भारतेंदु बाबू हरिश्चन्द्रजी ''सुजानशतक'' की भूमिका में लिखते है:-

''आनंदघनजी जाति के कायस्थ थे और मुहम्मदशाह के मुन्सी थे। गानविद्या और कविता दोनों विषयों में अति कुशल थे और सच्चे प्रेमी थे। अंत समय में घर छोड़ कर श्री वृन्दाबन बास करते थे। नादिरशाह ने जब मथुरा लूटी तो उसी मार काट में ये भी मारे गए।''

''शिवसिंह सरोज'' में इनका समय सम्वत् १७१५ लिखा है।

ठीक यही बात नागरीदास जी के विषय में भी प्रसिद्ध है कि मथुरा के कत्लेआम

* यहां भ्रम होता है। ** बाबू राधा कृष्णदास जी के यहाँ

कट गए, परन्तु श्रीवृन्दावन बास न छोड़ा, परन्तु ''वनजन प्रशंसक'' ग्रन्थ में, जिसे नागरीदासजी ने सम्वत् १८१९ में बनाया वे लिखते हैं:-

''अष्टादश शसदश जु नव सम्वत् माघ सुमास।
वनजनप्रसंस ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास॥''

इससे प्रमाणित हुआ कि सम्वत् १८१९ तक नागरीदासजी वर्तमान थे और सम्वत् १८१४ [ १७५७ ई० में ] शाह आलम सानी के समय में अहमद दुर्रानी ने मथुरा में कत्लेआम किया था। इस विषय में कबीश्वर जयलालजी ने मुझे* यह लिखा है:-

''कत्लेआम होने की ख़बर यहां कृष्णगढ़ रूपनगर में गुप्त आ पहुँची थी, नागरीदासजी के छोटे भाई बहादुरसिंहजी और नागरीदास जी के पुत्र सरदारसिंहजी ने इनको अर्जी लिखी थी कि कुटुम्बयात्रा के लिये यहाँ अवश्य पधारें, तब इस धोखा दई से यहाँ आगए थे, फिर छः महीने रह कर पीछे वृन्दावन ही पधार गए।

सं० १८२१ की भादव सुदी ३ को वृन्दाबन ही में परलोक निवासी हुए वहाँ उनकी छतरी है, जिसमें लेख भी है।''

चारों नागरीदासजी कविता करते थे और ये सब कविता ऐसी मिल जुल गई हैं कि कुछ पता नहीं लगता कि कौन कविता किसकी है, परंतु यह भ्रम व्यर्थ है, क्यों कि कृष्णगढ के पुस्तकालय में श्रीनागरीदासजी के वर्तमान समय के सर्वग्रंथ उनके हस्ताक्षरों सहित अद्यापि हाजिर है। इससे इनकी वाणी का दूसरे नागरीदासजी की वाणी में मिल जुल जाना यह भ्रम व्यर्थ है और राज नागरीदास की अलौकिक कविता में कुछ ऐसा माधुर्य और गूढ भाव भरा है कि थोड़े ही काल में इसकी झनकार सहृदय मात्र के हृदय में गूंज उठी और हिन्दी भाषा के कवियों के सुकुटमणि का स्थान इन्होंने पाया।

हमकों खेद है ''शिवसिंहसरोज'' में शिवसिंहजी ने इनका सम्वत् बहुत ही अशुद्ध लिखा है। उन्होंने सम्वंत् १६४७ लिखा है। यदि कहा जाय कि उन्होंने पहिले के नागरीदास में से किसी का वर्णन किया है तो यह इससे अशुद्ध ठहरता है कि निम्नलिखित सवैये जो ''शिवसिंह सरोज'' में उक्त कवि की कविता में लिखे गये हैं वे महाराज सावंतसिंह उपनाम नागरीदासजी के ग्रन्थों में पाये जाते हैं और यदि इनके समझे जायें तो समय ठीक नहीं हैं, क्योंकि इनका जन्म सम्वत् १७५६ का है- १०८ वर्ष का अन्तर है और इसी विश्वास पर डाक्तर ग्रियर्सन साहब ने * इनके जन्म का समय सन् १५९१ ई० अपने ग्रन्थ **The Modern Vernacular Literature of Hindustan** में दिया है। पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजीने अपने लेख **Antiquity of the poet Nagari Das*** में इनके जन्म का समय ठीक दिया है, परंतु शिवसिंह+ और डाक्तर ग्रिअर्सन के भ्रम को स्पष्ट नहीं दिखलाया है, क्योंकि यदि समय के अनुसार इन्हें छोड़ पहिले नागरीदासों में

* बाबू राधा कृष्णदास जी के नाम



कोई माने जाय तो कविता नहीं मिलती और कविता के अनुसार ये माने जाय तो समय ठीक नहीं।

''भादो की कारी अंध्यारी निसा लखि बादर मंद फुही बरसावै। श्यामाजी अपनी ऊँची अटा पै छकी रस रीति मलारहि गावै॥ ता समै नागर के दृग दूरि वें चातिक स्वाति की बूँद यों पावै। पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनी दीप दिखावै॥ १॥''

''देवन की और रमापति की दोउ धाम कीं बेदन कोन बडाई। संखरु चक्र गदा पुनि पद्म सरूप चतुरभुज की अधिकारी॥ अमृतपान बिमानन बैठिबो नागर के जिये नेक न भाई। स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाहीं तौ कोरी कहा ले करै ठकुराई॥ २॥''

''गांस गंसोलिये बातैं छिपाइये इश्क ना गाईये गाईये होलियां। गेंद बहाने न बीरा चलाइए सूंधे गुलाल उड़ाइये झोलियां॥ लोग बुरे चतुरे लखि पावैंगे दाबे रहौ दिल प्रीति कलोलियां॥ पाइ परौं जू डरौ टुक नागर हाइ करौ जिनि बोलियां ठोलिया॥ ३॥''

इन कविताओं में कुछ पाठांतर नागरीदासजी के ग्रन्थों से हैं, जिसे पण्डित मोहनलाल विष्णुलाल पंड्याजी ने लिखा है उसका आशय नीचे प्रकाशित करते हैं :-

''हमारी पास इनके ग्रन्थों के संग्रह में नम्बर ३८ पत्र १९२ में एक अधूरा ग्रन्थ ''वर्षा के कवित्त'' हैं, जिसमें केवल ८ कवित्त हैं, उसका सातवाँ कवित्त यह है, इसमें बड़ा पाठांतर यही है कि शिवसिंह ने जहाँ नागर लिखा है, वहाँ इसमें 'मोहन' है:-

भादौं की कारी अंध्यारी निसा झुकि बादर मन्द फुही बरसावै। श्यामा जू आपनी ऊंची अठा पै छकी रस रीत मलारहि गावै॥ ता समै मोहन की दृग दूरि ते आतुर सूप ( रूप ) की भीष यों पावै। पौन मया करि घूंघट टारै दया करि दामिनि दीप दिखावै॥ ७॥

उसी संग्रह में नम्बर ३५ पत्र १८४ में ''होरी के कवित्त'' नामक ग्रन्थ है, जिसमें १९ कवित्त हैं, उसका १९वाँ कवित्त यह है, इसमें भी बड़ा अंतर यही है कि नागर के स्थान पर भावते लिखा है।

गास गसीलीये बातैं छिपाइये इश्क न गाइये गाइये होलियां। गेंद बहाने न बीरा चलाइये सूधे गुलाल चलाइये झोलियाँ॥ लोग बुरे चतुर लखि पावैंगे दावे रहो दिल प्रीति कलौलियां। पाय परौं ज डरो टुव भावते हाय करो मति ठोलियाँ॥ १९॥

उसी संग्रह में नम्बर ४१ पत्र २५६ ''फाग बिहार'' नामक ग्रन्थ है उसमें यह सवैया ८वाँ है॥

देवन केरु रमापति के दोऊ धाम की देवनि कोनी बड़ाई। संखरु चक्र गदा अरु पद्म सरूप चतुर्भुज की अधिकाई॥ अमृतपान बिमानन बैठिबो जेती वही तेती एक न भाई। स्वर्ग बैकुंठ में होरी जो नाही तौ कोरी कहा लै करे ठकुराई॥ ८॥

कविता में नागरिं, नागर, नागरीदास और नागरिया नाम रखते थे। इनका कुल सदा

से वीर वैष्णव चला आता है। इनके हृदय में राजकाज में फँसे रहने पर भी सदा उज्ज्वल प्रेमशिखा प्रदीप्त थी और श्रीवृन्दावन के लिये तरसा करते थे जैसा कि उनके पदों से झलकता है :-

''ज्यों ज्यों इस देखियत मूरख विमुख लोग त्यों त्यों सुखरासी ब्रजबासी सुधि भावै है। खारे जल छीलर दुखारे अंधकूप चितै कालिन्दी के काज महामन ललचावै है॥ जैसी अब बीतत सु कहत न आवै बैन नागर न चैन परै प्रान अकुलावै है। थोहर पलास देखि देखि कै बबूल बुरे हाय हरे, हरे वे तमाल सुधि आवे है॥''

कृष्णगढ राज्य का ७२४ मील मुरब्बा है। सन् १८८१ ई० में इसमें ११२६३३ मनुष्यों की बस्ती थी, जिनमें ४९०९८ पुरुष और ५३५३५ स्त्रियां, ये लोग ३ नगर और २१० गावों में रहते हैं, और सब २४९२८ घर है; जिनमें ९७८४६ हिन्दू, ८४९२ मुसलमान और ६२९५ जैन रहते थे। इस राज्यमें कृष्णगढ़ ( राजधानी ) रूपनगर और सरवार ये तीन नगर हैं।

इस राज्य को जोधपुर महाराज उदैसिंह के द्वितीय पुत्र कृष्णसिंह ने पैतृक अधिकार को छोड़कर अब जिस देश में कृष्णगढ राज्य है, उसे विजय किया।

कृष्णगढ़ नगर बहुत ही सुन्दर गूंदोलाव नामक तालाब के किनारे पर बसा है, जिसके बीच में महाराज का बाग मुहकम विलास बना हुआ है, नगर में श्रीमदन मोहनजी, श्री ब्रजराजजी, श्री द्वारकानाथजी, श्री गोवर्द्धननाथजी तथा मोहनलालजी सुखनिधानजी, नरसिंहजी का मंदिर है ओर जैन के मंदिरो में चिन्तामणिजी का मंदिर मकराणे के पत्थर का बहुत अच्छा है। कृष्णगढसे १२ मील पर सलेमाबाद में एक निम्बार्क संप्रदाय का मन्दिर है, जिसमें उस प्रान्त के बहुत से हिन्दू यात्री दर्शन के लिए आया करते हैं और निम्बाकों में यह गद्दी सबसे बडी है, जैसे कि वल्लभकुल संप्रदायमें श्रीनाथद्वारा की गद्दी है और सलेमाबाद में ठाकुरजी विराजते हैं जिनका नाम श्रीराधामाधवजी है। यह स्वरूप कविचूड़ामणि जयदेवजी के मस्तक के हैं। मूर्ति अति बिसाल मनोहर है और श्री सर्वेश्वरजी का स्वरूप भी वहीं विराजता है, जो कि सनकादिकों के सेव्य है ऐसी प्रसिद्ध ख्याति है।* और सलेमाबादके दक्षिण दिशा में पंडित श्रीधरकी १ छोटीसी वाटिका है, जिसमें हनुमानजीकी मूर्ति अति बिसाल है, इस लघु धाम का नाम बहुत देशांतरों में फैला है, कारण पं० श्रीधरके ज्ञा० सा० छा० की पुस्तकें या पंचांगों मात्र में सर्वत्र इस ग्राम का नाम लिखा जाता है। इससे कृष्णगढ़ राज्य के स्थापना के विषय में कृष्णगढ़ दरबारके कबेश्वर जयलालजी ने मेरे प्रश्नके उत्तर में यह लिखा है:-

''सम्वत १६५४ में जोधपुर से पृथक राज्य, प्रथम तो 'हिंडोण' में हुआ और फिर 'सेठोलाव' में जो कि कृष्णगढ़ से पश्चिम तरफ २ मील के लगभग दूरी पर है, वहाँ हुआ

(Dr. Hunter's Imperial Gazeteer of India Vol. V Page 223)



और महाराज श्रीकृष्णसिंहजी ने सम्वत् १६६८ में कृष्णगढ़ बसाया''

ये महाराज कृष्णसिंहजी श्री वल्लभकुलके अनुयायी वैष्णव थे और तब से बराबर यह कुल उन्हींका अनुयायी चला आता है, इस विषयके प्रश्नोत्तरमें उक्त कवीश्वरजी लिखते हैं:-

''यह कृष्णगढ की राजधानी नियत करने वाले जो महाराज कृष्णसिंहजी थे, जबही से वल्लभाचार्यजी के अनुयायी है और उनके मस्तक पर दो स्वरुप श्री नृत्यगोपालजी के विराजते थे, वे दोनों स्वरुप अद्यापि यहां विराजते है, जिनमें एक स्वरुप श्रीदाऊजी का और दूसरा श्रीकृष्णजी का है और महाराज श्रीकृष्णसिंहजी नरवरगढ के कछवाहा राजा आसकरणजी+ जो श्रीवल्लभाचार्यजीके अनुयायी महा वैष्णव थे और जिनका प्रसंग वैष्णवोंकी वार्तामें है,जिनके भानजे थे।''

हिंडोण-पहिले अच्छा नगर था महाराष्ट्रों ने उसे नष्टकर दिया। प्राचीन प्राचीर टूटी फूटी पडी है। अब यह जयपुर राज्यान्तर्गत है।

(Dr. Hunter's Imperial Gazeteer Vol. V Page 414)

+ नरवरगढके कछवाहा राजा आसकरणजी-डाक्तर ग्रिअर्सन लिखते है- Askaan Das, the Kachhwaha Rajput of Narwargarh, in Gwaliyar Fl. C. 1550 A. D. Rag; He was son of King Bhim Singh See Tod II 392 Calc. Ch. II 390-The Modern Literature of Hindustan page 31 No. 71

यही शिव सिंहजी सरोजमें लिखते हैं। ( पत्र ६ नं० ३७ )

यह गोस्वामी श्री बिठ्ठलनाथजीके शिष्य थे, इनका चरित्र ''दो सौ बावन वैष्णवकी वार्ता'' में ( नं० २०२ ) जो लिखा है हम उनका संक्षेप यहां देते है:-

इन्हें रागपर बडी आसक्तिथी, देश देशान्तरके गवैयों का आदर सत्कार करते थे। एक समय तानसेन इनके यहाँ आए और उन्होंने ''कुँवर बैठे प्यारी के संग अंग अंग भरे रंग बलि बलि त्रिभंग युवतिन मनभाई'' गाया। राजा प्रेम से मत्त हो मूर्च्छित हो गए। चैतन्य होन पर पूछा यह किसका पद है? तानसेन ने बताया गोकुल के गोसाई बिठ्ठलनाथजी के शिष्य गोबिन्दस्वामी का। राजा तानसेन को दो सहस्त्र रुपैया देने लगे पर उन्होंने नहीं लिया कहा मैं रुपये का भूखा नहीं, गुण ग्राहक ढूँढता हूँ सो जैसा सुनाथा वैसा पाया'' तानसेन को संग ले राजा गोकुल आए और श्रीगोसांईजीके सेवक हुए श्रीगोसांईजी की आज्ञा से गोबिन्दस्वामी ने रमणरेती पर लिवा जाकर राजा को सेवा की रीति तथा कीर्तन सिखाये। तदन्तर राजा श्रीगुसाईजी की आज्ञा ले और श्रीमदनमोहनजी ठाकुरजी को सेवा के लिये पधरा अपने देश आये एक समय दक्षिण देश का कोई राजा इन पर चढ आया, इन्होंने सेवा में विघ्न न पडै, इसलिये विचार किया कि राज्य इसे सौंप आप गोकूल चल बसै। परंतु स्वप्नमें आज्ञा हुई कि मानसी सेवा कर और शत्रु से लड़, ऐसा ही किया और प्रभु की कृपा से जयी हुए। एक दिन

महाराज रूपसिंजी ने 'रूपनगर' बसाया और उसे राजधानी बनाया इस विषयमें उक्त कबीश्वर जी लिखते हैं-

''सम्वत् १६६८ में महाराज श्री कृष्णसिंहजी ने कृष्णगढ बसाया और राजधनी नियत की । फिर सम्वत् १७०० में महाराज श्रीरूपसिंहजी ने रूपनगर को राजधानी का आदि मुख्य स्थान नियत किया था, जबसे वहीं रहते थे, फिर महाराज नागरीदासजी के एक पीढी पीछे अर्थात् सम्वत् १८२३ के पीछे कृष्णगढ़ ही को पीछा राजधानी का मुख्य स्थान नियत किया, सो अद्यापि है और उक्त महाराज को कृष्णगढाधिपति इस कारण से लिखते हैं कि अब प्रसिद्ध राजधानी का स्थान कृष्णगढ ही है नहीं तब ये तो रूपनगरके ही राजा थे।''

नागरीदासजी किन वल्लभकुल गोस्वामीके शिष्य थे इसके उत्तरमें उक्त कविराजाजी लिखते हैं:-

''महाराज श्रीकृष्णसिंहजीके पौत्र रूपसिंहजी थे वे श्रीबल्लभाचार्यजी* के पुत्र बिट्ठलनाथजी:-जिनके पुत्र टीकैत ( बडे ) श्रीगिरिधरजी थे, जिनके तृतीय पुत्र दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी थे। जिनके शिष्य हुए थे, उन्हींके पास ब्रह्म संबंध भी लिया था और श्रीकल्याणरायजीका स्वरूप दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजीने इस ( रूपसिंहजी ) के मस्तक पर पधराया था वह स्वरूप अद्यापि यहां विराजता है और इन्हीं ( रूपसिंहजीने ) श्रीबल्लभाचार्यजी के उस चित्र को जो बादशाह अकबर ने बनवाया था, जो बादशह शाहजहां से मांग के ले लिया था। वह चित्र अद्यापि यहाँ है और श्रीकल्याणरायजी के समीप सेवा में बिराजता है। पूर्वोक्त श्रीनृत्यगोपालजीके दो स्वरुप थे, जिनमें एक स्वरुप बडा श्री दाऊजी का सो श्री कल्याणराय जी की गोदमें हीं बिराजता है और दूसरा छोटा स्वरूप श्रीकृष्णजीका सो वर्तमान महाराजधिराज महाराज श्री शार्दूलसिंहजी बहादुर जी.सी.आई.ई. के अनुज महाराज दीक्षितजी श्रीजवानसिंहजी के मस्तकपर बिराजता है।''

---

जाडेकी ऋतु में राजा चार घडीके तडके सेवा में नहाये वहाँ चार चोर छिपे थे, उन सभोंने राजा को तीर मारी जो पीठ को छेद बाहर निकल गई, भितरियों ने पट्टी बांध दी, परंतु राजा सेवा में ऐसा देहाभ्यास भूल गए थे कि कुछ खबरही न हुई। जब सेवासे निकले, पट्टी बँधी देखी, लोगों ने सब वृत्त कहा, राजा ने सोचा कि सब अनर्थ का मूल धन है, राज अपने भतीजे को दे ठाकुरजी का वैभव श्रीगुसाईजीके यहां भेज, एक झांपी में श्रीठाकुरजी को केवल गुंजा मोरपंख धरा अपने साथ ले श्रीगोकुल चले आये और विरक्त भावसे रहने और लीलाका अनुभव करने लगे।

यह वार्ता श्रीगोस्वामी गोकुलनाथजी की बनाई बताते हैं, जिनका जन्म सम्वत् १६०८ मि० माघ सु० ७ का है।



''जो कि महाराज श्रीरूपसिंहजीके गुरू गोस्वामी दीक्षितजी श्रीगोपीनाथजी थे जिनके प्रपौत्र गोस्वामी श्रीरणछोड़जी+नागरीदासजीके गुरू थे, इसका स्थान कोटेमें श्री बड़े मथुरेशजी का है और श्रीरूपसिंहजी से लेकर अब तक उसी स्थान के शिष्य होते हैं और उनका मन्दिर कृष्णगढ़ में भी श्रीमदनमोहनजी का है, जिनके भेट यहां की तरफसे ग्राम भी है और लगान सहित दस सहस्त्र के लगभग की जीविका है।

नागरीदासजी के सेव्य ठाकुरके विषयमें उक्त कबीश्वरजी लिखते हैं:-

''नागरीदासजी स्वयं पूर्वोक्त श्रीकल्याणरायजी की सेवा में उपस्थित रहते थे और प्रदेश जाते तब श्रीनृत्यगोपालजीका स्वरूप साथ में रखते थे। बृन्दाबन में रहे, तब भी श्रीनृत्यगोपालजी की ही सेवाकी॥''

नागरीदासजी का जन्म सम्वत् १७५६ पौष कृष्ण १२ को हुआ। इनके पिता का नाम महाराज श्रीराजसिंह था। इनका विवाह भानगढ नामक नगर के राजा राजावत ( राजावत कछवाहोंकी एक शाखा है ) यशवंतसिंहजी की कन्या से सम्वत् १७७७ के ज्येष्ठ सुदी ९ को हुआ था। इन्हें ४ संतति हुई। प्रथम पुत्र जिनका जन्म सम्वत् १७८३ में हुआ था, बाल्यावस्था ही में परलोक गामी हुए। दूसरे कुमार सरदारसिंह जिनका जन्म सम्वत् १७८७ के भाद्रपद शुक्ल २ को हुआ था। यही इनके उत्तराधिकारी हुए। पहिली कन्या किशोर कुंवरिजी का विवाह बूंदी के हाड़ा दीपसिंहजी से हुआ था और दूसरीका नाम गोपाल कुंवरिजी था। इनका संबंध जयपुर के महाराज श्री माधेसिंहजीसे निश्चय हुआ था, परन्तु परम वज्र हृदय विधाता से यह सुखमय संबंध न देखा गया। उक्त महाराज विवाह के पहिलेही सुधाम गामी हुए। इनके भ्राता महारजा सरदारसिंहजी ने इनका विवाह दूसरे कहीं करने का उद्योग किया, परन्तु जिस सती रमणी रत्न के शरीर में परम भगवदीय महानुभाव नागरीदासजी का पवित्र रक्त संचालित होता था, जिसने पवित्र कुल की शोभा बढ़ाई थी, वह क्या कभी सांसारिक सुखों के लोभ में फंसकर अपने परम पवित्र सती धर्म को तिलांजलि दे सक्ती थी? प्रातःस्मरणीया गोपालकुंवरिजी ने दृढ़ता पूर्वक दूसरा संबंध अस्वीकार किया और कहा जो होना था हो चुका क्या एक शरीर दो पतिको अर्पण हो सकता है? और संसार के मुखों से मुख मोड भगवदचर्णारबिंद में मन लगाया अपने सिर पर एक स्वरूप श्रीठाकुरजी का पधराया, जिनका नाम श्रीरामलालजी रक्खा और इन्हीं के प्रेम में मगन

---

* श्रीबल्लभाचार्य - जन्म सम्वत् १५३५, मि० वैशाख कृष्ण ११

* श्री बिठ्ठलनाथजी-जन्म सम्वत् १५७२, मि० पौष कृष्ण ९

* श्रीगिरिधरजी टीकैत-जन्म सं० १५९७, कातिक ब० १२

* श्रीगोपीनाथजी-जन्म संवत् १६३४, माघ कृष्ण ६

* गोस्वामी श्री रणछोडजी-जन्म सम्वत् १७७७, ज्येष्ठ कृष्ण ५

रहकर अपने इस क्षणस्थायी जीवन को परम संतोष पूर्वक व्यतीत किया। धन्य राजपूत कुल कमलिनी! धन्य सतीत्व मान संबंर्धिनि!! धन्य नागरीदास यशोबिस्तारिनि!!! धन्य आज कलिकी कुल बालाओं को इनका उदाहरण लेना चाहिये, उन्हें हृदय की आंखों से देखना चाहिये। सती साध्वी पतिव्रताओं के लिये पति कैसा आदरणीय देवता है। उन्हें चाहिये कि गोपाल कुंवरि के आदर्शमय चरित्र को रात्रि दिवस अपने गले का हार बनावें। कहां हैं गोपालकुंवरि और कहां गए महाराज नागरीदास? परन्तु यह उनका उज्जवल चरित्र आज तक यश फैला रहा है और अनन्त काल तक ऐसे ही महानुभावों के चरित्र भारतवर्ष तथा क्षत्रिय कुल का गौरव सारे संसार में स्थिर रक्खेंगे। कहिये संसारमें कितने ही इनके ऐसे तथा इनसे बढकर लोग जन्मे और कालके कराल गाल में विलीयमान हुए, परन्तु किसका नाम कौन लेता है! किसका चिह्न पृथ्वीपर वर्तमान है? परन्तु हाँ-

कीर्तिर्यस्य सजीवति।

महाराजा सांवतसिंह संस्कृत, फारसी अच्छी पढे थे। भाषा पिंगल और डिंगल के तो पण्डित ही थे, राग, चित्र और शस्त्र विद्या में परम प्रवीण थे। एक दिन जबकि ये श्रीवृन्दावन से घर आए थे, इनके भ्रातृपुत्र कुमार बिरदसिंहजी ने कहा कि मैंने सुना है कि आप शिकार अच्छा खेलते हैं, मुझे भी दिखाइए, आपने उत्तर दिया कि ''अब मुझे शिकार से क्या प्रयोजन? परन्तु, तुम कहते हो तो दिखाऊँगा। एक हिरन के पीछे आपने घोड़ा डाला और थोड़ी दूर जाते जाते ही उसकी सींग में अपनी कुबडी को लगाकर उसे रोक रक्खा। चित्र में ऐसे निपुण थे कि कई एक भाव प्रिया प्रीतम के चित्र का आपने नया ही निकाला था और विद्या का परिचय तो उनके काव्यों से मिलता है।

ये परमशूरवीर थे और बचपन ही से परम निर्भय थे। संवत् १७६६ में जब कि ये केवल १० ही वर्ष के थे, एक दिन दिल्ली में राज्यदरबार से लौटती समय एक मस्त हाथी जो कि महावतों के काबू से बाहर था, इन पर टूटा, महावत लोग लाखों पुकारते रहे इधर मत आओ भागो, परंतु वीर बालक ने पीठ देना सीखा ही न था, इन्होंने हाथी से मुठभेड होते ही एक हाथ तलवारका ऐसा मारा कि वह चुपचाप दुम दबाकर पीछे भागा और आप अपने घर आये, उस समय का चित्र कृष्णागढ दरबार में है।

संवत् १७६९ में जब कि इनकी अवस्था केलव १३ वर्षकी थी, इन्होंने अकेले ही बूंदी के हाडा जैतसिंह को मारा था, जिसमें इन्हें कुछ घावभी लगे थे।

इसी संवत् में दिल्लीके बादशाह बहादुरशाह मरे और गद्दीके लिये जहाँदारशाह और फरुखसियर से लडाई हुई और फरुखसियर ने विजयी होकर दिल्ली के तख्त पर अधिकार किया। इस लडाई का वर्णन श्रीधर कविने बहुत सुंदर लिखा है। यह श्रीधर कवि जिसका नाम मुरलीधर भी था, प्रयाग का रहनेवाला था। इसने इसी ''जंगनामा'' में लिखा है।



''श्रीधर मुरलीधर उरुफ, द्विजवर वसंत प्रयाग।
रुचिर कथा यह शाहिकी, बढ्यो कथन अनुराग॥''

यह श्रृंगार और वीर रस दोनों ही कविता सुंदर करता था। उस समय के अमीर उमराओं का बहुत कुछ अनुवाद किया है और पारितोषिक पाया है, जिसने कुछ दिया नहीं है, उसकी ऐसी हजो की है कि अश्लीलता के कारण यह कविता प्रकाशित करने योग्य नहीं है। शिवसिंह ने अपने ग्रंथ में चार श्रीधर लिखे हैं। जिनमें से एक का नाम राजा सुब्बासिंह चौहान था और ओयल जिला खीरी के रहनेवाले थे। इनका समय संवत् १८७४ दिया है जिन्होंने ''विद्वन्मोद तिरंगिनी'' नामक साहित्य ग्रंथ बनाया। दूसरे श्रीधर राजपुताना वाले इनका समय १६९० दिया है, जिन्होंने ''भवानी छंद'' नाम एक दुर्गा की कथा का ग्रंथ बनाया है। शेष दोनों श्रीधर निश्चय एक ही है, क्योंकि दोनों की कविता जो दी है वह श्रीधर उर्फ मुरलीधर कवि ही की है। शिवसिंह ने एक श्रीधर ( जिनके नाम में मुरलीधर नहीं लगाया है ) का समय १७८९ संवत् दिया है और लिखा है कि 'श्रृंगार रस में सरस कवित्त है' और कवित्त इनका यह दिया है-

''श्रीधर भावत प्यारो प्रवीन के रंग रंगे रथ साजन लागे।
अंग अनंग तरंगिन सों सब आपने आपने काजन लागे॥ १॥
किंकिनी पायल पैजनियां बिछिया घुघरू घन गाजन लागे।
मानो मनोज महीपति के दरबार मरातिवे बाजन लागे॥ २॥

यह कविता श्रीधर उर्फ मुरलीधर के ग्रंथ में मुझे ढूँढने पर मिली, यह प्राचीन हस्तलिखित पुस्तक के ७७ पन्ने में ३१ अंक का कवित्त है और प्रथम के एक पादमें कुछ पाठांतर है। हस्त लिखित पुस्तकमें यह पाठ हैं:-

श्रीधर भावतो प्यारी प्रवीन सों रंग भरे रति साजन लागे। हम इस कवित्त के ऊपर नीचे का एक एक कवित उद्धृत कर देते हैं:-

''ठाढोही सादेही साजसों आजु उछाह भरी मद सौतिको खूंदिकै। आंचर खूंटि खुल्यो अचका निकसे कुंच कोरक कंजसी दूंदिकै॥ छाति छपावति भाव भरी तकि श्रीधर लाल रहे रसगूंदिकै। हेरि इतै दृग फेरि गई हँसि घूंघटके पटसो मुख मूंदिकै॥ ३०॥

मेरे जबै आवतहौ हँसत हँसावतहौ रीझत रिझावतहौ रंगनि रंगतहौ॥ और कें पधारतहौ साहिउर धारतहौ छलनि सुधारतहौ प्रेमसों पगलहौ॥ श्रीधरअहिरा कछु जानत न पीरा सदा खीरा बार हीरा मीले जगत ठगतहौ॥ मीतकी प्रतीति होति देखें रीति रावरेकी नेक भीति ओट है अमीतसे लगतहौ॥ ३२॥

समय तो ठीक मिलताही है, क्योंकि संवत् १७६९ में इन्होंने जंगनामा बनाया था:-

''संबतसो सत्रह सै उन्हत्तरि पूसपून्यो बुध तहीं।

सनसो अग्यारह तेतिसा माहे मोहर्रम चौदहीं''॥ १॥
अरू पातसाही माहे आजर बाएसों श्रीधर कही।
सफजंगकी साएति सधी साहेबजहाँ कीनो सही॥ २॥

अब यहाँ हिजरी सन् में भ्रम है, क्योंकि फर्रूखसियर की जहाँदारशाह से लड़ाई सन् ११२४ में हुई है, यह भूल लेखक की प्रतीत होती है।

दूसरे श्रीधर मुरलीधरका संवत् शिवसिंह ने नहीं दिया है। लिखा ''कवि विनोद नाम पिंगल बनाया'' और कवि विनोद पिंगलके ये दोहे उठाये हैं:-

''श्रीधर मुरलीधर सुकवि मानि महा मन मोद।
कवि विनोद मय यह कियो उत्तम छंद विनोद॥ १॥
श्रीधर मुरलीधर कियो निज मतिके अनुमान।
कवि विनोद पिंगल सुखद रसिकनके मन मान॥ २॥

यही भ्रम डाक्तर ग्रियर्सनकोभी हुआ है।

अस्तु यह तो निश्चय है कि यह दोनों एक ही श्रीधर थे। सम्भव है कि इस संबत् १७६९ की लडाई में महाराज सावंत सिंहजी भी रहे हों, क्योंकि कृष्णगढ से आये हुए इतिवृत्तमें लिखा है कि ''इन साहिबों पर बादशाह फरूखसियर की बहुत मेहरबानी थी, इन साहबों के पास घोडे फिरवा के बहुत देखता'' और इधर श्रीधर अपने ''जंगनामा में लिखते हैं कि:-

''सब मीर जुमिला संग व्है। द्वै लाख स्वार उमंग है॥
यह बंक कोतल फौज है सावंत उरमें ओज है॥''

परन्तु अधिक सम्भव यही है कि कवि ने सावंत शब्द बीरके लिए लिखा हो, क्योंकि, प्रायः ऐसाही किया है, जैसे:-

''समसेर सरकि सिरोहकी सावंत एं दोऊ लरे।
घनघाइ खाइ अंगाइ अंगनि अटल व्है दोऊ अरे॥''

सम्वत् १७७१ में जबकि आप १५ वर्ष केथे, जलूस महफिल हो रही थी, उस समय इनके पिता महाराज श्रीगजसिंहजी, कोटाके महाराज श्री भीमसिंहजी, सोपर के महाराज श्री राजसिंहजी और महाराज भदोरिया श्रीगोपालसिंहजी प्रभृति बैठे थे। उस समय अकस्मात इनके जामा के दामनमें एक विषधर सर्प आ गया, आपने इसकी किसी को भी खबर न होने दी, चुपचाप उसके फन को पकड़कर मसल दिया और किसी बहाने से उठकर मृतक सर्प बाहर फेंक आए। इस भेदको उनके खिदमतगारों के अतिरिक्त और किसी ने भी न जाना।

सम्वत् १७७४ में जबकि ये १८ वर्षके थे, थूण की गढी को फतह किया। थूण की गढी के स्वामी जाट बदनसिंह को पराजित करने के लिये फर्रुखसियर ने नवाब मुजफ्फरखाँ



* जयपुरके महाराज जयसिंह और कोटाके महाराज भीमसिंहको भेजा था, थूण की गढ़ी जो मेवासा में है, वहाँ लड़ाई हो रही थी, परन्तु गढी कब्जे में नहीं आती थी, क्योंकि जगह बेढंग थी, चढ़ने का रास्ता न था, तब नवाब नौलादखाँ खानदौरा+बख़ूशी के भाई ने अर्ज करके इन्हें भिजवाया, यह वहाँ पहुँचते ही बख्तर पहिरे हुए, गोलियोंकी वर्षा के बीच हाथीपर सवार घुस पड़े और गढ़ीके फाटक पर पहुँच हाथियोंसे फाटक तोडवा गढी भेल दी। पीछे से सारी फौज भी आ पहुँची यह दिन सम्वत् १७७४ वैशाख बदी ६ था। इस समय एक गोली इनके शरीरसे भिडती हुई निकल गई थी, परंतु कुछ गहरी चोट नहीं लगी; वहांसे पालकी में सवार हो डेरे पर आए, उस समय नवाब और महाराज जयसिंह उनके डेरे पर आए ओर कहा कि यह आपहीका काम था और नवाबने बादशाहके पास अर्जी भेजी उसमें फतह इन्हीं के नाम लिखी। बादशाहने प्रसन्न हो बड़ी ही प्रशंसाकी और खिलत शमसेर आदि भेजा।

सम्वत् १७९३ में दक्षिणी मल्हार राव गुजरातसे मारवाड आया। इन्होंने उसे खिरणी (कर) नहीं दिया, कुछ लडाई भी हुई। अन्तमें बाजीराव पेशवाने मल्हार रावसे कहा:-

''बाजेराव मल्हारसों कहतो गयो कथाह।
और राव सब राव है सावंत बात अथाह॥''

सम्वत् १८०४ में जब कि मुहम्मदशाह दिल्ली के तख्त पर बैठ चुके थे, पठानों ने दिल्ली पर चढ़ाई की, उस समय मुहम्मदशाहने यहाँ भी फर्मान भेजा था, इनके पिता श्री महाराज राजसिंह जी जानेको प्रस्तुत हुए। परन्तु इन्होंने कहा कि आप बहुतेरी लडाइयें लड चुके हैं, इस पर हमें जाने दीजिये, निदान पिताकी आज्ञासे मे अपने पुत्र सरदारसिंहके साथ दिल्ली गए, परंतु बादशाह इन्हें मुहिम पर नहीं भेजा, अपनेही पास रक्खा, विदित होता है कि इसी समयसे इनसे आनंदघनजीसे मित्रता हुई। सम्वत् १८०५ में मुहम्मद शाह मर गए और उसी समय इनके पिता महाराज राजसिंहजीका भी परलोक हुआ और सम्वत् १८०५ वैशाख सुदी ५ को ये गद्दी पर बैठे।

---

* नवाब मुजफ्फरखाँ की वीरता के विषयमें श्रीधर लिखते हैं:-

''सज्यो मुजफ्फरखाँ फूतूह कर। समसामुद्दौला सुबीर बर''

+ खानदौरा-पूर्व नाम ख्वाजा मुहम्मद आसिन, उसके पीछें अरफखाँ तत्पश्चात शमसासुद्दौला, अमीरुलउमरा खानदौरा, बहादुर, मनसूरजंगकी पदवी मिली। इनके पिता ख्वाजः कासिमनकश बंदीथे। खानदौरा नादिरशाहकी लड़ाईमें २३ फरवरी, सन् १७३९ में जखमी हुए और चारही दिन पीछे २७ तारीखको ६८ वर्ष की अवस्थामें मरे।

इस घटनाको एक वर्षभी न बीता था, ये इधर दिल्ली आए थे उधर इनके छोटे भाई बहादुरसिंहजीने राज्यपर अधिकार कर लिया। दिल्ली की बादशाहतमें तो कुछ जोर रह ही नहीं गया था और मरहठों का चढता समय था। उन लोगों के पास सहायता लेने के लिये यह भी गए, रास्ते में अपने पुत्र सरदारसिंहका घासेडा नगर जो बडगूजंर जातिके राजपूतों की राजधानी था और जहाँ सरदारसिंहजी ब्याहे थे, भेज दिया और आप मरहठों के पास गये। उनके साथ आप कुमाऊँकी मुहिम पर गये।

कमाऊं की लडाई संवत् १८०८ में हुई थीं; वहीं 'जुगलभक्तिविनोद' ग्रंथ बनाया था। ''अष्टादश सत अष्ट पुनि, संवत् माघ सुमास। जुगल भक्त गुन ग्रंथ यह, कियो नागरीदास॥ निकट कमाऊँ पर्वतनि, बिकट बिटपकी भीर। तहां ग्रंथ रचना भई, नदी कौसिकी तीर॥'' वहाँ की लूट के विषय में लिखते हैं :-

''लाज छांडि मन कों भजौ, दीजै मन कौ छूट।
कम्पाऊँ की मुहिम मैं, जैसें लूटालूट॥''

इसी के पीछे ही आपने ''तीर्थानन्द ग्रंथ'' बनाया है और उसमें उसी सिलसिले से मुकाम भी दिये हैं, जैसे रूपनगर से साँभर गये, वहाँ देवयानी का वर्णन किया है, जैपुर में गलता ( गालवाश्रम ) का वर्णन किया है, फिर वृन्दावन आए वहां से अपने पुत्र को घासेडा में भेज आप मरहठों के पास गये, फिर उनके साथ कुमाऊँ मरहठों को अपने साथ लेकर फिर श्री वृंदावन आए; आप तो वहीं रह गये और अपने पुत्र को मरहठों के साथ लडने को भेज दिया, इन्हें वृंदावन में स्वप्न में आज्ञा हुई थी कि तुम यहीं निवास करो, राज्य तुम्हारे लडके को मिलैगा, निदान बहुत लड़ाई के पीछे संवत् १८१३ में बहादुरसिंहजी और सरदार सिंहजी ने राज्य को दो भाग करके बाँट लिया।

संवत् १८१३ के फाल्गुण में इन्होंने कुटुंब यात्रा के निमित्त प्रस्थान किया। सुनते हैं कि उस समय इनके साथ आनंदघनजीभी थे, परंतु जयपुर ही से लौट आये और इस भ्रातृ विरोध ने कुछ ऐसा असर इनके हृदय पर किया कि फिर इन्होंने राज्यगद्दी पर पैर न रक्खा और संवत् १८१४ द्वितीय आश्विन शुक्ल १० को अपने कुँवर सरदार सिंहजी को युवराज

See Journal Asiatic Society Bengal Part 1 No. 1
Vol. LXVI page 57.

यह खानदौरा फर्रुखसियरके भी सरदारों में था। श्रीधर लिखते हैं:

''सज्यो खानदौरा सुबहादुर। समसामुद्दौला सिपाहपुर।
उतहि उनको खानदौरा। इतहि सजि यह खानदौरा॥
संग केतिक खानदौरा। मनहु उनको खानदौरा॥ १३॥
ऐसेही अनेक स्थानपर लिखा है।''



बना, आप आश्विन सु० ११ को श्रीवृंदावन चले गये, उनके हृदयका भाव कैसा बदल गया था, यह ये दोहे कहे देते हैं:-

''जहाँ कलह तहाँ सुख नहीं, कलह सुखन कौ सूल।
सबह कलह इक राज मैं, राज कलह को मूल॥
मेरे या मन मूढ तै, डरत रहत हौं हाय।
वृन्दाबन की ओर तैं, मति कबहूं फिरि जाय॥
लेत न सुख हरिभक्तिकौ, सकल सुखनि कौ सार।
कहा भयो नृपहू भए, ढोवत जग बेगार॥
और भौन देखौं न अब, देखूँ वृन्दा भौन।
हरिसों सुधरी चाहिये, सबही बिगरै क्यौंन॥
ब्रजमें व्है व्है कढत दिन, किते दिये लै खोय।
अब कैं अब कैं कहत ही, यह अब कैं कब होय॥
बडे बडे देत हरि, दिन मैं लाख करोर।
पै काहू को नाहिं वै, खीचत अपनी ओर॥''

सम्वत् १८९० में 'तीर्थानन्द' ग्रंथ बनाया, परंतु यह ग्रंथ संवत् १८०८ संवत् १० में पूरा हुआ प्रतीत होता है यदि ऐसा न हो तो इसमें तो संदेह नहीं है कि इन्हीं दो वर्षों की कथा इसमें लिखीगई हैं और इसीकी समालोचनायें हमारे पाठक बहुत कुछ समाचार आपके जीवन चरित्र का पावैंगे। इस ग्रंथ का आरंभ यों किया है:-

''जब चले स्थिति तें देस आन। बिच किए देवयानी सनान॥'' फिर लिखते हैं ''पुनि चले तहाँ तें नाय माथ। परसे गोविन्द गोकुल के नाथ॥ पुनि गालव आश्रम अति अगम्य। जहाँ भ्रमत फिरत अति मधुप झुंड॥'' वहाँ से ब्रज में आए। पहिले श्री गोवर्धन आकर रहे। यहाँ का वर्णन पाठकोंके सुनने योग्य है:-

''पायन प्रदच्छना दई फेर। बिच रसिक संग गन गुनी घेर॥ कलगान कीरतन बन्यों रंग। बहु झांझ झनक बांजत मृदंग॥ बन ग्वाल गऊ चले सुनत साथ॥ मधु पिवत श्रवन पुट कृष्ण गाथ॥ सब अनन्य मंडली छकी प्रेम। चित गए भूलि तब मन के नेम॥ आये चलि तेहि ठां रसिक झुंड। तहँ राधाकुंड अरु कृष्णकुंड॥ उत तें उमगे सुनि रसिकबृन्द। उठि चले सामुहे बढि आनन्द॥ तहं रुपे सूर सन्मुख संभारि। बहि चले परस्पर प्रेमवारि॥ हुंकार शब्द करि गिरि निसंक। कोउ चलत धरनि घुकि भरत अंक॥ बंसीदास अरु मुरलिदास। मनु महारथी ये प्रेमरास॥ बिच खेत परे मूर्छित निदान। सोए सर सज्जा गान तान॥ सुख प्रेम भक्ति को भयो प्रात। मुखसों न कछू है बरन्यो जात॥ दंपत रस संपत बर बिहार। फिर गाय चले तन मन संभार॥ परकरमा दै गिरिवर सुआय। मधुपुरी चले दुख बिरह छाय॥''

गिरिराज से श्री मथुरा में आए, वहाँ विश्रांतघाट स्नान किया। साँझ को विश्रांत पर श्रीयमुनाजी की आरती की बड़ी शोभा वर्णन की है। वहाँ एक वृद्धा तपस्विनी रहती थीं, जो केवल दूध ही पीती थी, उनका दर्शन करके श्रीवृन्दावन आए, इन समय इनका नाम चारों ओर फैल गया था और इनके प्रेम का आस्वाद प्रेमीमात्र को मिल चुकाया था, क्योंकि श्रीवृन्दावन में इनको महाराज कृष्णगढ़ सुनकर तो लोग उदासीन भाव से अलग ही अलग रहे परंतु जब सुना कि नागरीदासजी ये ही है तो दौड २ कर श्रीवन के महात्मा लोग लिपट गए।

''सुनि ब्योहारक नाम मो. ठाढे दूर उदास।
दौरि मिले भरि नैन सुनि, नाम नागरीदास॥

इक मिलत भुजनि दौरि दौरि। इक टेरि बुलावत और और॥ केउ चले जात सहजै सुभाय। पद गाय उठत भोगहिं सुनाय॥ जेपरे धूर मधि मत्त चित्त। सेउ दौरि मिलत तजि रीति नित्त॥ अतिसय बिरक्त तिनके सुभाव। ते गनत न राजा रंक राव॥ चे सिमिट सब आय आय। फिर छाडत पद पढवाय गाय॥''

इससे विदित होता है कि उस समय तक इनकी कविता का पूरा प्रचार हो गया था और महात्मा लोग बड़े चाव से पढ़ते और याद करते थे।

वहाँ श्रीबाँकेविहारीजी ( श्रीस्वामी हरिदासजीके सेव्य ठाकुर ) का दर्शन किया। इस समय इनके साथ इनकी पासवान ( उपस्त्री ) बनीठनीजी भी थी और उन्होंने रसिकबिहारी छाप देकर कई एक पद गाये। पहिले मुझे सन्देह था कि उस अवसर पर रसिक बिहारी छाप रखकर स्वयं ही पद बनाये थे, परंतु कृष्णगढ़ के लेखसे बिदित हुआ कि रसिक बिहारी छाप उनके पासवान बनीठनीजी की है तब विचार पूर्वक निम्न लिखित कविता के देखने से भी यह निश्चय हुआ, आप लिखते हैं:-

''बनो बिहारिनि रस सनी निकट बिहारीलाल।
पान कियो इन हगनि तें अनुपम रूप रसाल॥
तहँ पद गाए औसर संजोगं। बिच रसिक बिहारी ही के भोग॥''

जान पड़ता है नागरीदासजी बनी ठनीजी को प्रेम से केवल बनी ही कहकर पुकारत थे और यह भी इससे स्पष्ट है कि वे प्राय: उनको साथ रखते थे तथा विशेष पर्दा आदि का विचार नहीं करतेथे।

हम पाठकों को उनमें से एक पद ''उत्सवमाला'' ग्रन्थ से उद्धत करके सुनाते हैं। इस छांपके तीन पद और चार दोहे, उक्त ग्रन्थमें है।

'कुंजमहलमें आजु रंग होरी हो। फाग खेल में बना बनी की व्है रही पट गठ जोरी हो॥ मुदित व्है नारि गुलाल्ल उडावैं गावैं गारि दुहुं ओरी हो। दूलह रसिक बिहारी सुन्दर



दुलहिनि नवल किसोरी हो॥ १॥'

यहाँ यह भी कहे बिना नहीं रह सकते कि इनका प्रेम अधिक हरिवंशी और हरिदास वैष्णवों से था, क्योंकि इनके पदों की शैली प्राय: उनसे मिलती जुलती है और ये प्राय: श्रीवृन्दावन ही में रहते थे और वहाँ इन्हीं संप्रदायों के महात्मा अधिक थे, गोकुल का वर्णन बहुत कम किया है।

गोधूलक समय ज्ञान गुदरी आए, वहाँ भी देर तक समाज रहा। वहाँ से जमुना पार उतरे।

''सहि गई दुर्मति दुख असहि, बहि गई बुरी बयार।
रहि गई ब्रज अवसरे हिय, उतरे जमुना पार॥''

वहां से श्रीजमनुजी का स्नान करके सोरूं में आकर रहे। यह स्थान जिला एटा में है। यहां बुढगंगाजी का स्नान किया। यहीं भगवान का श्रीवराहवतार हुआ है, हिरण्याक्षको मारा है। इसका उपनाम उकल क्षेत्र और दूसरा शूकरक्षेत्र है।

वहाँ एक नौकर ने श्री गंगाजी के तट पर बकरा मारा, इस पर गंगाजीने क्रोध किया। बड़ी बाढ़ आई और फिर नागरीदासजी ने स्तुति किया तब शान्त हुई।

''तहँ किए एक अनुचर अधर्म। तटि हत्यो 'अजासुत पापकर्म॥ कछु क्रोध कियो गंगा कृपाल। दई आन अचानक जल उछाल॥ भुवफाट गिरत अररात जोर। अति भयो भयंकर समय सोर॥ भजि पटकि २ डेरा निकारि। भयभीत सकल कौतिक निहार॥ जब करी स्तुतिसु सिर नाय पाव। करि छमा कियो सीतल सुभाव॥''

दूसरे दिन दीपदान किया।

वहाँ से कपिलाश्रम ( कपिलग्राम ) में आए जहाँ कपिलदेव जी ने तपस्या की है। वहाँ से नावके पुल पर गंगा पार उतरे। एक नदी रामगंगा और मिलीं उनका स्नान करके धवलागिरि के पास कौसिक नदी के तटपर पहुंचे वहाँ बहुत दिन रहे और वहां से संधि करके लौटे। हम ऊपर लिख चुके हैं संवत् १८०८ में यह ग्रंथ बनना आरम्भ हुआ ''जुगल भक्त विनोद'' वहीं संवत् १८०८ में बनाया है जिसका वर्णन ऊपर है।

''रहे बहुत दिवस कौसिकी तीर। करि चले तहां तें संधिबीर'' फागुन वहीं बीता। ब्रज के फागका ध्यान करते यह वर मांगा कि परसाल अब होरी ब्रज में ही हो, यही हुआभी।

उसी रास्ते से लौटते हुए श्रीवृन्दावन के उस पार रातको पहुंचे। उस समय कोई

---

W.W. Hunter's Gazetteer of India.

Ramganga-Eastern-a river in Kumaun district N. W. P. rises on the Southern Slope of the main. Hamalayan range at an elevation of 9000 fit above sea level and falls into the Sarju at Rameshwar.

नाव या बेड़ा न मिला; उधर श्रीवृन्दावन का वियोग कौन सह सकता था। झट श्रीयमुनाजी में कूद पडे और तैर कर श्रीवृन्दावन पहुँचे, कुछ लोग इनके साथ आए, कुछ रह गए। आप यों लिखते हैं:-

''देख्यो श्रीवृन्दावन विपिन पार। बिच बहत महा गंभीर धार॥ नहिं नाव नहीं कुछ और दाव। हे दई कहा कीजै उपाव॥ रहे वार लगनि कौ लगै लाज। गए पारहिं पूजै सकल काज॥

प्रेमपंथ कौ पीट है, यह जीवौ न सुहाय।
मंगल दिन है आजु कौ, प्रिय सन्मुख जिय जाय॥

यह चित्त मांझ करिकै विचार। परे कूद कूद जल मध्यधार॥ चले पैर पैर तरराय धाय। तहां भई लगन सब बिधि सहाय॥ तरि गए तरुन जा द्यौ पार। गहि हाथ लए ब्रजनाथ वार॥

वार रहे रहे बार ते; पार भये भये पार।
दरसे वृन्दाबिपिन बिंच, राधा नन्द कुमार॥''

वहाँ का आनन्द लूटकर दिल्ली आए और यहाँ दरबार से छुट्टी पा सांसारिक व्यवहारों को छोड़, राज्य कुटुंब से मुंह मोड, अकेले श्रीवृन्दावन वास आरम्भ किया। यह समय संवत् १८०९ के आरम्भ का है, क्योंकि १८०८ का फाल्गुन कमाऊ में हुआ और वर्षोत्सव का वर्णन आगे चलकर इस ग्रंथ में किया है। उसके उपरांत अर्थात् वर्ष दिन श्रीब्रज में रहने पीछे संवत् १८१० के माघ में यह ग्रंथ ''तीर्थानन्द'' पूरा हुआ है।

आप दिल्ली का वृत्तांत यों लिखते हैं:-

''फिर बहे बीच राजस प्रवाह। गए इन्द्रप्रस्थ हिय बिरह दाह॥ दिल्ली दिवार कहकहा धाम। लियो फेरि तहाँ ते मोहि श्याम॥ तजि दयो तहाँ सब प्रवृत संग। भयो ब्रज सनमुख फिरी बढयो रंग॥ जब कह्यो सुता लड़काय भाय। लयो वोलि मोंहि वृषभानुराय॥ तब चले चरन वरसाने और। किए पैंड पैंड तीरथ करोर॥''

आगे फिर लिखते है:-

''ऐसो बरसानो निरषि, गहवर आयो प्रेम।

Vol. VII 537 Page.

× Kamaun - The Principal District of the Division of the same name. In 1814 it was resolved to annex it to British possessions. At the end of January 1815, every thing was ready for the attack of Kamaun. The first successful event on the British side was the capture of Almora by colonal Nicholson on 26 April 1815. Population 425963 Hindus, 5569 Mussalmans in 1872. It has a mild climate. Vol V 471 Page. Population in 1881-493641.



करत दंडवत लुटतरज, छुटि गए राजस नेम॥''

इसके आगे आषाढ़, फिर सावनमें हिंडोलका वर्णन बरसानेमें किया है। फिर भादों में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव नंदगांव और ललिता जन्मोत्सव करेला ग्राम में किया। वहाँ से सुनहराकी कदमखंडी में दानलीलाका अनुभव किया। फिर भादों सुदी सप्तमी को बरसानेमें आकर पूरा किया है।

''गौर सांवरे रसिक दोउ, यह दीजे सुख रास।
कबहुं नागरीदास अंब, तजै न ब्रज को बास॥
माघ अष्टदस सतजु दस, बिच बृन्दाबन बास॥
ग्रंथ तीर्थानन्द यह, कियो नागरीदास॥''

नागरीदासजीके बनाए ग्रंथ इतने हैं:-

(१) सिंगार सार वा ब्रजलीलापदप्रसगं
(२) गोपीप्रेमप्रकाश (सं १८००)
(3) पद प्रसंग माला
(४) ब्रजवैकुंठ तुला (सं १८०१)
(५) ब्रज सार (सं १७९९)
(६) भोर लीसा
(७) प्रातरस मंजरी
(8) विहारचंद्रिका (सं १७८८)
(९) भोजनानन्दाष्टक
(१०) जुगलरस मंजरी
(११) फूल विलास
(१२) गोधन आगमन
(१३) दोहन आनन्द
(१४) लग्नाष्टक
(१५) फाग विलास
(१६) ग्रीष्म विहार
(१७) पावस पचीसी
(१८) गोपी वैन विलास
(१९) रास रस लता
(२०) रैन रूपरस
(२१) शीतसार
(२२) इश्क चिमन
(२३) मजलिस मंडन
(२४) अरिलाष्टक
(२५) सदाकी मांझ
(२६) वर्षाऋतुकी मांझ
(२७) होरीकी मांझ
(२८) कृष्णाजन्मोत्सव कवित्त
(२९) प्रियाजन्मोत्सव कवित्त
(३०) सांझीके कवित्त
(३१) रासके कवित्त
(३२) चांदनीके कवित्त
(३३) दिवारीके कवित्त
(३४) गोवर्धनधारनके कवित्त
(३५) होरीके कवित्त
(३६) फाग गोकुलाष्टक
(३७) हिंडोराके कवित्त
(३८) वर्षाके कवित्त
(३९) भक्ति मगदीपिका (सं १८०२)
(४०) तीर्थानन्द (सं १८१०)
(४१) फाग विहार (सं. १८०८)
(४२) बालविनोद (सं. १८०९)

(४३) सुजनानन्द सं. १८१०
(४४) बन विनोद ( सं १८०९ )
(४५) भक्तिसार ( सं. १७९९ )
(४६) देहदसा
(४७) बैरागवल्ली
(४८) रसिक रत्नावली ( सं. १७८२ )
(४९) कलि बैराग वल्लरी ( सं. १७५९ )
(५०) अरिलपचीसी
(५१) छूटकविधि
(५२) पारायण विधिप्रकाश ( सं १७९९ )
(५३) सिखनख
(५४) नखसिख
(५५) छुटक कवित्त
(५६) चरचरियां
(५७) रेखता
(५८) मनोरथ मंजरी ( सं. १७८० )
(५९) रामचरित्र माला
(६०) पद प्रबोध माला
(६१) जुगलभक्ति विनोद ( सं. १८०८ )
(६२) रसानुक्रमके दोहा
(६३) शरदकी मांझ
(६४) सांझी फूल बीनन समेत सम्बाद
(६५) बसन्त वर्णन
(६६) फाग खेलनसमेतानुक्रम कवित्त
(६७) रासानुक्रमके कवित्त
(६८) निकुंज विलास ( सं. १७९४ )
(६९) गोविन्द परचई
(७०) बनजनप्रशंसा ( सं. १८१९ )
(७१) छूटक दोहा
(७२) उत्सव माला
(७३) पदमुक्तावली
(७४) बैन विलास *
(७५) गुप्तरस प्रकाश *

* कृष्णगढ के कवीश्वरजी लिखते है कि इन दोनों ग्रंथों का नाम नागरीदासजी के ग्रंथावली में है, परंतु यहाँ मिलते नहीं।

इनमें जिनका समय ग्रंथों में दिया है उसे उद्धृत करते हैं।

मनोर्थमंजरी ( नं० ५८ )

दोहा। संवत् सतरासै असी, चौदस मङ्गलवार।
प्रगट मनोरथ मंजरी वदि आसू अवतार॥

रसिकरत्नावली ( नं० ४८ )

दोहा। सत्तरै सै वइयासिये, भादो सुदि भृगु वार।
तिथि परिवा कीनी इहै, लीजो सन्त सुधार॥

बिहारचंद्रिका ( नं० ८ )

दोहा। सत्तरै अठ्यासिया, संवत सावन मास।
नव विहार यह चन्द्रिका, करी नागरीदास॥

कलिवैरागवल्ली ( नं० ४९ )

दोहा। सत्तारासै पच्याणर्वे, संबत सावण मास।



कलिवल्लीबैरागकी, करी नागरीदास॥

भक्तिसार ( नं० ४५ )

कुण्डलिया। सुख पायौ पूरन भयैं, अन्य जु भाषा चार।
सतरासै निनांनवै, द्वैज द्यौस गुरुवार॥
द्वैज घोस गुरुवार मास सावन मन भावन।
कृष्णपक्ष सुभ मन्त्र जन श्रवन सुहावन॥
भक्ति सार उच्चार कियौ निज मन समुझायौ।
नागरीदास न कहूं विमुष काहू सुख पायौ॥

पारायणबिधि प्रकाश ( नं. ५२ )

दोहा। सत्तरैसै निनांनवै, संबत सावन मास।
पारायन जु प्रकास-विधि कियौ नागरीदास॥

ब्रजसार ( नं. ५ )

दोहा। सत्तरैसै निनांनवै, पोस जु सुदि रवि-वार।
नौमी नागरीदास यह कियो ग्रन्थ ब्रज-सार॥

गोपीप्रेमप्रकाश ( नं. २ )

दोहा। संबत अठारैसै सुकल पक्ष जेठ सुभ मास।
गोपीप्रेमप्रकाश यह, कियौ नागरीदास॥

ब्रज वैकुंठतुला ( नं. ४ )

दोहा। संबत अठारैसै जु इक, दिन वसन्त सुभ मास।
ब्रज बैकुण्ठ तुला कियौ, ग्रन्थ नागरीदास॥

भक्तिमगदीपिका ( नं० ३९ )

दोहा। संबत अश्टदस सतजु द्वै, कार तीजगुरुवार।
रूप नगर विचि कृष्णपक्ष, भयौ ग्रन्थ विस्तार॥

फागबिहार ( नं० ४१ )

दोहा। संवत् अष्टदस सतजु पुन, अष्टवर्ष मधु मास।
ग्रंथ गङ्गतटि कृष्णपक्ष, कियो नागरीदास॥

जुगलभक्तिबिनोद ( नं० ६१ )

दोहा। अष्टादस सत अश्ट पुनि, संबत माघ सुमास।
जुगल भक्ति गुन ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास।
निकट कमाऊं पर्वतनि, विकट विटप की भीर।
तहां ग्रन्थ रचना भई, नदी कौसिकी तीर॥

बनबिनोद ( नं० ४४ )

दोहा। समत अठारह सौ जुनव, कृष्णपक्ष मधु मास।
बन बिनोद कल ग्रन्थ यह, कियो नागरीदास॥

बालविनोद ( नं० ४२ )

दोहा। समत अष्टदस सत् जु नव, मास अस्वनि मृगुवार।
तिथि षष्ठमि अरु शुक्लपक्ष, रच्यौ ग्रन्थ बिस्तार॥

तीर्थानन्द ( नं० ४० )

दोहा। माघ अष्टदस सत जु दस, विचि वृन्दावन वास।
ग्रन्थ तीरथानन्द यह, कियौ नागरीदास॥

सृजनानन्द ( नं० ४३ )

दोहा। समत अष्टदस सत जु दस, बरसानेके वास।
ग्रन्थ सु-सुजनानन्द यह, कियो नागरीदास॥

बनजन प्रशंसा ( नं० ७० )

दोहा। अष्टादस सत दस जु नवं; संवत् माघ सु मास।
वन जन प्रसन्स ग्रन्थ यह; कियौ नागरीदास॥

सबसे पहिला ग्रन्थ जो इनका मिला, वह मनोर्थमंजरी जो सं० १७८० में बना, दूसरा रसिकरत्नावली सं० १७८२ में तीसरा 'बिहारचंद्रिका' संवत् १७८८ में बना।

इस समै जैसी सुन्दर और प्रौढ कविता आपकी है, उसे हम अपने पाठकों ''बिहारचंद्रिका'' का एक अंश लेकर सुनाते हैं इसीसे वे सारे ग्रंथका गौरव समझलेंगें।

''उज्जल पक्ष कि रैन चैन उज्जल रस दैनी।
उदित भयो उडराज अरुन दुति मन हर लैनी॥
महा कुपित व्है काम ब्रह्म अस्त्रहिं छोड्यौ मनौ।
प्राची दिसि तें प्रजुलित आवति अगिनि उठी जनौं॥
दहन मानपुर भए मिलनकौ मनहुलसावत।
छावत छिपा अमन्द चन्द ज्यों ज्यों नभ आवत॥
जगमगाति बन जोति सोत अमृतधारासे।
नवद्रुम किसलय दलनि चारु चमकत तारासे॥
स्वेत रजतकी रैन चैन चित मैन उहनी।
तैसी मन्द सुगन्ध पौन दिननि दुख दहनी॥
मधिनायक गिरिराज पदिक वृदांबन भूषन।
फटिकसीला मनि शृंग जगमगति दुति निर्दूषन॥



सिला सिला प्रति चन्द चमकिकिरननिछबि छाई।
बिच बिच अम्ब कदम्ब झम्ब झुकि पायनि आई॥
ठौर ठौर चहुं फेर ढेर फूलनके सोहत।
करत सुगन्धित पवन सहज मन मोहत जोहत॥
बिमल नीर निर्झरत कहूं झरना सुख करना।
महा सुगन्धित सहज बास कुमकुममद हरना॥
कहुं कहुं हीरन खचित रचित मंडल सु रासिके।
जटित नगन कहुं जुगल खम्भ झूलनि बिलासिके॥
ठौर २ लखि ठौर रहत मनमय सोभारी।
बिहरत बिबिध बिहार तहां गिरिपर गिरि धारी॥
दोहा। कहत कहत कहँ लगि कहै, अब कबि छबि अभिराम।
प्रिया कमल पद परस हित, धर्‌यों रूपगिरि श्याम॥ १॥

नागरीदासजी की सभा में निम्नलिखित कवि वर्तमान थे।

१ प्रसिद्ध कबि वृन्द ( जिनकी बनाई वृन्दसतसई है ) के, पुत्र बल्लभजी, इनको महारा
नागरीदास के पिता महाराज राजसिंहजी ने ''सुकवि'' की पदवी दी थी, अतएव ये सुक
वल्लभ कहलातेथे।

२ पूरब की ओर के रहनेवाले सनाढ्य हरिचरणदासजी, इनके बनाए ग्रंथ सभाप्रकाश
कवि बलभ ( इन दोनों ग्रंथों में काव्य प्रकाश का ठीक ठीक उलथा किया है ) बिहारी स
सईकी ''बिहारी सतसईकी ''हरिप्रकाश'' नामक टीका। रसिकप्रिया की टीका, कविप्रि
की टीका इत्यादि हैं।

३ करौली के सनाढय हीरालालजी इनका बनाया ''सिरदार सुजस'' नामक ग्रंथ है
जिसमें महाराज नागरीदासजी के अनुज महाराज बहादुरसिंह ने जब राज्य छीन लिया था औ
नागरीदासजी ने अपने पुत्र सरदारसिंह जी के साथ कुमाउं आदि प्रदेश में जाकर मरहठों क
लाकर अपना राज्य लिया, उसका वृत्तांत लिखा है।

४ मुंशी कनीरामजी, इनके मीर मुंशी थे, कविभी थे।

५ कल्लह पन्नालालजी, कवि थे।

६ वैष्णव विजय चन्दजी, कवि थे।

७ बनीठनीजी, जिनका वर्णन ऊपरहो चुका है।

८ दाहिवां बिजय रामजी, कवि थे।

९ बाहर के बहुतेरे कवि पंडित आते थे, जिनमें से नरवरगढके राव उदयनाथजी

+१ वृन्द - No. 837 The Modern Literature of Hindustan.

बहुत प्रसिद्धथे। इन्होंने नागरीदासजी के सिंहके शिकारका एक ग्रंथ बनायाहै। इनमेंसे डाक्तर ग्रिअर्सन और शिवसिंह ने केवल पहिले लिखे तीन कवियों का यात्केंचित वर्णन किया है, परंतु प्राय: समय में भ्रम है और वर्णन भी नाम मात्र है।

अन्तमें बनजन प्रशंसक ग्रंथ से श्रीवृन्दाबन बास पर नागरीदासजी के हृदयमें कैसा संतोष इस पदमें झलकता है।

''हमारी सबही बात सुधारी।
कृपा करी श्रीकुंजबिहारिनि अरु श्रीकुंजबिहारी।
राख्यो अपने वृन्दाबनमें जिहिको रूप उज्यारी।
नित्त केलि आनंद अखंडित रसिक संग सुखकारी॥
कलह कलेस न व्यापै इहिठां ठौर विश्वतें न्यारी।
नागरीदासजी जनम जिवायौ बलिहारी बलिहारी। १॥''

''ब्रज सम्बन्ध'' ग्रन्थ से:-

''सांचो मित्र गोपाल है मेरो परम पियारौ।
जिहिं दीनौ ब्रजबासलै बैकुंठ तें भारो।
निज साधनको संग दयोनीकेते नीकौ।
जाके पटतर क्यों लगे सुख स्वर्गको फीकौ॥
राज कलहके मूलको विष अमल छुटायौ।
नागरियाबृन्दाविपुल रस अमृत प्यायौ॥ १॥''

हम इन महानुभाव प्रेमरस छके महात्मा का चरित्र उन्हीं के इस छप्पयके साथ समाप्त करते हैं :-

''धनि वह कुल धनि नगर धन्य वह देस सुमंडल।
धन्य खंड वह द्वीप धन्य वह सकल महीतल॥
धन्य धन्य सबलोक होत जेहि पावन पावन।
मुख रसना वह धन्य करत तिनकौ गुन गावन॥
जाकी महिला कहि सकै को कवि नागर मध्य छित।
करत धन्य इन नैनिको जेहि उर प्रेमानन्द नित''॥ १॥

* * * * *

२ हरिचरणदास - No. 939 - Do.
३ हीरालाल- No. 948 - Do.